वक्तृत्वकला के वीज

भाग ७

समन्वय-प्रकाशन

सम्पादन-सहयोग
स्व० श्री भैरुदानजी वैद (भादरा)

प्रवन्ध-सम्पादक
मोतीलाल पारख

प्रकाशक
श्रीमती मनोहरीदेवी नाहटा,
C/o जेसराज शोभाचंद
१६, जमनालाल वजाज स्ट्रीट
कलकत्ता—७

सस्करण :
वि० स० २०३० चैत्र सुदि १३
महावीर जयती
अप्रेल १९७३
२१०० प्रतिया

मूल्य .
चार रुपया पचास पैसे

Rs 7 - 00 |

मुद्रक .
सजय साहित्य सगम, आगरा—२ के लिए—
रामनारायन मेडतवाल
श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस
राजा की मडी, आगरा—२ ।

उन जिज्ञासुओ को

जिनकी उर्वर-मनोभूमि मे

ये बीज

अंकुरित

पुष्पित

फलित हो

अपना विराट्‌रूप प्राप्त कर सकें ।

प्राप्तिकेन्द्र :

- जेसराज शोभाचद
  १६, जमनालाल बजाज स्ट्रीट
  कलकत्ता–७

- श्री मोतीलाल पारख
  C/o दि अहमदाबाद लक्ष्मी काटन मिल्स, कं० लि०
  पो० बा० न० ४२
  अहमदाबाद–२२

- श्री सम्पतराय बोरड़
  C/o मदनचद सपतराय बोरड
  ४०, धानमंडी,
  श्रीगगानगर (राजस्थान)

प्राक्कथन

मानव-जीवन मे वाचा की उपलब्धि एक बहुत बडी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यो की दृष्टि मे वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, वाचा सरस्वती भिषग्[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वय सरस्वती-रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचाररूप रोगो को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावो को एक दूसरे तक पहुँचाने का एक बहुत बडा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती ? क्या वह भी मूकपशुओ की तरह भीतर-ही-भीतर घुटकर समाप्त नही हो जाता ? मनुष्य जो गूँगा होता है, वह अपने भावो की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छटपटाता है, फिर भी अपना सही आशय कहा समझा पाता है दूसरो को ?

बोलना वाचा का एक गुण है, किंतु बोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुत एक अलग चीज है। बोलने को हर कोई बोलता है, पर वह कोई कला नही है, किंतु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी कितने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मत्रमुग्ध हो जाते है। वक्ता के बोल श्रोता के हृदय मे ऐसे उतर जाते है कि वह उन्हें जीवन भर नही भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान्महावीर, तथागतबुद्ध, व्यास और भद्रबाहु आदि भारतीय प्रवचन-परम्परा के ऐसे महान् प्रवक्ता थे, जिनकी वाणी का

---

१ यजुर्वेद १६।१२

नाद आज भी हजारो-लाखो लोगो के हृदयो को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओ मे भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न वुझी है और न वुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नही वन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एव अनुभव का आयाम वहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन चिंतन एव अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एव चिरस्थाई वनाता है। विना अध्ययन और विषय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे, यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नही है, तो वह सभा मे हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसलिए वहुत प्राचीनयुग मे एक ऋषि ने कहा था—'वक्ता शतसहस्रेषु', अर्थात् लाखो मे कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनिश्री धनराजजी जैनजगत् के यशस्वी प्रवक्ता है। उनका प्रवचन, वस्तुत प्रवचन होता है। श्रोताओ को अपने प्रस्तावित विषय पर केन्द्रित एव मन्त्रमुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक वहुत वडे व्यापक एव गभीर अध्ययन पर आधारित है। उनका सस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओ का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी। मालूम होता है, उन्होने पाडित्य को केवल छुआ भर नही है, किन्तु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक 'वक्तृत्वकला के बीज' मे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति मे जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदो से लेकर उपनिषद् ब्राह्मण पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहावते, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ—इस प्रकार शृखला-वद्धरूप मे सकलित है कि किसी भी विषय पर हम वहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते है। सचमुच वक्तृत्वकला के अगणित बीज इसमे सन्निहित है। सूक्तियो का तो एक प्रकार से यह रत्नाकर ही है। अग्रेजी

साहित्य व अन्य धर्मग्रथो के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसग और स्थल तो ऐसे हैं, जो केवल सूक्ति और सुभापित ही नही है, उनमे विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक वना सकता है। लगता है जैसे मुनिश्री जी वाङ्मय के रूप मे विराट् पुरुप हो गए हैं। जहां पर भी दृष्टि पडती है कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है, जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसगत अपने भापण मे उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओ के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो सकता है—'वक्तृत्वकला के वीज' मे मुनिश्री का अपना क्या है? यह एक सग्रह है और सग्रह केवल पुरानी निधि होती है, परन्तु मैं कहूगा—कि फूलो की माला का निर्माता माली जव विभिन्न जाति एव विभिन्न रगो के मोहक पुप्पो की माला वनाता है तो उसमे उसका अपना क्या है? विखरे फूल, फूल हैं, माला नही। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रग-विरगे फूलो का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप मे सयोजन करना—यही तो मालाकार का काम है, जो स्वय मे एक विलक्षण एव विशिष्ट कलाकर्म है। मुनिश्री जी वक्तृत्वकला के वीज मे ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विपयो का उपयुक्त चयन एव तत्सम्वन्धित सूक्तियो आदि का सकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का सकलन अन्यत्र इस रूप मे नही देखा गया।

एक वात और—श्री चन्दनमुनिजी की सस्कृत-प्राकृत रचनाओ ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशसक रहा हू। श्री धनमुनि जी उनके वडे भाई हैं—जव यह मुझे ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओ का और भी अधिक विस्तार हो गया। अव कैसे कहू कि इन दोनो मे कौन वडा है और कौन छोटा? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे मे उपमित कर दू। उनकी वहुश्रुतता एव इनकी सग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है।

मैं मुनिश्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हू । विभिन्न भागो मे प्रकाशित होनेवाली इस विराट् कृति से प्रवचन-कार लेखक एव स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के लिए ऋणी रहेंगे । वे जब भी चाहेंगे, वक्तृत्वकला के बीज मे से उन्हें कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नही रहेंगे—ऐसा मेरा विश्वास है ।

प्रवक्तृ-समाज—मुनिश्रीजी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा ।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-२
आगरा

—उपाध्याय अमरमुनि

●●

मनुष्य विभिन्न शक्तियों का स्रोत है। नहीं, वह अनन्तशक्तियों का स्रोत है।

पर, जिन-जिन शक्तियों को अभिव्यक्त होने का समय और साधन मिल पाता है वही हमारे सामने विकसित रूप से प्रगट होती हैं, शेष अनभिव्यक्त रूप मे अपना काम करती रहती हैं।

संग्राहक शक्ति भी उन्हीं मे से एक है, जो अन्वेषण-प्रधान है और दूसरो के लिए बहुत उपयोगी बन जाती है।

मक्खन का आस्वादन करना एक बात है, पर उसे दही मे से मथकर निकालकर संग्रहीत करना एक विशिष्ट शक्ति है।

मुनिश्री धनराजजी (सिरसा) मे यह शक्ति अच्छी विकसित हुई है। शुरु से ही उनकी यह धुन रही है, आदत रही है, वे बराबर किसी न किसी रूप में खोज करते रहते हैं और फिर उसको संग्रहीत कर एक आकार दे देते हैं। वह साहित्य बन जाता है, जन-जन की खुराक बन जाता है।

"वक्तृत्वकला के बीज" एक ऐसी ही कृति हमारे समक्ष प्रस्तुत है जो मुनि धनराजजी की संग्राहकशक्ति का एक विशिष्ट उदाहरण है। उसमे प्राचीन, अर्वाचीन अनेक ग्रन्थों का मन्थन है, अनेक भाषाओ का प्रयोग है। मूल उद्धरण के साथ हिन्दी अनुवाद देकर और सरसता उसमे लाई गई है। बड़ा सुन्दर प्रयास है। अपनी वक्तृत्वकला का विकास चाहनेवाले वक्ता के लिए बहुत उपयोगी है यह ग्रन्थ, जो अनेक भागो मे विभक्त है। मेरा विश्वास है—यह प्रयत्न बहुजन हिताय—बहुजन सुखाय सिद्ध होगा।

चूरू
११ सितम्बर १९७२

—आचार्य तुलसी

सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह बहुत बडी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एव परिस्थितियो का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणो की साधना एव विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुत हजारो लाखो मे कोई एकाध ही मिलते हैं।

तेरापथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्रीतुलसी मे वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढग से विकसित हुए है। उनकी वाणी का जादू श्रोताओ के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओ के मध्य लाखो नर-नारियो ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उसके मधुर प्रभाव को जीवन मे अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनिश्री धनराजजी भी वास्तव मे वक्तृत्वकला के महान गुणो के धनी एक कुशल प्रवक्ता सत हैं। वे कवि भी है, गायक भी हैं, और तेरापथ शासन मे सर्वप्रथम अवधानकार भी है, इन सबके साथ-साथ बहुत बडे विद्वान् तो हैं ही। उनके प्रवचन जहा भी होते हैं, श्रोताओ की अपार भीड उमड आती है। आपके विहार करने के बाद भी श्रोता आपकी याद करते रहते हैं।

आपकी भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करे और उसका सदुपयोग करे, अत जनसमाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियो का यह विशाल सग्रह प्रस्तुत किया है।

वहुत समय से जनता की विद्वानो की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियो की माग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जनहिताय प्रकाशन किया जाय तो वहुत लोगो को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारना प्रारभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने मे श्री डू गरगढ, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, उकलाना, कैथल, हासी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिंडा आदि के विद्यार्थियो एव युवको ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग मौ कापियो मे यह सामग्री सकलित हुई है। हम इस विशाल सग्रह को विभिन्न भागो मे प्रकाशित करने का सकल्प लेकर पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुए है।

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर ने पुस्तक के लिए अपना मंगल-सदेश देकर इस प्रयत्न को प्रोत्साहित किया—उनके प्रति मैं हृदय की असीम श्रद्धा व्यक्त करता हू। तथा पुस्तक की महत्ता और उपयोगिता के अनुसार ही इसकी भूमिका लिखी है जैनसमाज के वहुश्रुत विद्वान् तटस्थ विचारक उपाध्याय श्री अमर-मुनि जी ने। उनके इस अनुग्रह का मैं हृदय से आभारी हू।

इसके प्रकाशन का समस्त भार श्रीमती मनोहरीदेवी नाहटा,C/o जेसराज शोभाचद १६,जमनालाल वजाज स्ट्रीट कलकत्ता ने वहन किया है,इस अनुकरणीय उदारता के लिए हम उनके अत्यत आभारी हैं। इसके प्रकाशन एव प्रूफ सशोधन-मुद्रण आदि की समस्त व्यवस्था 'सजय-साहित्य-सगम' के सचालक श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' ने की है, तथा अन्य सहयोगियो का जो हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है—उसके लिए भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते हैं। आशा है यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओ और लेखको के लिए एक सदर्भग्रथ (विब्लोग्राफी) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा।

●●

आत्मनिवेदन

'मनुष्य की प्रकृति का वदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। बचपन मे जब मैं कलकत्ता—श्री जैनश्वेताम्बर तेरापथी-विद्यालय मे पढता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्राय प्रति-दिन एक आना मिलता था। प्रकृति मे सग्रह करने की भावना अधिक थी, अत मैं खर्च करके भी उसमे से कुछ न कुछ वचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मैं उनको एक डिव्वी मे रखा करता था।

विक्रम सवत् १९७९ मे अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी मैं, छोटी बहन दीपाजी और छोटे भाई चन्दन-मल जी) परमकृपालु श्रीकालुगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपयो-पैसो का सग्रह छोड दिया, फिर भी सग्रहवृत्ति नहीं छूट सकी। वह धनसग्रह से हटकर ज्ञानसग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणो मे हम अनेक वालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोप आदि पढ़ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की बन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढने मे अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हे लिख लेता या ससार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा सग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भाषा मे कह दिया करते थे कि "धन्न, तो न्यारा मे जाने की [अलग विहार करने की] तैयारी कर रहा है।" उत्तर मे मैं कहा करता—क्या आप गारटी दे सकते हैं कि इतने (१० या १५) साल तक आचार्य श्री हमें अपने साथ ही

रखेगे ? क्या पता, कल ही अलग विहार करने का फरमान करदे ! व्याख्या-नादि का सग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने मे सहायता मिलेगी।

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियो का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० स० १९८६ मे श्री कालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य बनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया। हम दोनो भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे। व्याख्यान आदि का किया हुआ सग्रह उस चातुर्मास मे बहुत काम आया एव भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसग्रह करने की भावना बलवती बनी। हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे। उनके दिवगत होने के पश्चात् दोनो भाई अग्रगण्य के रूप मे पृथक्-पृथक् विहार करने लगे।

विशेष प्रेरणा—एक बार मैंने 'वक्ता बनो' नाम की पुस्तक पढी। उस मे वक्ता बनने के विषय मे खासी अच्छी बाते बताई हुई थी। पढते-पढते यह पक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढो, उसमे जो भी बात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो।" इस पक्ति ने मेरी सग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज बना दिया। मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरन्त लिख लेता। फिर जो उनमे विशेष उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप मे गूथ लेता। इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भाषाओ मे निबद्ध स्वरचित सैकडो भजन और सैकडो व्याख्यान इकट्ठे हो गए। फिर जैन-कथा साहित्य एव तात्त्विकसाहित्य की ओर रुचि बढी। फलस्वरूप दोनो ही विषयो पर अनेक पुस्तको की रचना हुई। उनमे छोटी-बडी लगभग २० पुस्तकें तो प्रकाश मे आ चुकी, शेष ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं।

एक बार सगृहीत-सामग्री के विषय मे यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज बन जाए। मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन-सग्रह को व्यवस्थित करने मे जुट गया। लेकिन पुराने सग्रह मे कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के हैं अथवा किस कवि,

वक्ता या लेखक के हैं—यह प्राय लिखा हुआ नही था। अत ग्रन्थो या शास्त्रो आदि की साक्षिया प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षों मे वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, बाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, सगीत शास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत, राजस्थानी, गुजराती, मराठी एव पजाबी सूक्तिसग्रहो का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया सग्रह बना और प्राचीन सग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने मे सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तिया एव श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी उनकी साक्षिया नही मिल सकी। जिन-जिन की साक्षिया मिली हैं, उन-उनके आगे वे लगा दी गई है। जिनकी साक्षिया उपलब्ध नही हो सकी, उनके आगे स्थान रिक्त छोड दिया गया है। कई जगह प्राचीन-सग्रह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकिरामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थो के नाममात्र लगाए हैं, अस्तु !

इस ग्रन्थ के सकलन मे किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नही है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है ? यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीषियो के मतो का सकलन होने से ग्रन्थ मे भाषा की एकरूपता नही रह सकी है। कही प्राकृत-सस्कृत, पारसी, उर्दू एव अग्रेजी भाषा है तो कही हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पजाबी और बगाली भाषा के प्रयोग हैं, फिर भी कठिन भाषाओ के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा मे कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ मे भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थो, कवियो, लेखको एव विचारको ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा मे व्यक्त किए हैं तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा मे ही बोले हैं। मुझे जिस रूप मे जिसके जो विचार मिले हैं, उन्हे मैंने उसी रूप मे अकित किया है लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निर्वद्य-सिद्धान्तो के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता—इस ग्रन्थ में उच्चस्तरीय विद्वानो के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमो के गम्भीर पद्य हैं, वेदो, उपनिषदो के अद्भुत मत्र हैं,

स्मृति एव नीति के हृदयग्राही श्लोक है, वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भापा के दोहे, छन्द, सूक्तिया, लोकोक्तिया, हेतु, दृष्टान्त एव छोटी-छोटी कहानियाँ भी हैं। अत यह ग्रन्थ नि सदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेप लाभ उठा सकेंगे, क्योकि इसके सहारे वे अपने भापण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एव हृदयग्राही बना सकेंगे एव अद्भुत विचारो का विचित्र चित्रण करके उनमे निखार ला सकेंगे, अस्तु।

ग्रन्थ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के बीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहा केवल बीज इकट्ठे किए गए हैं। बीजो का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहा करना—यह वप्ता [बीज बोनेवालो] की भावना एव बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपदप्राप्तिरूप फलो के लिए शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रो मे इन बीजो का वपन करेंगे। अस्तु।

यहा मैं इस बात को भी कहे बिना नही रह सकता कि जिन ग्रन्थो, लेखो, समाचार पत्रो एव व्यक्तियो से इस ग्रन्थ के सकलन मे सहयोग मिला है—वे सभी सहायकरूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेंगे।

यह ग्रन्थ कई भागो मे विभक्त है एव उनमे सैकडो विपयो का सकलन है। उक्त सग्रह बालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्यश्री तुलसी को भेंट किया। उन्होने देखकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की एव फरमाया कि इसमे छोटी-छोटी कहानियाँ एव घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेप उपयोगी बन जाए। आचार्यश्री का आदेश स्वीकार करके इमे सक्षिप्त कहानियाँ तथा घटनाओ से सम्पन्न किया गया।

मुनि श्री चन्दनमलजी, डूगरमलजी, नथमलजी, नगराज जी, मधुकरजी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एव साध्वियो ने भी इस ग्रन्थ को विशेप उपयोगी माना। बीदासर महोत्सव पर कई सतो का यह अनुरोध रहा कि इस सग्रह को अवश्य धरा दिया जाए।

अनुक्रमणिका

पहला कोष्ठक पृष्ठ १ से ६५ तक

१ भावना, २ भावना की प्रमुखता, ३ भावनानुसार फल, ४ भावना से लाभ, ५ भावना के भेद, ६ अनित्य-भावना, ७ अशरणभावना, ८ एकत्व-भावना, ९ भाषा-वाणी, १० देशी-विदेशी भाषा, ११ विश्व की भाषाओ के विषय मे ज्ञातव्य, १२ भाषा के प्रकार, १३ वाणी का फल, १४ वाणी की महिमा, १५ वाणी का प्रभाव, १६ 'किन्तु' शब्द की करामात, १७ वाणी-वाणी मे अन्तर, १८ मीठी वाणी, १९ सुभाषित-सूक्ति, २० बोलनेयोग्य वाणी, २१ विचारयुक्त वाणी, २२ समयोपयोगी वाणी, २३ सक्षिप्तवाणी, २४ परि-त्याग करने योग्य वाणी, २५ कटुवाणी, २६ कटुवाणी-निषेध, २७ मर्मघातक-वाणी, २८ वाद, २९ वाद के प्रकार, ३० विवाद, ३१ विवाद-निषेध, ३२ वाचालता, ३३ वाचाल, ३४ गप्पी और गप्पें, ३५ हाँ मे हाँ मिलानेवाले।

दूसरा कोष्ठक : पृष्ठ ६६ से ११८ तक

१ वक्ता, २ वक्ता बनने के उपाय, ३ वक्ता को ध्यान देने योग्य बातें, ४ वक्ताओ की तरकीबें, ५ प्रभावशाली वक्ता, ६ लम्बा भाषण करनेवाले वक्ता, ७ यश के भूखे वक्ता, ८ मूर्ख वक्ता, ९ वक्तृत्वकला, १० वक्तृत्वकला की सामग्री, ११ भाषण, १२ बात, १३ हसी आनेवाली बातें, १४ बात करते समय सावधानी, १५ बात का निर्वाह, १६ कहावतें, १७ मौन, १८ मौन की प्रेरणा, १९ मौन की महिमा, २० मौन से लाभ, २१ श्रवण-सुनना, २२ श्रवण का असर, २३ श्रोता, २४ योग्य श्रोता, २५ अयोग्य श्रोता, २६ मूर्ख श्रोता, २७ निद्रालु श्रोता ।

पृष्ठ ११६ से १६५

तीसरा कोष्ठक

१ शरीर, २ शरीर के अन्दर, ३ शरीर का महत्व, ४ शरीर की अनित्यता, ५ शरीर की निन्दनीयता, ६ शरीर की उपमाए, ७ शरीर का व्यायाम, ८ शरीर का वेग, ९ वस्त्र-आभूषण, १० स्वास्थ्य-आरोग्य, ११ स्वस्थ-नीरोग, १२ रोग, १३ रोग के प्रकार, १४ रोगी, १५ रोगी की सेवा, १६ औषधि, १७ कतिपय औषधियाँ, १८ उत्तम औषधियाँ, १९ पथ्य, २० वैद्य, २१ वैद्यो के प्रकार, २२ श्रेष्ठ-वैद्य २३ निकृष्ट-वैद्य, २४ चिकित्सा, २५ आयुर्वेद एव नाडी-विज्ञान आदि, २६ जन्म, २७ जन्म-सम्बन्धी अनोखी-प्रथाए, २८ पुर्नजन्म की वास्तविकता, २९ गर्भ, ३० सोलह-सस्कार, ३१ वालक, ३२ वालको के गुण और दोष, ३३ वालको के निर्माण की कुछ विधियाँ, ३४ जन्म-मृत्यु एव वाल-मृत्यु, ३५ वालको को विगाडने एव सुधारनेवाले अभिभावक, ३६ वालको की सरलता, ३७ वालको की उच्छृखलता, ३८ आश्चर्यकारी वालक-वालिकाए ।

पृष्ठ १६६ से २५६ तक

चौथा कोष्ठक

१ यौवन, २ यौवन का अनर्थकारित्व ३ जरा-वृद्धावस्था, ४ वृद्ध, ५ वृद्धो का सम्मान, ६ वृद्धो के प्रकार, ७ वृद्ध ऐसा चिन्तन करे, ८ जीवन, ९ जीवन के हेतु आदि, १० जीवन की अस्थिरता, ११ जीवन से लाभ, १२ श्रेष्ठ-जीवन, १३ निकृष्ट-जीवन, १४ आयु १५ लम्वी आयुवाले व्यक्ति, १६ कतिपय देशो की औसत आयु, १७ आयुक्षय, १८ मरण, १९ मृत्यु की निर्दयता, २० मृत्यु की अप्रियता, २१ मृत्यु-विज्ञान, २२ मृत्यु का भय, २३ मरते समय भी निर्भय, २४ उत्तम-मरण, २५ अमरत्व, २६ मरने के वाद, २७ मरण के भेद आदि, २८ आत्महत्या, २९ अन्तिम-सस्कार की अनोखी प्रथाए ।

चारो कोष्ठको मे कुल १२९ विषय तथा दस भागो मे लगभग १५०० विषय-उपविषय हैं ।

वक्तृत्वकला के बीज

[भाग ७]

अकारादि क्रम-विषयानुक्रमणिका

अमरत्व २४३
अन्तिम-सस्कार की अनोखी-प्रथाए २५२
अनित्यभावना ८
अशरणभावना ११
अयोग्यश्रोता ११४
आत्महत्या २५०
आयु २२२
आयुर्वेद एव नाडी विज्ञान आदि १६४
आयु-क्षय २३१
आश्चर्यकारी बालक-बालिकाए १६२
औषधि १५०
उत्तम-औषधिया १५३
उत्तम-मरण २४२
एकत्व-भावना १४
कटुवाणी ४८
कटुवाणी-निषेध ४६
कतिपय औषधिया १५१
कतिपय देशो की औसत-आयु २२६
कहावतें ६७
'किन्तु' शब्द की करामात २६
गप्पी और गप्पें ६१
गर्भ १७३
चिकित्सा १६१
जन्म १६६
जन्म-सम्बन्धी अनोखी-प्रथाए १६७
जन्म-मृत्यु एव बाल-मृत्यु १८३
जरा-वृद्धावस्था १६८
जीवन २११
जीवन की अस्थिरता २१४
जीवन के हेतु आदि २१३
जीवन से लाभ २१६
देशी-विदेशी भाषा १७
निकृष्ट-जीवन २२०
निकृष्ट-वैद्य १५६
निद्रालु-श्रोता ११८
पथ्य १५४
परित्याग करने योग्य वाणी ४६
प्रभावशाली वक्ता ७१
पुनर्जन्म की वास्तविकता १७०
बात ८६
बात करते समय सावधानी ६३

वात का निर्वाह ६६
वालक १७६
वालको की उच्छृ खलता १६१
वालको की सरलता १८८
वालको के गुण और दोप १७८
वालको के निर्माण की कुछ
विधिया १८०
वालको को विगाडने एव
सुधारनेवाले अभिभावक १८५
वोलने योग्य वाणी ३८
भावना १
भावना के भेद ७
भावना की प्रमुखता ३
भावनानुसार फल ४
भावना से लाभ ६
भापण ८७
भापा के प्रकार २१
भापा-वाणी १६
मरण २३४
मरण के भेद आदि २४८
मरते समय भी निर्भय २४१
मरने के वाद २४४
मर्मघातक वाणी ५०
मृत्यु का भय २४०
मृत्यु की अप्रियता २३८
मृत्यु की निर्दयता २३६
मृत्यु-विज्ञान २३६
मीठी-वाणी ३३
मूर्ख-वक्ता ७८
मूर्ख-श्रोता ११६
मौन ६८
मौन की प्रेरणा ६६
मौन की महिमा १०१
मौन से लाभ १०३
यश के भूखे वक्ता ७६
योग्य-श्रोता ११२
यौवन ११६
यौवन का अनर्थकारित्व १६८
रोग १४३
रोग के प्रकार १४५
रोगी १४७
रोगी की सेवा १४६
लम्वा भापण करनेवाले-
वक्ता ७४
लम्वी आयुवाले व्यक्ति २२५
वक्ता ६६
वक्ताओ की तरकीवें ७०
वक्ता के ध्यान देने योग्य
वातें ६६
वक्तृत्वकला ७६
वक्तृत्वकला की सामग्री ८०
वक्ता वनने के उपाय ६८
वस्त्र-आभूपण १३५
वाचाल ५६

वाचालता ५७
वाणी का प्रभाव २४
वाणी का फल २२
वाणी की महिमा २३
वाणी-वाणी मे अन्तर ३२
वाद ५१
वाद के प्रकार ५२
विचारयुक्त वाणी ४०
विवाद ५४
विवाद-निषेध ५६
विश्व की भाषाओ के विषय मे ज्ञातव्य १८
वृद्ध २०२
वृद्ध ऐसा चिन्तन करें ! २०६
वृद्धो का सम्मान २०५
वृद्धो के प्रकार २०३
वैद्य १५५
वैद्यो के प्रकार १५७
शरीर ११६
शरीर का महत्व १२६
शरीर का व्यायाम १३२
शरीर का वेग १३४
शरीर की अनित्यता १२८
शरीर की उपमाए १३१
शरीर की निंदनीयता १३०
शरीर के अन्दर १२२
श्रवण-सुनना १०४
श्रवण का अमर १०६
श्रेष्ठजीवन २१७
श्रेष्ठ-वैद्य १५८
श्रोता ११०
स्वस्थ-नीरोग १४०
स्वास्थ्य-आरोग्य १३८
समयोपयोगी वाणी ४२
सुभाषित-सूक्ति ३६
सोलह-सस्कार १७५
सक्षिप्तवाणी ४५
हसी आनेवाली बातें ६१
हा मे हा मिलानेवाले ६४

●●

भाग सातवाँ

वक्तृत्वकला के बीज

पहला कोष्ठक

१ भावना

१ भाव्यतेऽनयेति भावना ।

जिससे आत्मा भावित होती है, उसे भावना कहते हैं ।

२ चेतो विशुद्धये मोहक्षयाय स्थैर्यापादनाय,
विशिष्ट संस्कारापादन भावना ।

—मनोनुशासन ३।२०

चित्तशुद्धि, मोहक्षय तथा अहिंसा-सत्य आदि की वृत्ति को टिकाने के लिए आत्मा में जो विशिष्ट संस्कार जागृत किए जाते हैं, उसे भावना कहते हैं ।

३ येन-येन यथा यद्-यद्, यथा संवेद्यतेऽनघ !
तेन-तेन तथा तत्तत्, तथा समनुभूयते ।।

—योगवाशिष्ठ

जिसका, जिस प्रकार से जो-जो संवेदन होता है, उसको उसी प्रकार से वैसा ही अनुभव होने लगता है ।

४ अमृतत्वं विषं याति, सदैवामृतवेदनात् ।
शत्रु मित्रत्वमायाति, मित्रसंवित्तिवेदनात् ।।

—योगवाशिष्ठ

सदा अमृतरूप में चिन्तन करने से विष भी अमृत बन जाता है, तथा मित्रदृष्टि से देखने पर शत्रु भी मित्ररूप में परिणत हो जाता है ।

५ जे जत्तिया य हेउ भवस्स, ते चेव तत्तिया मुक्खे ।

—ओघनिर्युक्ति ५२

राग-द्वेषयुक्त गमन-निरीक्षण-जल्पन आदि जितने भी काम ससार के हेतु हैं, वे ही राग-द्वेष रहित हो तो मुक्ति के हेतु वन जाते हैं।

६ यत्र-यत्र मनो देही, धारयेत् सकलं धिया।
स्नेहाद् द्वेषाद् भयाद् वापि, याति तत्तत्स्वरूपताम् ॥

—श्रीमद्भागवत

प्राणी स्नेह, द्वेष या भय से अपने मन को वुद्धि द्वारा जहा-जहा लगाता है, मन वैसा ही—अर्थात् स्नेही, द्वेपी व भयाकुल वन जाता है।

●

१ वित्तेन दीयते दान, शील सत्त्वेन पाल्यते।
तपोऽपि तप्ययेे कष्टात्, स्वाधीनोत्तमभावना ।।
दान धन से दिया जाता है, शील सत्त्व से पाला जाता है, तप भी कष्ट से तपा जाता है, किन्तु उत्तम भावना स्वतन्त्र है ।

२ न देवो विद्यते काष्ठे, न पाषाणे न मृन्मये।
भावेषु विद्यते देव-स्तस्माद भावो हि कारणम् ।।

—चाणक्यनीति ८।११

भगवान् न तो काष्ठ मे है, न पत्थर मे है और न मिट्टी मे है। भगवान् का निवास पवित्रभावना मे है, अत. भगवत्प्राप्ति का मुख्यकारण भावना ही है।

३ मूर्खो वदति विष्णोय, धीरो वदति विष्णवे।
उभयोस्तु समं पुण्यं, भावग्राही जनार्दनः ।।
मूर्ख 'नमो विष्णोय' कहता है, और विद्वान् 'नमो विष्णवे' कहता है, लेकिन दोनो को समान पुण्य होता है। क्योकि विष्णुभगवान् मुख्यतया भावना के भूखे हैं।

४ जे आसवा ते परिसवा, जे परिसवा ते आसवा।

—आचारांग ४।२

जो आस्रव-कर्मप्रवेश के हेतु हैं, वे भावना की पवित्रता से परिस्रव-कर्म रोकनेवाले हो जाते हैं और जो परिस्रव हैं, वे भावना की अपवित्रता से आस्रव हो जाते हैं।

५ परिणामो वन्धः परिणामो मोक्षः।
परिणाम ही वन्ध है एव परिणाम ही मोक्ष है।

३ भावनानुसार फल

१ यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी ।
यादृशास्तन्तव: कामं, तादृशो जायते पटः ।।

जिसकी जैसी भावना होती है, वैसी ही सिद्धि होती है। जैसे ततु (तार) होते हैं, वैसा ही कपड़ा वनता है।

२ मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे, दैवज्ञे भेषजे गुरौ ।
यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी ।।

—स्कन्दपुराण

मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, नैमित्तिक, औषधि और गुरु—इन सबमे जिसकी जैसी भावना होती है, प्राय वैसी ही सिद्धि-फलप्राप्ति होती है।

३ दुग्धं देयानुसारेण, कृषिर्मेघानुसारतः ।
लाभो द्रव्यानुसारेण, पुण्यं भावानुसारत: ।।

खुराक के अनुसार गाय-भैंस का दूध होता है,मेह के अनुसार खेती होती है माल के अनुसार लाभ होता है और भावना के अनुसार पुण्य होता है।

४ अन्ते मतिः सा गति: । —संस्कृत कहावत

मरते समय जो भावना होती है, वैसी ही गति होती है।

५ दानत जैसी वरकत।

• जिसकी दानत बुरी, उसके गले छुरी।

—हिन्दी कहावतें

६ तालीम का शोर इतना, तहजीव का गुल इतना।
वरकत जो नही होती, नीयत की खरावी है।

—अकबर

७ वृत्त-सुवृत्त दो भाई प्रयाग गए, वृष्टि आई। एक वेश्या के घर एव दूसरा माधव के मन्दिर गया। पहला वेश्या के यहाँ गीत-नृत्य मे ध्यान न लगा कर, भगवान् को स्मरता रहा और दूसरा मन्दिर मे वैठा-वैठा वेश्या को याद करता रहा। वापिस आते समय दोनो पर विजली पडी एव मरे। दोनो को लेने क्रमश विष्णुदूत और यमदूत आए एव उन्हें स्वर्ग-नरक मे ले गए।

—वायुपुराण, अध्याय २१

८ दो मुनि प्रवचन कर रहे हैं—एक की भावना धर्मप्रचार की है और दूसरे की विद्वत्ता दिखाने की है। फल भिन्न-भिन्न होगा।

९ दोय जणा वीज वावण ने जाय, मारग मे मिलिया मुनिराय।
एक देख नै हूवो खुशी, इणरा माथा जिसा सिट्टा हुसी।
वीजो मन मे करे विचार, मोडो मिलियो मार्ग मभार।
मस्तक मु ड पाग सिर नाही, कडव हुसी पण सिट्टा नांहि।

—राजस्थानी-पद्य

दो किसान वाजरी वोने के लिए खेत जा रहे थे। रास्ते मे साधु मिले। एक उन्हे देखकर खुश हुआ एव सोचने लगा कि नगे सिर साधु मिले हैं,अत इनके सिर जितने वडे-वडे सिट्टे होंगे। शकुन वहुत अच्छे हुए हैं। दूसरा साधु को देखकर अपशकुन की कल्पना करने लगा कि इनके सिर पर पगडी नही है, इसलिए केवल कडवी होगी, सिट्टे विल्कुल नही होगे। भावना के अनुसार फल हुआ, पहले के खेत मे खूव वाजरी हुई और दूसरे के खेत मे टिड्डियां आने से मारे सिट्टे नष्ट हो गये।

●

भावना से लाभ

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहिए वट्टमाणे अरिहंतपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्टेइ-अब्भुट्ठेइत्ता परलोग-धम्मस्स आराहए भवइ ।

—उत्तराध्ययन २६।५०

भाव की सत्यता से जीव भावो की विशुद्धि को प्राप्त करता है। विशुद्ध-भावनावाला जीव अरिहत-प्रणीत धर्म की आराधना मे तत्पर होकर पारलौकिक धर्म का आराधक होता है।

भावणाजोग-सुद्धप्पा, जले नावा व आहिया ।
नावा व तीरसपन्ना, सव्वदुक्खा विमुच्चइ ॥

—सूत्रकृताग १५।५

भावना-योग से शुद्धआत्मा ससार मे जल पर नाव के समान तैरती है। जैसे—अनुकूल पवन का सहारा मिलने से नाव पार पहुचती है, उसी प्रकार उपर्युक्त शुद्धआत्मा ससार से पार पहुचती है।

५ भावना के भेद

१ दुविहाओ भावणाओ-संकिलिट्ठा य, असंकिलिट्ठा य।

—बृहत्कल्प १।२।४६३

दो प्रकार की भावनायें कही हैं—
संक्लिष्ट—अशुभ, असंक्लिष्ट—शुभ।

२ बारह भावनाएँ—

अनित्यताशरणते, भवमेकत्वमन्यताम्।
अशौचमास्रवं चात्मन् ! संवरं परिभावय॥
कर्मणो निर्जरां धर्म-रूपतां लोकपद्धतिम्।
बोधिदुर्लभतामेता, भावयन् मुच्यसे भवात्॥

—शान्तसुधारस १

१—अनित्यभावना, २—अशरणभावना, ३—संसारभावना, ४—एकत्व-भावना, ५—अन्यत्वभावना, ६—अशौचभावना, ७—आस्रवभावना, ८—संवरभानवा, ९—कर्मनिर्जराभावना, १०—धर्मस्वरूपभावना, ११—लोकस्वरूपभावना, १२—बोधिदुर्लभभावना। रे जीव ! इन भावनाओं में लीन बन ! ऐसा करने से जन्म-मरण के बन्धनों से छूट जाएगा।

३ चार भावनायें—

मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि नियोजयेत्।
धर्मध्यानमुपस्कर्तुं, तद्धि तस्य रसायनम्॥

—शान्तसुधारस १३

१—मैत्रीभावना, २—प्रमोदभावना, ३—कारुण्यभावना, ४—माध्यस्थ्यभावना। धर्मध्यान की सहायता के लिए इन चारों भावनाओं का अनुशीलन भी अवश्य करना चाहिए, क्योंकि ये अमोघ-रसायनरूप हैं। ●

६ अनित्य-भावना

१ दुमपत्ताए पंडुयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए ।
एव मणुयाणजीविय, समयं गोयम ! मा पमायए ॥

—उत्तराध्ययन १०।१

जिस प्रकार रात्रियो के बीतने पर वृक्ष का पत्ता पीला होकर गिर जाता है, उसी तरह मनुष्यो का जीवन है, अत हे गोतम ! समयमात्र भी प्रमाद मत कर !

२ कुसग्गे पणुन्नं निवइय वाएरियं एवं बालस्स जीविय ।

—आचाराग ५।१

डाभ की अणी पर ठहरा हुआ जलविन्दु हवा से प्रेरित होकर जैसे गिर पडता है, वैसे ही अज्ञानी का जीवन नष्ट हो जाता है ।

३ उवणिज्जइ जीवियमप्पमाय, मा कासि कम्माइं महालयाइं ।

—उत्तराध्ययन १३।२६

यह जीवन शीघ्रातिशीघ्र मृत्यु की तरफ चला जा रहा है, अत महतीदुर्गति देनेवाले कर्म मत कर !

४ तरुणे वाससयस्स तुट्टइ, इतरवासे य बुज्झह !

—सत्रकृतांग २।३।८

सौ वर्ष की आयुवाले जीव की आयु भी युवावस्था मे टूट जाती है, अतः यहां अल्पकाल का ही निवास समझो !

टूटे हुए पुल, फूटे हुए वर्तन एव फटे हुए वस्त्र पुन. जुड सकते हैं, लेकिन आयुष्य टूटने के वाद नहीं जुडता ।

यैः समं क्रीडिता ये च भृशमीडिता,
यै सहाऽकृष्महि प्रीतिवादम् ।
तान् जनान् वीक्ष्य वत ! भस्मभूय गतान्,
निर्विशङ्कास्म इति धिक् प्रमादम् ॥

—शान्तसुधारस १

खेद है ! कि जिनके साथ हमने क्रीडा की, जिनके साथ प्रेमपूर्वक वार्तालाप किया और जिनकी खुलेदिल से प्रशसा की, उन्हे जलकर खाक होते देखकर भी हम निर्भय बैठे हैं, अत प्रमाद को धिक्कार है !

क्व गताः पृथिवीपाला', ससैन्यवलवाहनाः ।
वियोगसाक्षिणी येषा, भूमिरद्यापि तिष्ठति ॥ ६८ ।
प्रतिक्षणमय काय', क्षीयमाणो न लक्ष्यते ।
आमकुम्भ इवाम्भस्थो, विशीर्ण' सन् विभाव्यते ॥ ६९ ।
आसन्नतरतामेति, मृत्युर्जन्तो' दिने-दिने ।
आघात नीयमान च, वध्यस्येव पदे पदे ॥ ७० ।
अनित्य यौवन रूपं, जीवित द्रव्यसचय ।
ऐश्वर्य प्रियसवासो, मुह्येत् तत्र न पण्डितः ॥ ७१ ।

—हितोपदेश ४

सेना एव वलवाहनसहित पृथ्वीपति कहा चले गए, जिनके वियोग की गवाही देनेवाली पृथ्वी आज भी विद्यमान है ।६८।

यह शरीर प्रतिक्षण क्षीण होता हुआ भी नही लखा जाता, किन्तु पानी से भरे हुए कच्चे घडे की तरह पूर्णनष्ट होने पर ही जान पडता है कि यह नष्ट हो गया ।६९।

मारने के लिए ले जाए जानेवाले प्राणी के कदम-कदम पर जैसे मृत्यु निकट आती है, उसी प्रकार जीवों की मृत्यु दिन-दिन निकट आ रही है ।७०।

यौवन-रूप-जीवन-धन का सग्रह, ऐश्वर्य और प्रियजनो का सहवास—ये सव अनित्य हैं, अत पण्डित को इनमे मोहित नहीं होना चाहिए ।७१।

न कैरों दल पांडव सागरसुत यादो केते,
जात हू न जाने ज्यों तरैया परभात की।
बली बेनु अंबरीष मानधाता प्रहलाद,
कहांलौं गिनाऊँ कथा रावन-ययात की।
वेऊ ना वचन पाए काल कौतुकी के हाथ,
भाति-भाँति सेना रची घने दुःख घात की।
चार-चार दिन के चबाउ चाहे करे कोऊ,
अंत लूटि जैहै जैसे पूतरी बरात की॥

—भाषाश्लोकसागर

●

७ अशरणभावना

१ इह खलु काम-भोगा नो ताणाए वा, नो सरणाए वा।
पुरिसे वा एगया पुव्वि काम-भोगे विप्पजहइ,
काम-भोगा वा एगया पुव्वि पुरिस विप्पजहति।
से किमंग पुण वयं, अन्नमन्नेहि काम-भोगेहि मुच्छामो ?

—सूत्रकृताग, श्रु० २-अ० १।१३

इस ससार मे निश्चय ही—ये काम-भोग दु खो से रक्षा करनेवाले नही हैं। कभी तो पहले ही पुरुप इन्हें छोडकर चल देता है एव कभी ये पुरुप को छोड चलते हैं, फिर हम इन काम-भोगो मे मूर्च्छित क्यो हो रहे हैं ?

२ इह खलु ! नाइसजोगा नो ताणाए वा, नो सरणाए वा।
पुरिसे वा एगया पुव्वि नाइसजोगे विप्पजहइ,
नाइसंजोगा वा एगया पुव्वि पुरिसं विप्पजहंति।
से किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहि नाइसंजोगेहि मुच्छामो ?

—सूत्रकृताग श्रु० २-अ० १।१३

इस ससार मे ज्ञाति-स्वजनो के सयोग भी दु खो मे रक्षा करनेवाले नहीं हैं। कभी पहले ही पुरुप इन्हे छोडकर चल देता है एव कभी ये पुरुप को छोड चलते हैं। फिर अपने से भिन्न—इन ज्ञाति-सयोगो मे हम मूर्च्छित क्यो हो रहे हैं ?

३ जाया य पुत्ता न हवंति ताणं।

—उत्तराध्ययन १४।१२

पुत्र होने पर भी वे शरणभूत नही होते।

४ एकवार राजा भोज की नीद उचट गई एवं मध्यरात्रि के समय गवाक्ष मे वैठकर अपने राज्य-वैभव का अह करते हुये उसने एक श्लोक के तीन पद्य रच डाले, लेकिन चौथा पद्य नही वन सका, अत राजा पुन-पुन तीनो पद्यो का आवर्तन कर रहा था। उस समय एक चोर ने (जो पहले से महल मे छिपकर वैठा था) उसकी पूर्ति कर डाली। श्लोक इस प्रकार था—

चेतोहरा युवतयः स्वजनोऽनुकूलः,
सद्वान्धवाः प्रणयगर्भगिरश्च भृत्याः।
गर्जन्ति दन्तिनिवहास्तरलास्तुरङ्गाः,
समीलने नयनयोर्नहि किंचिदस्ति॥

—भोजप्रवन्ध १६८

राजा अहकार कर रहा था कि मेरे मनोहर स्त्रियाँ हैं, अनुकूल स्वजन है, अच्छे भाई है, स्नेहगर्भित वाणी वोलनेवाले सेवक हैं, गर्जना करते हुए हाथी हैं, और चचल घोडे है, (यह सुनकर चोर ने कहा) लेकिन आँखें मीची जाने के वाद—ये सव कुछ नही है।

मार्मिक पदपूर्ति से राजा का अहकार चूर-चूर हो गया और चोर को पकडकर कैद मे रख दिया गया। प्रात दरवार जुडा तव रातवाले चोर को मौत की मजा सुनाई गई। विद्वान चोर ने कहा—

भल्लिर्नष्टो भार्गवश्चापि नष्टो,
भिक्षुर्नष्टो भीमसेनोऽपि नष्टः।
भुकुचण्डोऽहं भूपतिस्त्व च राजन्।
पङ्क्तौ भस्यह्यन्तकस्यप्रवेश.॥

राजन्! 'भकार' की पक्ति मे इम समय यम (मृत्यु) का प्रवेश हो रहा है। देखिये—भल्लि का नाश हुआ, फिर क्रमश भार्गव, भिक्षु और भीमसेन मारे गये। मेरा नाम भुकुचड है और आप भूपति हैं। अगर मुझे मार देंगे तो फिर तत्काल आपकी भी मरने की वारी आ जायेगी। चोर की

विद्वत्ता पर राजा प्रसन्न हुआ एव उसे धन-धान्य देकर सुखी वनायग अस्तु ।

५ सव्वं विलवियं गीयं, सव्व नट्टं बिडंवियं ।
सव्वे आभरणा भारा,सव्वे कामा दुहावहा ॥

—उत्तराध्ययन १३।१६

सभी प्रकार का गीत विलापस्वरूप है, नाटक विडम्वनातुल्य है, आभूपण भारस्वरूप हैं और काम-भोग दु ख के देनेवाले हैं ।

एकत्वभावना

१ एगत्तमेयं अभिपत्थएज्जा ।

—सूत्रकृताग १०।१२

आत्मार्थी-पुरुप को एकत्वभावना की प्रार्थना करनी चाहिए ।

२ एगे अहमसि न मे अत्थि कोइ, न याहमवि कस्सवि ।

—आचाराग ८।६

मैं अकेला हू, जगत मे मेरा कोई नही है, और मैं भी किसी का नही हू ।

३ एगस्स जंतो गतिरागती य ।

—सूत्रकृताग १३।१८

जीव अकेला जाता है और अकेला ही आता है ।

४ पत्तेयं जायति, पत्तेयं मरइ ।

—सूत्रकृताग २।१।१३

प्रत्येक प्राणी अकेला जन्म लेता है, अकेला मरता है ।

५ एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं ।

—उत्तराध्ययन १३।२३

जीव स्वय अकेला ही दु.ख भोगता है ।

६ एकः प्रसूयते जन्तु-रेक एव प्रलीयते ।
एकोऽनुभुङ्क्ते सुकृतं, एक एव च दुष्कृतम् ॥

—मनुस्मृति ४।२४० तथा श्रीमद्भागवत १०।४६।२१

प्राणी अकेला उत्पन्न होता है, अकेला मृत्यु को प्राप्त होता है और अकेला ही पुण्य-पाप को भोगता है ।

७ लोग सोचते हैं हम जैन हैं,
हिन्दु है, मुसलमान हैं,
अपनी कौम और वतन का भी
उनके दिलो मे अभिमान है,
मैं हैरान हूं, इस छोटी-सी वात को—
वे कैसे भूल जाते हैं,
कि हम सब एक है, क्योंकि
सबसे पहले इन्सान हैं।

—खुले आकाश मे (पुस्तक से)

६ भाषा-वाणी

१ भाषा विचार की पोशाक है ।

२ भाषा एक नगर है, जिसके निर्माण मे प्रत्येक मानव एक पत्थर लाया है।

३ हमारी भाषा हमारा प्रतिविम्व है । —गाधी

४ भाषा मनुष्य की वुद्धि के सहारे चलती है, इसलिए जव तक किसी तक वुद्धि नही पहुचती, तव तक भाषा अधूरी होती है । —गांधी

५ भाषा की अपेक्षा भावो को महत्व देना मानसिक-वुद्धि का परिचायक है ।

६ तडपन भरे शव्द लच्छेदार नही होते और लच्छेदार शव्द विश्वासलायक नही होते । —ताओ-उपनिषद्

७ जहा वाचा-मन मे एकता नही, वहा वाचा केवल शव्दजाल है, दम्भ है, मिथ्यात्व है ।

—गाधी

८ न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासण ।

—उत्तराध्ययन ६।११

केवल विचित्र भाषाए और विद्या की शिक्षाए आत्मरक्षा के लिए समर्थ नही हो सकती !

९ शव्द वोलते समय ७८ छोटी-छोटी नसें एकत्रित होती है ।

—आत्मविकास, पृष्ठ ३०८

१० साठ कोसे पाणी र वारै कोसे वाणी ।

—राजस्थानी कहावत

१०

देशी-विदेशी भाषा

१ यथा देशस्तथा भाषा ।

—संस्कृत कहावत

जैसा देश हो, वैसी ही भाषा बोलनी चाहिये ।

२ देशीभाषा का अनादर, राष्ट्रीय-आत्महत्या है ।

—गांधी

३ विदेशी-भाषा द्वारा शिक्षा पाने की पद्धति से अपार हानि होती है ।

—गांधी

४ परायी-भाषा के साहित्य से ही आनन्द लेने की आदत चोरी के माल से आनन्द लूटने की चोरआदत जैसी है ।

५ भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।
सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरिय-
मणारियाणं अप्पणो सभासे परिणामेणं परिणमइ ।

—औपपातिक-सूत्र

भगवान् अर्धमागधी भाषा मे धर्म कहते हैं । वह अर्धमागधी भाषा भी सब आर्यो—अनार्यो के अपने-अपने देश की भाषा के रूप मे परिणत हो जाती है ।

६ भाषाविशेषज्ञ—जर्मनी के डा० हेराल्डसुज ३०० भाषाएं बोल सकते हैं और लिख भी सकते हैं । एक किताब मे उन्होंने उक्त भाषाओं का प्रयोग किया है ।

११ विश्व की भाषाओं के विषय में ज्ञातव्य

विश्वभर मे कुल २७९६ भाषाए है। इनमे से पैंसठ विभिन्न देशो की राष्ट्रभाषाए हैं। प्रत्येक भाषा औसतन पाच करोड व्यक्तियो द्वारा वोली जाती है। प्रमुख भाषाए केवल आठ हैं। इनमे हिन्दी, चीनी, अग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच, जापानी, रूसी तथा अरवी आती है।

यदि कोई व्यक्ति इनमे से केवल छह भाषाए सीख ले तो वह विश्व के तीस प्रतिशत लोगो से वातचीत कर सकता है और यदि आठो प्रमुख भाषाए सीख ली जाएँ तो विश्व के ६० प्रतिशत से अधिक लोगो के साथ आसानी से वातचीच की जा सकती है।

—हिन्दुस्तान, २८ जून, १९७१

२ भारत मे ६०० से भी अधिक भाषाए वोली जाती है।

—विश्वदर्पण, पृष्ठ ३८

३ १६॥ करोड़ मनुष्यो की मातृभाषा हिन्दी है और २५४४ की सस्कृत है।

—हिन्दुस्तान, ५ फरवरी, १९६५

४ भारत की प्रमुख भाषाएँ और उन्हे वोलनेवाले :—

भाषा	वोलनेवाले	भाषा	बोलनेवाले
हिन्दी	१४,९९,४४,३११	तेलुगु	३,२९,९९,९१६
(उर्दू, हिन्दुस्तानी		मराठी	२,७०,४९,५२२
व पजावी)		वगला	२,५१,२१,७६४

भाषा	बोलनेवाले	भाषा	बोलनेवाले
तमिल	२,६५,४६,७६४	कन्नड	२,४४,७१,७६४
गुजराती	१,६३,१०,७७१	उडिया	१,३१,५३,६०६
मलयालम	१,३३,८०,१०६	सस्कृत	५५५
काश्मीरी	५,०८६	मेवाडी	२०,१४, ८७४
मारवाटी	४४,१४, ७३७	वागडी	६२६, ०२६
ढु ढाडी (जयपुरी)	१५,८८, ०६६	मालवी	८,६६, ८६५
छत्तीमगढी	६,०२, ६०८	हडौती	८,१५, ८५६

—विश्वज्ञानकोश, पृष्ठ २१२ (१६६४)

५ विश्व की प्रमुख-भाषाए एव उन्हे बोलनेवालो की सख्या —

भाषा	बोलनेवाले
चीनी	५६,६०,००,०००
अग्रेजी	२८,१०,००,०००
हिन्दी	१७,००,००,०००
रुसी	१५,३०,००,०००
स्पेनी	१४,५०,००,०००
जर्मनी	१२,००,००,०००
जापानी	६, ६०,००,०००
अरबी	७, ७०,००,०००
फ्रेंच	७, ७०,००,०००
पुर्तगाली	७, ६०,००,०००
इटालियन	५, ७०,००,०००

—विश्वकोश, भाग ८, पृष्ठ ६६

६ कतिपय भाषाओ की वर्णमाला के अक्षर :—

१ सस्कृत ४४
२ हिन्दी ४६-५२
३ पारसी ३१
४ चीनी २०४
५ उर्दू ३६
६ जर्मनी २६
७ फ्रेंच २५
८ यूनानी २४
९ अरबी २९
१० वेलश २७
११ स्पेनिश २७
१२ अग्रेजी २६
१३ इटालियन २०
१४ रूसी ३६
१५ लातीनी २२
१६ तुर्की २८
१७ इब्रानी २२

—विज्ञान के नये आविष्कार से

●

१२ भाषा के प्रकार

१ चत्तारि भासाजाया पन्नत्ता, तंजहा—सच्चमेगं भासजायं, वीयं मोस, तइयं सच्चमोसं, चउत्थं असच्चमोसं—

—स्थानांग ४।१।२३८

भापा चार प्रकार की कही है —१ सत्य, २ मृषा (झूठ), ३ सत्यामृषा (मिश्र), ४ असत्यामृषा (व्यवहार)।

२ सत्यभाषा के जनपदसत्य आदि दस भेद हैं।
असत्यभाषा के क्रोधनिसृत आदि दस भेद हैं।
मिश्रभाषा के उत्पन्नमिश्रित आदि दस भेद हैं।
व्यवहारभाषा के आमन्त्रणी आदि बारह भेद हैं।
(इनका विस्तृत विवेचन चारित्र-प्रकाश नामक पुस्तक मे किया गया है।)

—स्थानांग १०।७४१ तथा प्रज्ञापना-पद ११

३ सत्तविहे वयणविकप्पे पन्नत्ते, तंजहा—
आलावे, अणालावे, उल्लावे,
अणुल्लावे, संलावे, पलावे, विप्पलावे।

—स्थानांग ७

सात प्रकार का वचन-विकल्प कहा गया है—

१. आलाप—थोडा बोलना, २ अनालाप-कुत्सित बोलना, ३ उल्लाप—मर्यादा का उल्लघन करके बोलना, ४ अनुल्लाप—मौन, ५ सलाप आपस मे बोलना ६ प्रलाप—निरर्थक बोलना, ७ विप्रलाप—विरुद्ध बोलना।

१३ वाणी का फल

१ बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणं च,
देहस्य सारं व्रतधारणं च।
अर्थस्य सारं किल पात्रदानं,
वाचः फलं प्रीतिकरं नराणाम् ॥

• बुद्धि पाने का फल है—तत्त्व का विचार करना, शरीर पाने का सार है—व्रत-धारण करना, धन पाने का सार है—सुपात्र दान देना और वाणी पाने का फल है—प्रीतिकारी-वचन बोलना।

२ वाणी की सार्थकता इसी मे है कि वह आकाश मे सीढी बाधकर मनुष्य को उस स्थान पर चढादे, जहा से वाणी का उद्गम हुआ।

—पुरुषोत्तमदास टंडन

१४ वाणी की महिमा

१ अर्थभारवती वाणी, भजते काममपि श्रियम् ।

अर्थ की गभीरता से परिपूर्ण वाणी कुछ निराली ही शोभा को धारण करती है ।

२ हित मनोहारि च दुर्लभ वचः । —भारवि

हितकारी एव मनोहरवचन अत्यन्त दुर्लभ है ।

३ तास्तु वाचः सभायोग्या, याश्चित्ताकर्पणक्षमा ।
स्वेपा परेपा विदुपां, द्विपामविदुपामपि ।।

—सुभापितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ८८

वही वाणी सभा मे बोलने योग्य होती है, जो स्व-पर-विद्वान्-अविद्वान् एवं शत्रुओ के चित्त को आकर्पण करनेवाली हो ।

४ केयूरा न विभूषयन्ति पुरुप हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
न स्नानं न विलेपन न कुसुमं नालकृता मूर्वजा. ।
वाण्येका समलकरोति पुरुप या सस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूपणानि सततं वाग्भूपणं भूपणम् ।।

—भर्तृहरिनीतिशतक १०

बाजुवद, चन्द्रमा के समान उज्ज्वलहार, स्नान, विलेपन, फूल और सवारे हुए केश, इन सब मे कोई भी मनुष्य को विभूपित नही कर सकता संस्कार-युक्तवाणी ही मनुष्य को सुशोभित करती है । स्वर्णादिक के आभूपण निरन्तर क्षीण होते ही रहते हैं, वास्तव मे सच्चाआभूपण वाणी ही है ।

१५ वाणी का प्रभाव

१ लोहे का तीर जो काम नही कर सकता, वचन का तीर वह काम सहज में कर डालता है। एक-एक वचन से निर्दय-हत्यारे दया के सागर वन जाते हैं। सौ मे ६६ झूठ वोलनेवाले सत्यवादी-हरिश्चन्द्र वन जाते हैं, दिन-दहाडे चोरी-डकैती करनेवाले कुख्यात-डाकू वाल्मीकिऋषि वन जाते हैं, वडी-वडी कुलटा महासती-सीता का रूप धारण कर लेती हैं, लोभियो के सरताज दानवीर-कर्ण का अनुकरण करने लगते हैं। यह सब वचन का प्रभाव है। मनुष्य ही क्या ? साप जैसे क्रोधी जन्तु भी मदारी की वीणा से प्रभावित होकर उसके कथनानुसार खेल करने लगते हैं। मन्त्रो की शब्दावली से आकृष्ट देवता भी मन्त्रवादी की इच्छा के अनुसार दौड-धूप करने लगते हैं। यह भी सुनने मे आया है कि—
जगदीशचन्द्र वसु की वचन-शक्ति से वनस्पति भी खुश-नाखुश मालूम होने लगती थी एव वसु-निर्मित दूरवीन द्वारा लोग उसे प्रत्यक्ष देख सकते थे।

—धनमुनि

२ वहुत गई थोड़ी रही—लोभी राजा के यहा नटराज ने अद्भुत नाटक किया। नटनी नाच रही थी और ५०० नट छ राग, तीस रागिनियो का आलाप करते हुए रकम-रकम के वाजे वजा रहे थे—मास्टर मोहन ने उनका चित्र इस प्रकार खीचा है—

छिछि छुम-छिछि छुम, छुम छननननननन,
रमकत झमकत पगपे जन।

घुम-घुम घिरि-घिरि थिृकि-थिृक नाचे गन,
ताथइ-ताथइ कर वहुत मगन ।। ध्रुवपद ।।
किड़ किड झाँई-किड किड झाँई वाजे झाझ मोर चंग,
लगी तवलो पर थाप पडन ।
ढोल डफ मृदग सननन सारंग,
डमकत डमरु नाचत गन ।
घुम-घुम घिरि-घिरि वाजे गति घूघरो की,
चोरासी नेउर करें ठननतन ।
नाद घडियाल खरताल करताल वाजे,
झालर घटा घननननन ।
लप-झप गणपति तान तोडते,
चौसठ वाजे लगे वजन । घुम-घुम ।।१।।
सितार तवूरा मोर चीकारा इकतारा वीन,
खजरी धारा कानु वाजे कुनन-कुनन ।
हुडगा नागडिया किंगडी मुरली सिटकी चिटकी ताली,
अलगुंजा और वशी वाजे सनन-सनन ।
सरणाई गरणाई सीटी सरोद रब्बाव पाल,
थोड गिड-गिड थब्ब वाजे लगे हैं वजन ।
सखावज पखावज ताली भेरी भीपी धुन्नवी,
इन्द्र नगारे तोरे लगे गरजन ।
श्याम का नरसिंघा है जो ढोलक मजीरा घडा,
तवले और तासे मव लगे खडकन । घुम-घुम ।।२।।
असकंभे तुंतुमने दमे दडे जलतरगे वाजे,
तुंवड़ियाँ गुड गुडिया खूव मथा मथन ।
डमडमी डुगडुगी ठिकरी शीतलदंडी रोशन चौकी,
और रब्वानी तोरो लगी धुधुकन ।

चग फिरंगा चंग तुक्कन गुरू का शायर,
फड मे बाजे गावे वो सब गिन-गिन।
दसनावें का धौंसा सुनकर होकर अपने मन मे राजी,
खिल-खिल हसते श्रोता जन।
लोक कोक सब ही पूछें किसने दिन्ही गनकुं ताली,
और किसने सिखाया गन को नृत्य करन। घुम-घुम ॥३॥
सब बाजन मे मोहनगारी बाजती बासुरिया,
तीस रागिनी छ. राग गावे सुजनमोहन।
कान्हडा केदारा सारग तल्लाना नट दीपक सौरठ,
झब्बाब रब्बाई और विहाग एमन।
भैरवी अडियाना टोडी बगाली मल्हार मरुआ,
पिस्तोल चोताला ध्रुपद न्यारी गुनियन।
सब्बाव रब्बाई जैजैवंती जे हिंडोल गावे,
हिरणी ऐसी तान लागी तीन भवन।
गावें गोरी और प्रभाती, खेट राग कर विल्लाहन। घुम-घुम ॥४॥

रात भर खेल चला, किन्तु दान मे किसी ने एक पैसा भी नही दिया। निराश होकर नटनी ने कहा—

रात घडी दो रह गई रे, पिंजर थाक्यो प्राय।
नटनी कहे सुन नायका! टुक, मधुरी-सी ताल वजाय।
सब गुन लायक हो म्हारा नायक! अब नहिं नाच्यो जाय।

नट ने जवाब दिया—

बहुत गई थोडी रही है, थोडी भी अब जाय,
थोड़ी-सी देरी के कारण, ताल मे भंग न थाय।
हे सुन प्यारी! सीख हमारी, आलस अंग मतलाय!

ऊपर के पद्यो ने सभा का रग बदल डाला। ३६ वर्ष के दीक्षित एक जैन मुनि ने (जो विचलित होकर घर जा रहा था) नट को सवालाख मूल्य का एक रत्न कवल दिया, ६५ वर्षीय राजकुमार ने (जो ९० वर्षीय बाप

को कत्ल करने को तैयार था) ४० हजार के रत्नजडित कुडल दिये । ४५ वर्षीय राजकुमारी ने (जो विवाह न होने से मन्त्री-पुत्र के साथ भागने वाली थी) नौलाख का मुक्ताहार नटनी के गले मे पहना दिया। आश्चर्यचकित राजा ने मर्म पूछा, सबने अपना-अपना सच्चा हाल सुनाया। राजा की कृपणता दूर हुई, नट को लाखो का दान दिया और पुत्र को राज्य देकर खुद सन्यासी बन गया। इधर राजकन्या का विवाह हो गया और मुनि ने पुन सयम ले लिया। नट के एक वचन से चारो का उद्धार हुआ।

३ पलग की ६० मिनिटें—

दासी बादशाह का पलग बिछाया करती थी। बिछाते-बिछाते एक दिन पाच मिनिट के लिए उस पर लेट गई एव उसे गहरी नीद आ गई। बादशाह और बेगम सोने के लिए आये, दासी चौंक कर उठी। बेगम गुस्से मे होकर कहने लगी—जहापनाह ! यह रोज हमारे पलग का आनद लूटती है। दासी ने कहा—खुदा की कसम ! मैं कभी नही लेटती, आज केवल पाच मिनिट के लिए सोई थी, किंतु नीद आ गई और एक घटा गुजर गयी ! बेगम ने कहा—साठ मिनिट सोयी है, अत इसके साठ चाबुक मारने चाहिएँ, अस्तु ! बेगम चाबुक मारने लगी और बादशाह गिनने लगे। तीस चाबुक लगे, वहा तक तो दासी चिल्लाती रही और बाद मे हसती हुई कहने लगी—"हुजूर ! अगर इस पलग पर ६० मिनिट सोने से ६० चाबुक लगते हैं तो आपका क्या हाल होगा ? आप तो जीवन भर इसका मजा लूटते रहे हैं।" बादशाह के दिल मे यह वचन तीर-सा चुभ गया और बादशाही छोडकर वह फकीर बन गया। कवि ने एक छप्पय छद मे उसकी तस्वीर इस प्रकार खीची है—

टुक लोटत कमच्या पटी, बादी करी पुकार,
सौलह-सौ हुरमां तणें, पाप तणो नहिं पार।
पाप तणो नहिं पार, मार मुहकम भुगतासी,
दीन-दरग्गां बीच, मियाजी ! जाब न आसी।

सुन सुलतानी चेतियो, तजत न लागी बार,
टुक लौटत कमच्च्या पड़ी, बादी करी पुकार ॥

—भाषाश्लोकसागर

४ **यह भी दिन चला जायेगा**—एक फकीर से बादशाह ने ज्ञान मांगा। फकीर ने दिल्ली के सभी सरकारी मकानो पर उपरोक्त वाक्य लिखवा दिया। अब बादशाह जब भी खाता, पीता, सोता एव ऐश-आराम मे आसक्त होता—इस वाक्य से ज्ञान हो जाता कि **यह दिन सदा स्थिर नहीं है।**

एक बार बादशाह युद्ध मे हार कर कैदी बना। वहा भी इस वाक्य से शान्ति मिली। दुश्मन को भी इस वाक्य से ज्ञान हुआ एव बादशाह को कैद से छुट्टी मिली।

५ **बुढिया का प्रभावशाली वाक्य**—पराजित चन्द्रगुप्त और चाणक्य एकबार एक वृद्धा के घर ठहरे। वृद्धा का पुत्र खेत से आया। माता ने खिचडी परोसी। उत्तावल करके उसने खिचडी के बीच मे हाथ डाला,हाथ जला और वह चिल्लाया। वृद्धा ने कहा—तू भी चन्द्रगुप्त और चाणक्य जैसा मूर्ख है। चौंककर चाणक्य ने पूछा—वे कैसे मूर्ख हुए ? वृद्धा ने कहा—सीमान्त-राज्यो को जीते बिना बीच के पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया अतएव उन्हे हार खानी पडी। राजा-मन्त्री वृद्धा की इस बात से बडे प्रभावित हुए कि पहले बीच मे हाथ नही डालना चाहिये। (तत्पश्चात् उन्होंने बुढिया के कथनानुसार कारवाई की एव पाटलीपुत्र का राज्य प्राप्त किया।)

१६

'किन्तु' शब्द की करामात

- मनुष्य ससार मे या धर्म मे जब कभी आगे बढने की कोशिश करता है, 'किंतु' शब्द आकर फौरन उसमे विघ्न डाल देता है—जैसे कि व्यक्ति सोचते हैं—
- व्यापार तो करना है, किन्तु नुकसान हो जाएगा तो ?
- परीक्षा तो देनी है, किन्तु फेल हो जाएंगे तो ?
- समाजसुधार तो करना है, किन्तु लोग आलोचना करेंगे तो ?
- चुनाव तो लडना है, किन्तु हार जायेंगे तो ?
- व्रत तो धारने हैं, किन्तु टूट जाएंगे तो ?
- तपस्या तो करनी है, किन्तु कमजोरी बढ जाएगी तो ?
- झूठ एव चोरी छोड तो दें, किन्तु व्यापार नही चलेगा तो ?

यहा सभी जगह व्यक्ति आगे कदम बढाना चाहते हैं, लेकिन किन्तु शब्द आकर उन्हें निरुत्साह एव निराश बनाकर पीछे धकेल देता है। देखिये कई एक उदाहरण—

(क) जमीन का मामला तय होनेवाला था, मुद्दई खुश-खुश हो रहा था। मजिस्ट्रेट ने कहा—आपकी बात तो ठीक ही है, किन्तु रेवेन्यु मिनिस्टर का विरोध है। (मुद्दई निराश)।

(ख) पडित से एक मनुष्य कह रहा था—महाराज ! मेरी नौ वर्ष की कन्या विवाह होने के तीन दिन बाद ही विधवा हो गयी। क्या उसका पुनर्विवाह कर दूं ? पडित ने कहा—ऐसी परिस्थिति मे खास दोष तो नहीं है, किन्तु मैं कैसे कह दूं ? धर्मशास्त्र की मर्यादा भी तो देखनी पडती है। (कन्या का बाप चुप)।

(ग) एक रोगी कुछ ठीक हुआ, ससुराल से भोजन का न्योता आया। उसने वैद्य से पूछा—क्या मैं खाने के लिए जा सकता हू ? उत्तर मिला—हाँ जाओ, **किन्तु गरिष्ठ पदार्थ मत खाना।** (रोगी हताश)।

(घ) एक विद्यार्थी अच्छे नवरो से पास हुआ। साहेव वोले—इसे इनाम मिलना चाहिये। हेड मास्टर ने कहा—**बात तो ठीक है, किन्तु गैरहाजिरी ज्यादा करता है।** (इनाम नहीं मिला)।

(च) कई यात्री **तानसा** बांध (वम्वई से ५०-६० माइल दूर) देखने गये। वस की गडवडी से देरी हो गई, दिन छिप गया एव तालाव का फाटक वद हो गया। यात्री वडे साहिव से मिले और तालाव देखने के लिये विशेप अनुमति मांगी। साहव ने कहा—**नो मेशन यू केन सी, वट आई एम सोरी, नो मैंनेजर हियर** अर्थात् कोई हर्ज नही आप देख सकते है, किन्तु मुझे खेद है कि यहा मैंनेजर नही है। (यात्रियों को तालाव विना देखे ही लौटना पडा)। अंग्रेजी मे किन्तु को **वट** कहते हैं।

(छ) किसी सार्वजनिक सस्था के सस्थापक कई व्यक्ति डेप्युटेशन लेकर एक मारवाडी सेठ के पास गये और सस्था की गतिविधि से अवगत कराकर उनसे कुछ आर्थिक-सहायता देने का अनुरोध किया। सेठजी ने फरमाया—**म्हारै सहायता देणे मे काई आट है 'पण' पहली दो-चार वर्ष इणरो काम देखागा।** (आगन्तुक चुपचाप रवाना) मारवाडी भापा मे किन्तु की जगह **पण** का प्रयोग होता है।

(ज) महाभारत की रचना करते समय व्यास जी ने कहा—

सत्य मनोरमा रामा, सत्य रम्या विभूतय ।
किन्तु मत्ताङ्गनापाङ्ग-भङ्गिलोलं हि जीवितम् ॥

सुन्दर स्त्रिया सत्य हैं एव मनोहर विभूतिया-सपत्तियाँ भी सत्य है, किन्तु उन्मत्त-स्त्रियो के कटाक्षो (तिरछी-नजरो) की तरह जीवन चचल है, अत स्त्रियो और विभूतियो की वास्तविकता विश्वास के योग्य नही है।

मीठी-वाणी

मधुमती वाचमुदेयम् ।

—अथर्ववेद १६।२।२

मीठी वाणी बोलूँ ।

प्रियवाक्यप्रदानेन, सर्वे तुष्यन्ति जन्तव ।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता ?

—चाणक्यनीति १६।१७

मीठे-वाक्य का प्रदान करने से सभी सतुष्ट होते हैं। अत वही बोलना चाहिए, बोलने मे दरिद्रता क्यो ?

जिह्वायाश्छेदनं नास्ति, नास्ति ताल्वश्च भेदनम् ।
अर्थस्य च व्ययो नास्ति, वचने का दरिद्रता ?

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ३८०

मिष्टवचन बोलने से जीभ का छेदन नही होता, तालु का भेदन नही होता और धन का व्यय नही होता। फिर बोलने मे दरिद्रता क्यो ?

काहे को बोलत बोल बुरो नर,
नाहक क्यो जग-धर्म गमावें।
कोमल बैन चवै किन ऐन,
लगे कछु है न सबे मन भावे।
तालु छिदे रसना न भिदे,
न घटे कछु अंक दरिद्र न आवे।

१७ वाणी-वाणी में अन्तर

१ मूर्खता एव विद्वत्तापूर्ण जवान मे घडी की सुइयो की तरह फर्क है कि एक वारहगुणा चलती है और दूसरी वारहगुणा दरसाती है।

२ गुणसुट्ठियस्स वयणं, घयपरिसित्त ु व्व पावओ भाइ। —
गुणहीणस्स न सोहइ, नेहविहूणो जह पईवो ॥

—बृहत्कल्पभाष्य २४५

गुणवान व्यक्ति का वचन घृतसिंचित-अग्नि की तरह तेजस्वी होता है, जबकि गुणहीन व्यक्ति का वचन स्नेह-रहित (तैलशून्य) दीपक की तरह तेज और प्रकाश से शून्य होता है।

३ **देवर-भाभी**—

देवर ने कहा—कानी भाभी ! पानी पिला !

भाभी क्रुद्ध होकर वोली—कुत्ते को पिला दूँगी, पर तुझे नही पिलाऊँगी।

छोटे देवर ने कहा—रानी भाभी ! पानी पिला !

भाभी ने हँसकर कहा—देवर ! पानी नही, वादाम का शर्बत पिलाऊँगी, तुम्हे !

४ हे वाई वाडी ! छास आपजे जाडी।
जेवी तारी वाणी, तेवुं छास मां पाणी ॥

—गुजराती कहावत

●

१८ मीठी-वाणी

१ मधुमती वाचमुदेयम् ।

—अथर्ववेद १६।२।२

मीठी वाणी बोलूँ ।

२ प्रियवाक्यप्रदानेन, सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता ?

—चाणक्यनीति १६।१७

मीठे-वाक्य का प्रदान करने से सभी सतुष्ट होते हैं। अत वही बोलना चाहिए, बोलने मे दरिद्रता क्यो ?

३ जिह्वायाश्छेदन नास्ति, नास्ति ताल्वश्च भेदनम् ।
अर्थस्य च व्ययो नास्ति, वचने का दरिद्रता ?

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ३८०

मिष्टवचन बोलने से जीभ का छेदन नही होता, तालु का भेदन नही होता और धन का व्यय नही होता । फिर बोलने में दरिद्रता क्यो ?

४ काहे को बोलत बोल बुरो नर,
नाहक क्यो जग-धर्म गमावें ।
कोमल बैन चवै किन ऐन,
लगे कछु है न सवै मन भावे ।
तालु छिदे रसना न भिदे,
न घटे कछु अंक दरिद्र न आवे ।

जीभ कहे जिय हानि नही,
तुझ जी सब जीवन को सुख पावे ॥
—भूधरदास

५ वचोऽमृतं यस्य मुखारविन्दे,
दानामृत यस्य करारविन्दे ।
कृपामृतं यस्य मनोऽरविन्दे,
न वल्लभः कस्य नरो वरोऽसौ ?

जिसके मुखकमल मे वचनामृत है, करकमल मे दानामृत है एव हृदय-कमल मे दयामृत है, वह श्रेष्ठ मनुष्य किसको वल्लभ नही होता ?

६ प्रियवादिनो नो शत्रुः ।
—कौटलीय अर्थशास्त्र

प्रियवादी के शत्रु नही रहता ।

७ को मूकः ? यः काले, प्रियाणि वक्तुं न जानाति ।
मूक कौन है ? जो मौके पर मीठा बोलना नही जानता ।

८ सॉफ्ट वर्ड्ज आर हार्ड आर्ग्युमेन्ट्स ।
मृदुभाषण बडी विनती है ।

० ए सॉफ्ट एन्सर टर्नेथ अवे राथ ।
—अंग्रेजी कहावतें

मधुर वचन सो क्रोध नसाही ।

९ कांसी कुत्ती कुभारज्या, कर लाग्यां कूकंत ।
सोनो सीसो सुघड़नर, मधुरा ही बोलन्त ।

१० चार प्रकार के घड़े होते हैं—
१ मधु का घडा—मधु का ढक्कन, २ मधु का घडा—विष का ढक्कन
३ विष का घडा—मधु का ढक्कन, ४ विष का घडा—विष का ढक्कन ।
घडे के समान चार प्रकार के मनुष्य हैं—
१ शुद्धहृदय—मधुरवाणी, २ शुद्धहृदय—कटुवाणी, ३ कलुषितहृदय—मधुरवाणी, ४ कलुषितहृदय—कटुवाणी ।
—स्थानांग ४।४

सुलभा: पुरुषा राजन् ! सततं प्रियवादिन: ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।।

—पञ्चतन्त्र २।१५७

निरन्तर मीठे बोलनेवाले पुरुष सुलभ है, किन्तु सुनने मे अप्रिय और परिणाम मे हितकारी-ऐसे बोलनेवाले एव सुननेवाले दोनो ही दुर्लभ हैं।

सचिव वैद्य गुरु तीन जो, प्रिय बोल हि भय आस।
राज-धर्म-तन तीन का, होही वेग विनाश ॥

—रामचरितमानस

●

१६ सुभाषित-सूक्ति

१ नूनं सुभाषितरसोऽन्यरसातिशायी ।

सुवचनो का रस अन्य रसो की अपेक्षा अधिक अच्छा है ।

२ द्राक्षा म्लानमुखी जाता, शर्कराचाश्मतां गता ।
सुभाषितरसस्याग्रे, सुधा भीता दिवंगता ।।

सुभाषितो का रस इतना मीठा एव आश्चर्यकारी है, कि उन से डरक द्राक्षा म्लानमुखी हो गई, मिसरी पत्थररूप हो गई और सुधा स्वर्ग चली गई ।

३ अपूर्वाह्लाददायिन्य, उच्चैस्तरपदाश्रयाः ।
अतिमोहापहारिण्य, सूक्त्यो हि महीयसाम् ।।

—योगवाशिष्ठ ५।४।

महापुरुषो की सूक्तियाँ अपूर्वआनन्द को देनेवाली, उच्चतर पद प पहुचानेवाली और अनर्थमूल—मोह को दूर करनेवाली होती हैं ।

४ प्रबोधाय विवेकाय, हिताय प्रशमाय च ।
सम्यक्तत्त्वोपदेशाय, सतां सूक्तिः प्रवर्तते ।।

—ज्ञानार्णव, पृष्ठ

दूसरो को जगाने के लिए, सत्यासत्य के निर्णय के लिए, लोककल्याण के लिए, विश्वशान्ति के और सच्चे तत्त्व का उपदेश देने के लिए सत्पुरुषो की सूक्ति प्रवृत्त होती है ।

५ सुभाषितेन गीतेन, युवतीना च लीलया ।
न विद्व्यते मनो यस्य, स योगी ह्यथवा पशुः ।।

—चन्द्रचरित्र, पृष्ठ ५३

सुभाषितमय गीतो से और युवतियो की लीला से जिसका मन नही भेदा जाता, वह या तो योगी है या विवेकशून्य पशु है।

६ बोद्धारो मत्सरग्रस्ता, प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोपहता चान्ये, जीर्णमङ्गे सुभाषितम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक २

ज्ञानी लोग ईर्ष्या से भरे हैं, धनी लोग अभिमानी हैं और शेष लोग अज्ञानी हैं, इस परिस्थिति मे सुभाषित (सुन्दर-काव्य) अपने आप मे ही जीर्ण हो जाते हैं।

७ या दुग्धापि न दुग्धेव, कविदोग्धृभिरन्वहम।
हृदि नः सन्निधता सा, सूक्तिधेनु सरस्वती ॥

—शुक्राचार्य

जो कवि-दुहारियो द्वारा निरन्तर दूही जाने पर भी नही दूही हुई-सी अर्थात् अमितदूधयुक्त रहती है, वह सूक्तिरूप दूध देने मे कामधेनु-तुल्य सरस्वती सदा हमारे हृदय मे विराजमान रहो।

२० बोलने योग्य वाणी

१ आणाइसुद्धं वयणं भिउंजे ।

—सूत्रकृतांग १४।२४

भगवान की आज्ञा के अनुसार शुद्धवचन बोलो ।

२ दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुन्नं वियं जियं ।
अयपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ।।

—दशवैकालिक ८।४६

आत्मार्थी-व्यक्ति को देखी हुई, परिमित, सदेहरहित, प्रतिपूर्ण, व्यक्त, परिचित, अनुभूत, वाचालतारहित एव उद्वेगरहित भापा बोलनी चाहिए ।

३ असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ।

—उत्तराध्ययन २४।१०

प्रज्ञावान समयानुसार निरवद्य एव परिमित भापा बोले ।

४ वाक्यं प्रियहितं वाच्यं, देशकालानुग बुधैः ।

—विवेकविलास

विद्वानो को देश-काल के अनुकूल प्रिय एव हितकारी वचन बोलना चाहिये ।

५ निरवद्यं वदेद्वाक्यं, मधुरं हितमर्थवत् ।

—तत्त्वामृत

मधुर, हितकर एव अर्थयुक्त होने पर भी जो वचन निरवद्य हो, वह बोलना चाहिये ।

६ अव्याहृत व्याहृताच्छ्रेय आहुः,
सत्यं वदेद् व्याहृतं तद् द्वितीयम् ।
प्रियं वदेद् व्याहृतं तत् तृतीयं,
धर्मं वदेद् व्याहृतं तच्चतुर्थम् ।।

—विदुरनीति ४।१२

बोलने से न बोलना अच्छा बताया गया है, किन्तु सत्य बोलना वाणी की दूसरी विशेषता है, सत्य भी यदि प्रिय बोला जाय तो वह तीसरी विशेषता है और वह भी यदि धर्मसम्मत कहा जाय तो चौथी विशेषता है ।

२१ विचारयुक्त वाणी

१ पुव्विं बुद्धीए पासेत्ता, तत्तो वक्कमुदाहरे।
अचक्खुओ व नेयारं, बुद्धिमन्नेसए गिरा॥

—व्यवहारभाष्य-पीठिका ७६

पहले बुद्धि से परख कर फिर बोलना चाहिए। अधा व्यक्ति जिस प्रकार पथ-प्रदर्शक की अपेक्षा रखता है, उसी प्रकार वाणी बुद्धि की अपेक्षा रखती है।

२ सव्वं सुणाति सोतेन, सव्वं पस्सति चक्खुना।
न च दिट्ठं सुतं धीरो, सव्व उज्झितुमरहति॥

—थेरगाथा ८।५००

मनुष्य कान से सब कुछ सुनता है, आख से सब कुछ देखता है, किंतु धीर-पुरुष देखी और सुनी सभी बातो को हर कही कहता न फिरे।

३ अणुचिंतिय वियागरे।

—सूत्रकृतांग ६।२५

पहले सोचकर बोलना चाहिए।

४ अव्वल अन्देशो आँ गहे गुत्फार।

—पारसी-कहावत

विचार कर बोलो।

५ बोली बोल अमोल है, जो कोई जाणे बोल।
पहली अंदर सोचके, पाछै बाहिर खोल॥

• वचन रतन मुख कोट है, होठ कपाट बणाय।
समझ-समझ हर्फ काढिये, मत परवश पड जाय॥

* पढ-पढ पोथा रह गया थोथा, संस्कृत नैं पारसी ।
  विना विचारी भाषा वोलैं, ते किम पार उतारसी ।।

—राजस्थानी दोहे

६ मेरे शब्द ऊपर उड जाते हैं, किन्तु विचार पृथ्वी पर ही रह जाते है । शब्द विना विचारो के कभी स्वर्ग नही जा सकते ।

—शेक्सपियर

७ सोचो चाहे जो कुछ, पर कहो वही जो तुम्हे कहना चाहिए ।

८ वोल्या अवोल्या थाय नहीं, वोल वोल्या ते पाछा मो मा पैंसे नहि। थूक्यु पाछु गलाय नहि । जे वोल्या ते ध्रुवना अक्षर, जे मोढे पान चाव्या, ते मोढे कोयला चवाय नहि, तं थी सौ गलने गली ने वात करीए ।

—गुजराती कहावत

९ क्युं राड कहकर नपूती सुणनी ।

—राजस्थानी कहावत

२२ समयोपयोगी वाणी

१ कटुकं वा मधुरं वा, प्रस्तुतवाक्यं मनोहारि ।
वामे गर्दभनाद-श्चित्तप्रीत्यै प्रयाणेषु ॥

—जगन्नाथ

कटु हो या मधुर, समयोपयोगी वचन अच्छा लगता है । जैसे—प्रयाण के समय बाँयी ओर गधे का रेंकना भी मन मे प्रीति उत्पन्न करनेवाला हो जाता है ।

२ नीकी हु फीकी लगे, बिन अवसर की बात ।
जैसे वरनत युद्ध मे, नहिं शृंगार सुहात ॥
फीकी पे नीकी लगे, कहिए समयविचार ।
सबको मन हर्षित करे, ज्यौं विवाह मे गार ॥

— वृन्दकवि

३ बाल्ये सुताना समरे भटाना,
स्तुतौ कवीना सुरतेऽङ्गनानाम् ।
रिकार-तुंकारगिर- प्रशस्या',
स्वभावत' प्रीतिकरा भवन्ति ॥

बचपन मे पुत्रो की, युद्ध मे सुभटो की, स्तुति मे कवियो की और सम्भोग के समय अङ्गनाओ की रिकार-तुंकारमय वाणी प्रशसनीय एव स्वभाव से ही प्रीति उत्पन्न करनेवाली होती है ।

४ "प्रस्तावौचित्यं"—प्रस्ताव के योग्य बोलना ।
अरिहंत भगवान का अतिशय माना गया है ।

वृद्धवादी और सिद्धसेन दिवाकर—प्रस्ताव पर कही हुई साधारण बात भी बहुत बडा काम कर देती है। कुमुदचन्द्र नाम के एक विद्वान दिग्विजय के लिये विश्व मे घूम रहे थे। बडे-बडे दिग्गज-विद्वान् उनसे पराजित हो गये। एक जैन के यशस्वी यती श्रीवृद्धवादी उन्हे जगल मे मिले। नाम का परिचय पाकर चर्चा का आह्वान किया। वृद्धवादी ने कहा—मध्यस्थ कौन होगा? उत्तर मिला—अजपाल अर्थात् भेड-बकरी चरानेवाले।

चर्चा शुरु हुई, कुमुदचन्द्र लगभग २०-२५ मिनट तक धाराप्रवाह सस्कृत बोलते रह। अजपाल कुछ भी न समझ सके, अत उन्होंने उस विद्वान् को रोककर यतीजी से बोलने के लिये कहा। अवसरज्ञ यतीजी ने निम्नलिखित पद्य सुनाये—

> काली काबल अरणीसट्ठ, छाछे भरियो दीवड मट्ठ।
> एवड पडियो नीले झाड, अवर किसो है स्वर्ग विचार॥

ओढने के लिए जिनके पास काला कबल है, आग सुलगाने के लिये अरणी की लकडी है, भूख-प्यास मिटाने के लिये छाछ से भरी हुई दीवडी है और जिनका एवड (भेड-बकरियो का समूह) हरे जगल मे चर रहा है। ऐसे अजपाल ही वस्तुत स्वर्ग का आनन्द ले रहे हैं, क्योंकि इनसे बढकर और स्वर्ग हो ही क्या सकता है? सारे अजपाल खुश हो गये और वृद्धवादी को विजयी घोषित कर दिया। (विजय का मूलकारण प्रस्तावोचित बोलना ही था)।

पराजित विद्वान् वृद्धवादी के शिष्य बने एव आगे जाकर ये ही सिद्धसेन दिवाकर कहलाये। इनके लिए कलिकाल-सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्रसूरि ने कहा है कि अनुसिद्धसेन कवय. ससार के सभी कवि सिद्धसेन से पीछे हैं अर्थात् सिद्धसेन विश्व के सर्वोत्कृष्ट कवि हैं। अस्तु।

५ अकाले विज्ञप्त ऊपरे कृष्टमिव।

—नीतिवाक्यामृत ११।२६

असमय मे कहना, ऊपर मे बीज डालने का कष्ट करने के बराबर है।

६ सभा वा न प्रवेष्टव्या, वक्तव्यं वा समंजसम् ।
अब्रुवन् विब्रुवन् वापि, नरो भवति किल्विषी ॥

—मनुस्मृति ८।१३

सभा मे या तो जाना नही चाहिये । यदि जाये तो उचित बोलना चाहिये। नही बोलनेवाला और समय से विपरीत बोलनेवाला मनुष्य पापी हो जाता है।

७ कलाकलाप सपन्ना, जल्पन्ति समये परम् ।
घनागम विपर्यासे, केकायन्ते न केकिन ॥
कलासमूह से सम्पन्न व्यक्ति उचित समय पर ही बोला करते हैं। यही सोचकर मेघऋतु के अभाव मे मयूर नही बोलते ।

८ यत्र स्ववचनोत्कर्षो, भाषन्ते तत्र साधवः ।
कलाकण्ठ सदा मौनी, वसन्ते वदति स्फुटम् ॥

—भक्तामर-विवृति १६

सत्पुरुप वही बोलते है, जहाँ अपने वचन की कुछ उत्कृष्टता हो । कोकिल सदा मौनी रहती है, किंतु वसन्तऋतु मे खुलकर बोलती है ।

९ निमित्त च त्रिकालाना, न वाच्यं कस्यचित् पुर ।
किसी के सम्मुख हानिप्रद भविष्यवाणी नही करनी चाहिये ।

२३ संक्षिप्तवाणी

१ अपने भावो को सक्षेप मे व्यक्त करो। अल्पशब्दो मे अधिक भावो को व्यक्त करो।

—वाइविल

२ जो कुछ कहो, सक्षेप मे कहो, वरना पढनेवाला उसे छोडता जायेगा और जहा तक हो सके सादे शब्दो मे कहो, वरना श्रोता मतलब नही समझेगा।

—रस्किन

३ चाहे हमारी बात कोई समझे या न समझे, सक्षेप मे कहना हमेशा अच्छा है।

—वटलर

४ तुम जितना ज्यादा वोलोगे, लोग उतना ही कम याद रखेंगे।

—फीनेलन

५ शब्द पत्रो के समान है, जहाँ वे अधिक होते है, वहा फलयुक्त ज्ञानरूपी बाते बहुत कम दिखाई देती हैं।

—पोप

६ सक्षेप ही प्रतिभा और बुद्धिमत्ता की आत्मा है।

—शेक्सपियर

७ मन्त्रो का इसलिए अधिक महत्त्व है कि वे सक्षिप्त होते है।

—धनमुनि

८ बुद्धिमत्ता और विनोद मे खास ध्यान देने की बात सक्षेप है।

९ अल्पशब्दो की प्रार्थना सुन्दरतम होगी।

—सूयर

२४ परित्याग करने योग्य वाणी

१ गिरं च दुठ्टं परिवज्जए सया ।

—दशवैकालिक ७।५५

दुष्ट-भाषा का सदा परित्याग करते रहना चाहिए ।

२ न दुरुक्ताय स्पृहयेत् ।

—ऋग्वेद १।४१।६

दुष्टवचन बोलने की इच्छा भी नही करनी चाहिए ।

३ वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वैराणुबधीणि महब्भयाणि ।

—दशवैकालिक ६।३।७

दुष्टरीति से बोले हुए वचन काटो की तरह बडी मुश्किल से निकाले जाते हैं एव महाभय के कारण बनते हैं ।

४ वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ।

—उत्तराध्ययन २१।१४

वचनयोग को समझकर कभी असभ्यवचन न बोले ।

५ चन्दन तन हलका भला, मन हलका सुखकार ।
पर हलके अच्छे नही, वाणी अरु व्यवहार ॥

६ जं वइत्ता अणुतप्पइ .... तं न वत्त-वं ।

—सूत्रकृताग १।६।२६

जिसके कहने से पछताना पडे, वह वात मत कहो ।

७ अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पिज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहियगामिणी ॥

—दशवैकालिक ८।४८

जिससे अप्रीति उत्पन्न हो और सुननेवाला शीघ्र क्रुद्ध हो जाए, अहित करनेवाली भाषा सब काल मे एव सभी अवस्थाओ मे न बोले।

८ इमाइ छ अवयणाइ वदित्तए-अलियवयणे, हीलियवयणे, खिसितवयणे, फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसवित वा पुणो उदीरित्तए।

—स्थानाग ६।५२७

छह तरह के वचन नही बोलने चाहिए – १—असत्य वचन, २—तिरस्कारयुक्त वचन, ३—झिटकते हुए वचन, ४—कठोरवचन, ५—साधारण मनुष्यो की तरह अविचारपूर्ण वचन और ६—शान्त हुए कलह को फिर से भडकानेवाले वचन।

९ तहेव फरुसा भासा, जा य भूओवघाइणी।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो॥

—दशवैकालिक ७।११

इसी प्रकार कठोर और जीवो का उपघात करनेवाली सत्यभाषा भी नही बोलनी चाहिए, क्योकि उससे पाप लगता है।

१० कटुसत्य से हानि :—

(क) पत्नी ने पूछा—मेरी रसोई कैसी बनती है? पति ने कहा—रसोइया होता तो छुट्टी दे देता। पत्नी रुष्ट हो गई।

(ख) पत्नी ने पूछा—मै पीहर जाती हू तब तुम्हे याद आती हू या नही? पति बोला—निकम्मा होता हू तो याद आजाती है अन्यथा नही। बस, पत्नी रूठकर पीहर चली गई।

(ग) मित्र ने अपने मित्र को कविता दिखलाई। उसने कहा—अभी तो तुम्हे अक्षर जोडना भी नही आता, अत कविता बन्द कर दो! बस, नाराज होकर मित्र ने बोलना ही बन्द कर दिया।

(घ) सेठानी ने मुनीम से पूछा—बच्चा कैसा है? उत्तर मिला—ठीक बन्दर जैसा है। बस, उसी वक्त छुट्टी मिल गई।

११ अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अन्तरा।

—दशवैकालिक ८।४७

बिना पूछे मत बोलो और बोलते हुए व्यक्ति के बीच में मत बोलो। ●

२५ कटुवाणी

१ अग्निदाहादपि विशिष्टं वाक्पारुष्यम् । —चाणक्यसूत्र ७५

वाणी की कठोरता अग्निदण्ड से भी अधिक कष्ट देनेवाली है ।

२ वाक्पारुष्यं शस्त्रपातादपि विशिष्यते ।

—नीतिवाक्यामृत

वचन की कठोरता शस्त्र के प्रहार से भी बढकर है ।

३ कोई तलवार इतनी बेदर्दी से नही काटती, जितना की कटुवचन ।

—सर पी. सिन्डनी

४ कर्णिनालीक-नाराचान्, निर्हरन्ति शरीरत ।
वाक्शल्यस्तु न निर्हर्तुं, शक्यो हृदिशयो हि स ।।

—महाभारत, अनुशासनपर्व १०४

वन्दूक की गोली एव तीर तो प्रयत्न करने पर शरीर से निकल जाते हैं, किन्तु वचन का शल्य नही निकल सकता,वह हृदय मे चुभता ही रहता है ।

५ "अन्धे के बेटे अन्धे ही होते हैं" —द्रौपदी का यही एक वचन महाभारत का मूलबीज था ।

६ सूच्यग्रेण सुतीक्ष्णेन, या सा भिद्येत मेदिनी ।
तस्यार्धं नैव दास्यामि, विना युद्धेन केशव !

—जैनपाडवचरित्र

दूत के रूप मे कृष्ण दुर्योधन के पास गये और केवल पाच नगर देकर पाडवो से समझौता करने के किए कहा । दुर्योधन बोला—आप पाच नगर की बात कर रहे हैं ! लेकिन मैं तो तीखी सूई की नोक के आधे भाग जितनी पृथ्वी भी लडाई किए विना नही दूगा । (कृष्ण क्रुद्ध होकर चल पडे, फलस्वरूप महाभारत हुआ) ।

२६ कटुवाणी-निषेध

१ मा वोच फरुसं किंचि ।

—धम्मपद १०।५

कठोर वचन मत बोलो ।

२ उलटे-मुलटे एक है, जिसके अक्षर तीन[1] ।
दु:ख पावै पर-आतमा, मत बोलो परवीन ।।

३ तुलसी मीठे वचन से सुख उपजै चिहुँ ओर ।
वशीकरण यह मन्त्र है, तजदे वचन कठोर ।।

४ आंधेने आंधो कह्या, कडवा लागे वैण !
धीरे-धीरे पूछिए, थारा किस विध फूटा नैण ?

५ जहर न होणा जीभ से, शक्कर रहणा सैण ?
ऊठ चलगे एक दिन, पूठ रहेगे वैण ।।

६ कुदरत को नामंजूर है, सख्ती जबान मे ।
पैदा हुई न इसलिए, हड्डी जबान मे ।।

—उर्दू शेर

७ वस राखो जीह कहै इम वाको, कडवा बोलो परकत्त किसी ।
लोहतणी तलवार न लागत, जीहतणी तलवार जिसी ।
लागे अघ अधेरिया भारत, हेकण जीह-प्रताप हुआ ।
मन मिले माढवा, तिके जीह करे खिणमांह जुआ ।।

—कवि बाकीदास

---

[1] कटुक

२७ मर्मघातक-वाणी

१ णेव वंफेज्ज मम्मयं ।

—सूत्रकृताग ६।२५

मर्म मे घात करनेवाला वचन नही बोलना चाहिए ।

२ मर्म वाक्यमपि नोच्चारणीयम् ।

मंमघातक वचन का उच्चारण भी करना नही चाहिए ।

३ सदा मूकत्वमासेव्य, वाच्यमानेऽन्यमर्मणि ।

—विवेकविलास

किसी की मर्म की बात कहते समय मौन का सहारा लेना चाहिए ।

४ पररहस्यं नैव श्रोतव्यम् ।

—कौटिलीय-अर्थशास्त्र

दूसरो की गुप्त बात नही सुननी चाहिए ।

५ श्रुत्वा स्वमर्माणि, वाधिर्यं कार्यमुत्तमैः ।

—विवेकविलास

अपने मर्म की बाते सुनकर उत्तमपुरुषो को बहरा बन जाना चाहिए ।

६ दूसरे की मूर्खता पर किए गए व्यग पर हम हँसते है, पर अपने ऊपर किए गए व्यग पर हम रोना भूल जाते हैं ।

—म० नेकर

७ व्यंगोक्तियो के तीर से बचने के लिए रसिकस्वभाव सर्वोत्तम ढाल है ।

—सी० सिमन्स

८ स्पष्टवादी बनने के बहाने किसी का दिल मत दुखाओ ।

वाद

१ किसी तथ्य या तत्त्व के निर्णय के लिए होनेवाला तर्क 'वाद' कहलाता है।

—नालन्दा-विशालशब्दसागर

२ वादे-वादे जायते तत्त्वबोध.।

जिज्ञासाभाव से किए गए वाद मे तत्त्वबोध की प्राप्ति होती है।

३ यथार्थवादोविदुपा श्रेयस्कारो यदि न गुणप्रद्वेषी राजा।

—नीतिवाक्यामृत ५।१८

विद्वानो को यथार्थ वाद करना तभी अच्छा है, यदि राजा गुणो पर ईर्ष्या करनेवाला न हो।

४ राग-दोसकरो वादो।

—आचाराग-चूर्णि १।७।१

प्रत्येक वाद राग-द्वेष की वृद्धि करनेवाला है।

५ वादे-वादे वर्धते वैरवह्नि.।

पक्षपातपूर्ण वाद से वैररूप अग्नि भडक उठती है।

वाद के प्रकार

१ शुष्कवादो विवादश्च, धर्मवादस्तथापर· ।
कीर्तितस्त्रिविधोवाद, इत्येवं तत्त्वदर्शिभि· ।।

—अष्टकप्रकरण-वादाष्टक

तत्त्वदर्शियो ने तीन प्रकार का वाद कहा है—शुष्कवाद, विवाद और धर्मवाद ।

२ चार वाद—१ क्रियावाद, २ अक्रियावाद, ३ अज्ञानवाद, ४ विनयवाद ।

३ पाँच वाद—१ कालवाद, २ स्वभाववाद (प्रकृतिवाद), ३ उद्यमवाद, ४ कर्मवाद, ५ नियतिवाद ।

४ पाँच वाद—१ समाजवाद, २ साम्यवाद, ३ फासिस्टवाद, ४ नात्सीवाद, ५ पूँजीवाद ।

(१) समाजवाद—दो गाय हो तो एक पडोसी को देना ।
(२) साम्यवाद—दोनो गाय सरकार को दे दो, उनका थोडा-सा दूध तुम्हे मिल जाया करेगा ।[1]

---

१ कार्लमार्क्स के अनुसार साम्यवाद के समस्त सिद्धान्तो को एक वाक्य मे व्यक्त किया जा सकता है कि समस्त व्यक्तिगत-सम्पत्ति का अवमूल्यन कर दो । लुई ब्लेक के मत मे प्रत्येक व्यक्ति को योग्यतानुसार और प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकतानुसार मिलना साम्यवाद है ।

◆ साम्यवादी समाजवादी ही है, किन्तु भयानक-शीघ्रता मे ।

—जी. गफ

(३) फासिस्टवाद—गाय पास रखो, दूध सरकार को दे दो, उसमे थोडा तुम्हें वेच दिया जायेगा।

(४) नात्सीवाद—तुम्हारी गाय गोली मारकर सरकार ले लेगी।

(५) पूँजीवाद—दो गाय हो तो एक को वेच कर सांड खरीद लो।

—'न्यूयार्क ट्रिव्यून हेराल्ड' से

छः प्रकार के वाद—

(१) रहस्यवाद—आत्मा को परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करने की (उससे मिलने की) तथा तादात्म्यरूप से परिणत होने की साहित्यिक प्रवृत्ति।

(२) छायावाद—आत्मा की प्रवृत्ति के साथ सम्बन्ध - स्थापन करने की प्रवृत्ति।

(३) प्रगतिवाद—सामाजिक दृष्टिकोण को प्रमुखता देनेवाला वाद। (यह मार्क्स के विचारो को महत्त्व देता है)।

(४) प्रयोगवाद—नये-नये प्रमाणो को महत्त्व देनेवाला वाद।

(५) राष्ट्रवाद—राष्ट्र के हितो को सर्वाधिक प्रधानता देनेवाला वाद।

(६) हालावाद—खाओ, पियो और मौज करो। (Eat, Drink and Be merry) जिसे सस्कृत मे—पिब, खाद च वामलोचने (सर्वदर्शन समुच्चय मे (चार्वाक)) कहा गया है।

विवाद

१ विरुद्ध-परस्पर-कक्षीकृत - पक्षाधिक्षेप - दक्षो वादो-वचनोपन्यासो विवाद.।

—स्याद्वादमजरी-श्लोक ११

परस्पर ग्रहण किए हुए पक्ष के विरुद्ध अधिक्षेप करनेवाली वचनरचना का नाम 'विवाद' है।

२ लब्धिख्यात्यर्थिना तु स्याद्, दु:स्थितेनाऽमहात्मना।
छलजातिप्रधानो य, स विवाद इति स्मृत ॥

—हरिभद्रसूरि

धन आदि की उपलब्धि या प्रसिद्धि के इच्छुक नीच एव तुच्छमतियो द्वारा जो छल एव जाति की मुख्यता से कहा जाता है, उसे 'विवाद' कहते हैं।

३ एक सुन्दर मुख से प्रस्तुत विवाद भी सुन्दर लगता है।

—एडीसन

४ उपालम्भ का तीखापन कोई विवाद नही है।

—र्‌यूफस कोयेट

५ विवाद अनेक कर सकते हैं, पर वार्तालाप नही।

—एलकाट

६ विरोधियो के सम्मुख मैं विवाद करने को तो बाध्य हूं, पर उन्हें समझाने के लिए नहीं।

—डिजराइली

७ छव्विहे विवाए पन्नत्ते, तं जहा—
ओसक्कइत्ता, उस्सक्कइत्ता, अणुलोमइत्ता, पडिलोमइत्ता, भइत्ता, भलेइत्ता।

—स्थानाग ६।५११

छ प्रकार से—विवाद किया जाता है। यथा—१—पीछे हटकर, २—उत्सुक होकर, ३—अध्यक्ष या प्रतिवादी को अनुकूल बनाकर, ४—अपना जोर होने से उन्हे प्रतिकूल बनाकर, ५—अध्यक्ष की भक्ति करके, ६—अध्यक्ष को अपना पक्षपाती बनाकर।

८ विवाद का कारण एकान्तवाद—एक भक्त 'सोऽहं सोऽहं' का जाप कर रहा था। भक्तिमार्गी विद्वान् ने उसे रोकते हुए कहा—सोऽहं-सोऽहं कहने से अहभाव पैदा होता है, अत ऐसा कहो 'दासोऽहं-दासोऽहं।' विचारा भक्त 'दासोऽहं' का जाप करने लगा। इतने में वेदान्ती विद्वान् ने टोकते हुए उसे सदासोऽहं-सदासोऽहं कहने का आदेश दे दिया। भक्त ज्यो ही 'सदासोऽहं' कहने लगा, एक भक्तिमार्गी ने पुन आपत्ति उठायी एव दासदासोऽहं-दासदासोऽहं का भजन करने के लिए कहा। यो मताग्रही विद्वान् आते गए और भक्त का जाप बदलते गए। (अनेकान्तवाद को न समझने के कारण ही एक-दूसरे की काट-छाट की जाती है अन्यथा उपयोगपूर्वक किसी भी पद का जाप किया जा सकता है)।

●

३१ विवाद-निषेध

१ अलं विवाएण णे कतमुहेर्हि ।

—निशीथ-भाष्य २६१३

कृतमुख (विद्वान्) के साथ हमे विवाद नही करना चाहिए ।

२ ऋत्विक्-पुरोहिताचार्यै-र्मातुलातिथि-संश्रितैः ।
वाल-वृद्धातुरैर्वैद्य-ज्ञाति-सबन्धि-वान्धवै ॥ १७९ ॥
माता-पिताभ्या जामीभि-र्भ्रात्रा पुत्रेण भार्यया ।
दुहित्रा दासवर्गेण, विवाद नो समाचरेत् ॥ १८१ ॥

—मनुस्मृति ४

पुरोहित, आचार्य, मामा, अतिथि, अपना आश्रित, वालक, वूढा, रोगी, वैद्य, ज्ञाति (पितृपक्षीय स्वजन) । सम्वन्धी (दामाद, साला आदि। वान्धव (मातृपक्षीय स्वजन) । माता-पिता,वहिन-भाई, पुत्र, अपनी स्त्री, पुत्री और दासवर्ग इन सव के साथ विवाद नही करना चाहिए ।

३ भोजन के समय कोई विवाद मत करो , क्योकि जो विल्कुल भूखा नही, उसके विवाद सवल होते है ।

- ह्वेटले

४ नाऽवाजिना वाजिनां हासयन्ति, न गर्द पुरो अश्वान्नयन्ति ।

—ऋग्वेद ३।५३।२३

घोडे के साथ घोडे की ही प्रतियोगिता कराई जाती है, घोडे से भिन्न की नही । गदहे को घोडे के आगे स्थान नही दिया जाता । तत्त्व यह है कि अपने से नीचे व्यक्ति के साथ विवाद नही किया जाता ।

५ वादो नावलम्व्यः ।

—नारदभक्तिसूत्र ७४

भगवद्भक्त को कभी वाद (विवाद) नही करना चाहिए ।

३२ वाचालता

१ बहुयं मा य आलवे।

—उत्तराध्ययन १।१०

बहुत नही बोलना चाहिए।

२ मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमथू।

—स्थानाग ६।५२६

वाचालता सत्यवचन का विघात करनेवाली है।

३ अतिवादं न प्रवदेन्न वादयेत्।

—विदुरनीति ४।११

अधिक नही बोलना चाहिए और न दूसरे से बुलवाना चाहिए।

४ गरजना बन्द करो, चमकना शुरू करो।

५ दो देखो, दो सुनो और एक बोलो।

६ कहे एक इन्सान, जब सुनले दो।
के, उसने जबाँ एक दी, कान दो॥

—दर्द गैर

७ जयं चिट्ठे मियं भासे।

—दशवैकालिक ८।१९

यतनापूर्वक बैठना चाहिए और परिमित बोलना चाहिए।

८ स्पीक लेस देन दाउ नो वेस्ट।

—शेक्सपियर

जानते हो, उससे कम बोलो।

९ जो अधिक जानता है, वह कम बोलता है और जो कम जानता है, वह अधिक बोलता है।

१० शुक-पिक लगे सवाद, भल थोडो ही भाखणो।
वृथा करे बकवाद, भेक लवै ज्यूं भेरिया।

—सोरठा-संग्रह

० कभी-कभी मेढक भी बैलो से अधिक शोर मचा सकते हैं। पर न तो वे हल चला सकते हैं और न ही उनके खाल की जूतिया बन सकती हैं।

११ पावस देख रहीम मन, कोयल साधा मौन।
अब दादुर वक्ता हुए, हमे पूछिहै कौन?

—रहीम

१२ मुखरताऽवसरे हि विराजते।

—किरातार्जुनीय

मौके पर वाचालता भी अच्छी लगती है।

३२ वाचाल

१ अधिक एवं गर्हित वचन बोलनेवाला वाचाल कहलाता है।

—अभिधानचिंतामणि ३।११

२ बहुवक्ता भवति धूर्तजनः।

—कौटलीय-अर्थशास्त्र

अधिक बोलनेवाला प्राय धूर्त होता है।

३ मुहरी निक्कसिज्जइ।

—उत्तराध्ययन १।४

वाचाल व्यक्ति (सड़े कानोंवाली कुतिया की भांति) दुर-दुर करके निकाल दिया जाता है।

४ बहुवचनमल्पसारं, यः कथयति विप्रलापी सः।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

जिसके भाषण मे शब्द अधिक हों एवं सार कम हो, वह वक्ता विप्रलापी कहलाता है।

५ Empty vessels noise much.

एम्पटी वैसल्ज नोयज मच।

—अंग्रेजी कहावत

थोथा चणा, बाजे घणा।

६ फुंकारते हैं, वे डसते नहीं,

गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

—टहूँ गोर

७ Barking dogs seldom bite.

बार्किंग डोग्ज सैल्डम बाइट।

— अंग्रेजी कहावत

गरजणा बादल बरसणा नही।

८ थूक उडाडै ते थोथा ने बहु बोलै ते वायडा।

—गुजराती कहावत

९ महात्मा साक्रेटीस के पास एक वाचालयुवक भाषण की कला सीखने आया। उन्होंने दूनी फीस मागी और कहा—चुप रहना एव भाषण करना तुझे दोनो सिखाने पड़ेंगे।

१० स्वतन्त्रता के दिन एक अग्रेज ने कहा—भारत को अब जीभ छोटी बना लेनी चाहिए, क्योकि भारत बोलता ज्यादा है और करता कम है।

११ वाचाल के विषय मे अन्योक्तिया—

(क) बादल या तो बरस जा, या अब हो जा साफ।
थोथी तेरी गर्जना, करती है संताप॥
जब तू थोड़ा गरजता, ज्यादा था सम्मान।
अब झूठी बकवास से, घट गई तेरी शान॥

(ख) दुकानदार तू व्यर्थ की, बना रहा है बात।
पाव हाथ देता नही, नाप रहा सौ हाथ॥

(ग) रे वक्ता, ज्यादा न कर, अब मुख से बकवाद।
(तू) दिखलाता सोना हमे, अन्दर तेरे खाद॥

—दोहा-संदोह

काग नो बाघ करे, रज नो गज करे, बात नो बतेसर करे ने राममाथी रामकहानी बनावे ।

शक नो राजा करे, कीडी नो कुंजर करे ने पप्पा माथी पीर-महम्मद करे ।

—गुजराती कहावतें

२ लेना-देना कुछ नही, बातो का जमा खर्च ।

हमारे बाबा ने घी खाया था, हमारे हाथ सूंघो ।

—हिन्दी कहावतें

३ आड नही है ईश नही है, तीन नही है पाया ।
विचलो झामर-झोलो नही है, पिलंग लोरे भाया ।

—राजस्थानी-पद्य

४ गप्पी का पूत गपाकडा ।

—राजस्थानी कहावत

५ एक धणियाणी ने प्रण कर रखा था कि जो मुझे अनदेखी—अनसुनी बात सुनायेगा, उसे मैं पांचों पकवान बनाकर खिलाऊंगी । पकवान के भूखे अनेक मनुष्य आ-आकर उसे अनोखी-अनोखी बातें सुनाते, किन्तु चालाक धणियाणी—यह कहकर उन्हें बिना खिलाये ही निकाल देती कि यह बात तो मेरी देखी एवं सुनी हुई है । एक दिन एक पक्का पाहुना आया और निम्नलिखित पद्य सुनाकर पकवान खा गया । वे पद्य इस प्रकार हैं :—

कुत्तो बैठो हाट क, तोले ताकडी,
आके लागा अंब, फरासा काकडी।
भैस चढी जु फरास, खाजापीर मनाय के,
गधे मारी चीस क, हाथी ढाय के।
कीडी कियो सिणगार क, हाथी वरण कूँ,
ऊट फिरे सुविचाल क, सल्ला करण कूं।
कादे लागी लाय, बुझावे तुणतुणी,
सुण खत्राणी ! बात, अदेखी-अणसुणी।

—भाषाश्लोकसागर

६ राजा के सामने एक दूती की गप्प—

दूति कहे सुन हो मनमोहन ! पॉख बिना मैं पखेरु उडाऊ,
काग को हंस-कसुवा की केसर, ऊँट को भार पपैये लदाऊँ।
पानी मे आग पहाड़ मे मेढक, रेत मे नाव तिराय दिखाऊँ,
जो मनमोहन ! वाद वदे मोहि, सोर के गंज मे आग छिपाऊँ ॥

—भाषाश्लोकसागर

गप्पी लड़का—

एक लडका वहुत गप्पी था। वाप ने उसे धमकाया और कहा चल निकल जा घर से ! गप्प छोडकर ही घर मे पैर रखना। लडका चला गया और दो-तीन घटे वाद वापस आया। वाप ने पूछा—कहा-कहा भटक कर आया है ? गप्पी ने जवाव दिया कि गप्प छोडने गया था, परन्तु ज्योंही मैंने उसे छोडा, वह हाथी वनकर मेरे पीछे हो गई। मैं दौडकर एक वृक्ष पर चढा तो वह भी मेरे पीछे-पीछे चढ़ गई। मैंने वृक्ष से छलाग लगाई तो वह भी कूद गई। लेकिन कूदते समय उसकी पूछ वृक्ष की डाली मे अटक गई और मैं भागकर अपने घर आ गया। वाप ने कहा—गप्प छोडने गया था या लेने ? तू तो दूनी गप्प लेकर आया है, जो कह रहा है कि हाथी तो निकल गया पर पूछ अटक गई।

तवा और चूल्हा—

तवो कहै—हूँ सोनै रो हो, जद चूल्हो बोल्यो—क्यूँ भूठ बोलै ! चढतो तो म्हारै ही ऊपर हो !

—राजस्थानी रूपक

शीतली के व्याह के चावल—

भक्तो के पूछने पर योगी ने बतलाया भाई ! उम्र कितनी है ? यह तो कुछ पता नही, लेकिन शीतली (सीताजी) के व्याह के चावल खाए हुए तो याद है। एक चालाक भक्त ने कहा—बाबाजी ! क्यो गप्प मार रहे हो ! वहाँ परोसनेवाला तो मैं ही था। (बाबा चुप)।

३५

हाँ में हाँ मिलानेवाले

१ लपसी पड्या तो कहे, देव ने नमस्कार कर्या।
* मोजा आव्या तो कहे जाडा थया धप्पो वाग्यो तो कहे धूल उडी गई।
* बावा ! गायो बहु थई, तो कहे दूध पीवीशुं ।
बावा ! गायो मरी गई तो कहे छाणा-मूतरनी गंध गई।
* राड्या एटले हाथ-पगे हलक थया ने धणी ना ओसियाला मट्या।

—गुजराती कहावत

३ नाक कट्टा तो कट्टा पर घी तो चट्टा।

—हिन्दी कहावत

४ हांजीडों का मत :—

(क) जेने आगल रहता हइए,
तेने अण गमतुं नवि कहिए।
कहे बिलाडीए हाथी मार्यो,
तो पण शुं ? जी हां कह दइए।

—गुजराती-पद्य

(ख) जेने गाडे बैसीए, तेना गीत गाइए।
* जेनो खाइए कोलीओ, तेनो वालीए घोलीओ।

—गुजराती कहावतें

(ग) Tw sy deto tw oark.
टु से डिटो टु वार्क।

—अंग्रेजी कहावत

हा में हां मिलाना।

(घ) दम बोघा दम बोघली, दम बोघन का बच्चा।
गुरुजी तो गप्पा मारें, चेला कहै सब सच्चा॥

४ हाजीडों की तस्वीर—

होते हाजीडे जग मे बडे ही लबार।[1]
हित-अहित का न करते जरा भी विचार ॥ ध्रुवपद ॥
सेठजी काम तुमने गजब कर दिया,
न्यात अच्छी जिमाकर सुयश वर लिया,
इस जमाने मे भारी लगाई बहार। होते हाजीडे० ॥१॥
वर्ष चालीस के भी कुंवारे है आज,
सातवें वर्ष मे ही सगाई का साज।
करते है आपसे ही धनी शानदार। होते हाजीडे० ॥२॥
भाई बदमाश था दावा अच्छा किया,
और लोगो को भी पथ दिखला दिया।
आप जैसे ही करते है ऐसा सुधार। होते हाजीडे० ॥३॥
जो न लडके पटायें—यह अच्छी करी,
क्या है करवानी तुमको कहीं नौकरी।
पैसेवालों को कन्याएँ हाजिर हजार। होते हाजीडे० ॥४॥
न्यात नाराज थी पर न परवाह की,
करके शादी पचासी मे वाह-वाह की।
धन गया तन भी हो जाएगा अब तैयार। होते हाजीडे० ॥५॥
मित्र हाजीडे होते है ऐसे जहाँ,
हर किसी बात मे मुख से कहते जी हाँ।
[illegible] बनते रहो [illegible]। होते हाजीडे० ॥६॥

—उपदेशसुमनमाला

१ अर्थ—[illegible]

दूसरा कोष्ठक

वक्ता

१

१ वक्ता दशसहस्रेषु ।

—व्यासस्मृति ४।५

प्रति दससहस्र मे एक मनुष्य वक्ता होता है ।

२ वक्तुर्गुणगौरवाद् वचनगौरवम् ।

—नीतिवाक्यामृत १५।

वक्ता के गुण-गौरव से ही उसके वचन का गौरव होता है ।

३ अल्पाक्षर-रमणीयं, यः कथयति स खलु निश्चित वाग्मी ।

—सुभाषितरत्नखण्डमञ्ज

थोडे अक्षरो मे जो अच्छी बात कहता है, वास्तव मे वही कुशलवक्ता है

४ वक्ता अपने गहराई के अभाव को लम्बाई मे पूर्ण करता है ।

—मान्टेस

५ वक्ता के १४ गुण—

वाग्मी व्याससमः सवित् प्रियकथः प्रस्तावविित् सत्यवाक्,
सन्देहच्छिदनेकशास्त्रकुशलो नाऽऽख्याति विक्षेपकम् ।
अव्यङ्गो जनरञ्जनो जितसभो नाहंकृतिर्धार्मिकः,
संतोषी च चतुर्दशोत्तमगुणा वक्तुः प्रणीता इमे ।

—प्राचीनसग्र

(१) वेद व्यास के समान वक्ता, (२) ज्ञानी, (३) प्रिय कथा करनेवा
(४) अवसरज्ञ, (५) स्वल्पभाषी, (६) सन्देह को छेदनेवाला, (७) अ

शास्त्रों का ज्ञाता, (८) विक्षेपकारी बात नहीं कहनेवाला, (९) व्यङ्ग नहीं कसनेवाला, (१०) जनता को प्रसन्न करनेवाला, (११) सभा को जीतनेवाला, (१२) निरभिमानी, (१३) धार्मिक, (१४) सतोषी। उत्तम वक्ता के ये १४ गुण माने गए हैं।

६ तद्वक्ता सदसि ब्रवीतु वचनं यच्छृण्वतां चेतसः,
प्रोल्लासं रसपूरणं श्रवणयोरक्ष्णोर्विकासश्रियम्।
क्षुन्निद्रा-श्रम-दुःख-कालगनिह्नुत् कार्यान्तरविस्मृतिः,
प्रोत्कण्ठामनिशं श्रुतौ वितनुते शोकं विरामादपि॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ८९

जिसकी वाणी सुनकर श्रोताओं के चित्त प्रोल्लासयुक्त हों, कान वाणी रस से पूर्ण हों, आंखें आश्चर्य से विकसित हों, उन्हें भूख, निद्रा, श्रम, दुःख और समय का भान न रहे, दूसरे काम विस्मृत हो जाएं, वे आगे की बात सुनने के लिए उत्सुक हों और भाषण की समाप्ति पर उन्हें खेद हो। ऐसे प्रभावशाली वक्ता को सभा में बोलना चाहिए।

वक्ता बनने के उपाय

२

१ वक्ता बनने के दो उपाय है—
उत्कट इच्छा और अभ्यास ।

२ अभ्यास एव आत्मविश्वास के वल पर कौन व्यक्ति है, जो एक सफल वक्ता नही वन सकता ?

—हेनरी वार्डवीचर

३ यदि तुम वाक्यशक्ति को प्रभावशाली, आकर्षक और मधुर बनाने के इच्छुक हो तो सगीत का अभ्यास करो, कोमल कविताए और उत्तमोत्तम नाटक पढो। तुम्हारी जवान साफ, दिल को गुदगुदानेवाली, तथा कर्णप्रिय वन जाएगी। गुनगुनाकर न वोलो। काना-फूसी, फुसफुसाहट एव रुक-रुक कर वोलने की आदत बुरी है। यदि मीठी जवान मे ज्यादा आकर्षण उत्पन्न करना हो तो मुस्कराने और दिल खोलकर हँसने का अभ्यास करो। मुस्कराहट मनुष्य के दिल पर गहरा असर डालती है। वोलते समय जरा मुस्कुरा दो। तुम्हे देखकर श्रोता मन्त्रमुग्ध से हो जाएगे।

—'आकर्षणशक्ति' पुस्तक से

३ वक्ता के ध्यान देने योग्य बातें

१ वक्ता को अपने दिमाग से बोलने का अभ्यासी तथा सभा के अनुकूल हेतु देनेवाला होना चाहिए। इसे कभी प्रश्नोत्तररूप में, कभी किसी रूपक के सहारे से, कभी धर्म की दुहाई देकर, कभी विरोधी के स्वर में स्वर मिलाकर एवं कभी-कभी हास्यपूर्ण ढंग से व्याख्यान करना चाहिए।

२ वक्ता की भाषा संयत होनी चाहिए। जैसे—रांड को विधवा, अन्धे को सूरदास, जाट को चौधरी, नाई को खवासजी, आदि-आदि शब्दों द्वारा बोलना चाहिए। अग्राम्यत्व तुच्छ भाषा न बोलना भगवान का अभिप्राय माना गया है। भगवती २।५ में देवता को नोसंयती कहना—ऐसे कहा है।

३ राजा के पूछने पर एक ज्योतिषी ने कहा—आपके आगे सारा परिवार मर जाएगा। दूसरे ने कहा—आपकी आयु सबसे लम्बी है। राजा पहले से असंतुष्ट और दूसरे से संतुष्ट हुआ।

४ अमेरिका में एक वक्ता ने भाषण करते समय कहा—यहाँ २० प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं एवं दूसरे वक्ता ने कहा—यहाँ ८० प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। पहले को बीच में ही बिठा दिया गया तथा दूसरे का भाषण प्रेमपूर्वक सुना गया।

●

४ वक्ताओं की तरकीबें

१ वक्ताजन इन तरकीवो से, भाषण मे रस वरसाते है ।[1]
भाषण मे रस वरसाते हैं, जनता मे रोव जमाते है ।। ध्रुवपद।।
जो कुछ भी कहना होता है, पहले ही जवानी कर लेते ।
या करके नोट एक कागज पर, फिर चल व्याख्यान मे आते है ।।१।।
जिस मजहव की होती है सभा, उस ही मजहव के हेतु लगा ।
अपने मजहव की खूवी का, जनता पर रग चढाते हैं ।।२।।
जिस किसी विषय का प्रतिपादन, झुक जाते हैं करने के लिए ।
उस ही के अनुगत हेत्वादि, ला-ला के अजव मिलाते है ।।३।।
चालू व्याख्यान के अन्दर भी,यदि व्यक्ति नया कोई आ जाता ।
उसके अनुकूल तुरत अपने भाषण का भाव घुमाते हैं ।।४।।
वनते हैं अपने मजहव के, कर कोशिश पूरे ही ज्ञानी ।
फिर चुंवक रूप अपरमत के, सिद्धान्त ध्यान मे लाते हैं ।।५।।
आवाज बुलन्द न हो गर्चे, जंगल मे जाके अकेले ही ।
उच्चस्वर भाषण करते है, अथवा ऊँचेस्वर गाते हैं ।।६।।
नामी-नामी वक्ताओ के, व्याख्यान ध्यान से सुनते है ।
या पढ के अच्छे ग्रन्थो को, भाषण की शक्ति वढाते है ।।७।।
निज आसन ऊँचा रखते है जिससे सव परिषद् दीख पडे ।
वर्णन के अनुगत कर-मुख का, कुछ भाव अवश्य दिखाते है ।।८।।
नित नए ज्ञान के संग्रह का, अभ्यास सदा रखते चालू ।
'धनमुनि' कहता ऐसे वक्ता, दुनिया मे सुयश कमाते है ।।९।।

—उपदेशसुमनमाला

---

१ तर्ज—चान्दार रुपइया चादी का ...

५ प्रभावशाली वक्ता

१ स्वामी विवेकानन्द—

अमेरिका (शिकागो), ११ सितम्बर १८९३, विश्वधर्मपरिषद् में स्वामी विवेकानन्द ने भाषण के प्रारम्भ में "सिस्टर्स एण्ड ब्रदर्स ऑफ अमरीका" इतने कहते ही आश्चर्यचकित श्रोताओं ने तालियां बजाई, कारण वहां "लेडीज एण्ड जेन्टिलमेन" कहने का रिवाज था। स्वामीजी के वहां कई व्याख्यान हुए। आपसी साम्प्रदायिक मतभेद पर उन्होंने कुएं और समुद्र के मेढ़कों की कहानी सुनाई, श्रोताओं पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

२ स्वामी रामतीर्थ—उन्होंने ने एक बार न्यूयार्क में भाषण करते हुए कहा कि श्रीकृष्ण की बांसुरी से आकृष्ट होकर गोपियां उनके पीछे दौड़ा करती थी। लोगों ने इस बात का सबूत मांगा। एकदिन वे भाषण करते समय खिड़की से कूद कर दौड़ने लगे। श्रोतागण भी भान भूल कर उनके पीछे-पीछे भाग पड़ा। कुछ दूर जाकर वे ठहरे और बोले—देखिए! मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के पीछे भी आप लोग आकृष्ट होकर दौड़ पड़े तो फिर कृष्ण के पीछे गोपियां दौड़ती थी—इस बात में आश्चर्य ही क्या है?

३ स्वामीजी एक बार जहाज से अमेरिका जा रहे थे। जहाज में बैठे हुए यात्री ने पूछा—अमेरिका में आपके मित्र या परिचित कौन है? स्वामी जी ने कहा—आप ही हैं। यात्री विस्मित होकर पूछने लगा—आपके पास सामान क्या है? उत्तर मिला—स्वाभिमान और कुछ नहीं है। यात्री अत्यन्त प्रभावित हुआ और उन्हें अपने साथ ले गया।

३ **श्री यशोविजयजी**—इनका जन्म सवत् १६६५ एव स्वर्गवास १७४५ मे हुआ। ये न्याय के अद्भुत वेत्ता थे और विलक्षण वक्ता थे। इन्होंने विक्रम सवत् १७२६ को खभात मे जैनेतर विद्वानो के निवेदन पर सस्कृत भाषा मे एक ऐसा व्याख्यान किया, जिसमे न तो कही अनुस्वार आने दिया और न ही सयुक्त अक्षर। सवत् १७३० को जामनगर मे चारमास तक "**सजोगाविप्पमुक्कस्स**" उत्तराध्ययन सूत्र के इस एक पद्य पर ही व्याख्यान करते रहे।

बुद्धि इतनी तेज थी कि एकवार काशी मे इन्होने ७०० शार्दूलविक्रीडित छन्द एक ही दिन मे याद कर डाले। ये सहस्रावधानी भी थे। इन्होंने स्मृति व गणितप्रधान एक हजार प्रश्नो का एक साथ समाधान किया था। बुद्धि एव स्मृति से प्रभावित होकर काशी के विद्वानो ने इनको न्याय-विशारद के पद से विभूषित किया। इन्होने लगभग १०० ग्रन्थों की रचना की और लघुहरिभद्रसूरि कहलाये।

१७४० मे पाटण चौमासा हुआ। वहाँ '**सतोषवाई**' की प्रेरणा से ये **अध्यात्मयोगी श्री आनदघनजी** से मिले। उनके सम्मुख दशवैकालिक सूत्र की प्रथम गाथा "**धम्मो मगलमुक्किट्ठ**" के ५० अर्थ करके अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन किया।

अध्यात्मयोगी ने पूर्वोक्त ५० अर्थों के अतिरिक्त अनेक विचित्र एव चमत्कारी अर्थ करके इनका अह दूर किया। फिर इनके अत्याग्रह पर इन्हें दशवैकालिक सूत्र पढाया। उसमे सारा भगवती सूत्र पढा दिया (ये वस्तुत भगवती सूत्र ही पढना चाहते थे)।

० **महोपाध्याय समयसुन्दरजी**—

—सुनने मे आया है कि विक्रम सवत १६४६ मे अकबर बादशाह ने कश्मीर-विजय के लिये प्रस्थान करते समय एक विद्वद्-गोष्ठी की। बडे-बडे विद्वान् अपने नवनिर्मित ग्रन्थ लेकर आये। **समयसुन्दर जी** ने सभा मे स्व-रचित आठ अक्षरो का एक ग्रन्थ रखा—"**राजा नो ददते सौख्यम्**"

इनका साधारण अर्थ यह होता है कि राजा हमें सुख देते हैं। लेकिन ग्रन्थकर्ता ने जब इस ग्रन्थ के आठ लाख अर्थ करके दिखलाये, तब सारा विद्वत्समाज चकित होकर समयसुन्दरजी की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ एवं काश्मीर विजय के बाद उसने अनेक जैनाचार्यों का सम्मान किया।

—मुनिश्री जसरीमलजी के संग्रह से

८ भारत का सबसे छोटा वक्ता—

—मध्यप्रदेश के जावरानगर का छह्वर्षीय बालक विष्णुप्रसाद अरोड़ा सम्भवत भारत के इतिहास में सबसे छोटा वक्ता है, जिसने ढाई वर्ष की आयु से गीता, रामायण आदि धार्मिक ग्रन्थों पर धाराप्रवाह प्रवचन देना प्रारम्भ कर दिया था। इस अल्पायु में ही यह बालक उत्तरप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के अनेक नगरों में प्रवचन देकर हजारों लोगों को मन्त्रमुग्ध कर चुका है। उज्जैन के कुम्भ-पर्व पर प्रवचनों से प्रभावित होकर, सन्त-महात्माओं ने इस बालक को 'बालयोगी' की उपाधि प्रदान की।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, ८ अगस्त १९६१

(मुरलीप्रसाद अरोड़ा)

६

लम्बा भाषण करनेवाले वक्ता

१ वचन-प्रतियोगिता मे एक स्त्री ५३ घटा ४३ मिनिट, दूसरी ६६ घटा एव तीसरी ६२ घटा बोली। बोलते-बोलते एक की जीभ अकडी, दूसरी गिर गई और तीसरी चुप हुई।

२ आस्ट्रेलिया के 'श्री लेस्टर मेक ब्राईड" ने लगातार ११३ घटा बोलने का नया विश्वरिकार्ड कायम किया। वे अमरीका के श्री क्लाइव जार्ज से एक घटा एक मिनिट अधिक बोले।

डयुनेडिन (न्यूजीलैड), १ जनवरी
—हिन्दुस्तान, ४ जनवरी १९६६

३ फ्रास के एटर्नी "लुई बारनार्ड" के भाषण का रिकार्ड है—५ दिन तथा ५ रात्रि। एक बार जनरल "जिम टैम" नामक एक व्यक्ति को राजद्रोह के अपराध मे प्राणदड हुआ। उसकी अपील फ्रास के राजा से की गई। बारनार्ड ने जजो से कहा कि जब तक अपील का फैसला न हो जाये। फासी स्थगित रखी जाए। जजो ने इस बात को नही माना, पर उन्होंने बारनार्ड से पूरे मामले पर एक वक्तव्य सुनना स्वीकार कर लिया। बारनार्ड को अच्छा अवसर मिल गया। वे १२० घटो तक जजो के सामने बयान देते रहे। जज परेशान हो गये। किसी को नीद आ गई, कुछ अन्यमनस्क हो गए। बारनार्ड यह जानते थे कि यदि वे अपना बयान देना रोक देंगे तो इसी बीच जज लोग अभियुक्त को फासी के फदे पर लटका देने की व्यवस्था कर देंगे। इसीकारण से लम्बे समय तक अपना भाषण देते गये। सौभाग्यवश, अभियुक्त की पत्नी राजा के पास से अपने

ति की मुक्ति का आदेश लेकर लौट आई। अभियुक्त को छोड़ दिया
या।

र दुःख की बात यह हुई कि जजों ने बारनार्ड को न छोड़ा। उनके विरु-
ध यह अभियोग लगाया गया कि उसने चालाकी करके दीर्घकाल तक
जों के सामने भाषण देकर उनको परेशान किया, भ्रम में डाला तथा
न्हें ठगा। इस कारण जजों ने इसे कारावास में डाल देने का आदेश
दया।

श्रीमती एलेन कापरटा ने सन् १९५८ में ९८ घंटों तक लगातार बोल-
र बहुतों को विस्मित कर दिया। पर सन १९६७ में क्वीन्सलैंड के
विक्टर विलियम्स ने इन्हें पराजित कर दिया। उन्होंने १३८ घंटों तक
लगातार बोलकर नया रिकार्ड स्थापित किया।

—हिन्दुस्तान, २० फरवरी १९७२

ज़ोर से चिल्लानेवाला—दुनिया में सर्वाधिक तेज आवाज से चिल्लाने-
वाला आदमी "फ्रेडयट जेन" है। इसकी आवाज तीन मील तक साफ
सुनाई देती है।

—नवभारत, १८ जून १९५५

७ यश के भूखे वक्ता

रंग व्याख्यान मे कैसा आया रे, सच्ची कहो ?[1]
जोर मैंने तो काफी लगाया रे, सच्ची कहो ? ध्रुवपद ॥

व्याख्यान की बातें कितनी अजव थी,
रंगीली तर्जे भी कितनी गजव थी।
भाव भी मैंने अद्भुत दिखाया रे, सच्ची कहो ? रंग ॥१॥

प्रायेण हेतु नए ही लगाये,
दृष्टात भी ला नए ही झुकाए।
राग भी ढव नए ही से गाया रे, सच्ची कहो ? रग ॥२॥

नही कुछ भी मेरा सुगुरु की दया है,
लेकिन जहा मैंने भाषण किया है।
आज तक तो सुयश ही कमाया रे, सच्ची कहो ? रंग ॥३॥

व्याख्यान काफी पडे है पुराने,
लेकिन न उथले कभी मैंने पाने,
जव-कभी रच नया ही सुनाया रे, सच्ची कहो ? रग ॥४॥

व्याख्यान मे आज कितने थे भाई,
कितनी थी वहनें नजर ना टिकाई।
तुमने अंदाज क्या कुछ लगाया रे, सच्ची कहो ? रंग ॥५॥

---

१ तर्ज – मैं तो दिल्ली मे दुल्हन लाया रे, ऐ वावूजी !

निद्रा तो शायद किसी ने हो ली हो,
वातें भी शायद किसी ने ही की हो।
चूं के चा! मैं तो सुनने न पाया रे, सच्ची कहो ? रंग····॥६॥

वक्ता कई यों बनाते हैं बातें,
हाजोडे श्रोता जी-हां-जी-हां-गाते।
चित्र छोटा सा 'धन' ने बनाया रे, सच्ची कहो ? रंग····॥७॥

—उपदेशसुमनमाला

मूर्ख वक्ता

१ विना वुद्धि का वक्ता—विना लगाम के घोडे की तरह होता है।

—थ्यूफ्रास्टर

२ खडी मोटर की पो-पो, हलवाई, दरजी, सुनार व घी के चम्मचतुल्य वक्ता निकम्मा होता है।

३ गिर्जे की घटी, थभा, वाजा व केवल गर्जना करनेवाले मेघ के समान वक्ता भी अच्छा नही होता। वह सावधान एव कथनी-करणी मे एकरूप होना चाहिए। "सुखमणी साहव" मे गुरु नानक ने कहा है—

अवर उपदेशे आप न करे,
आवत जावत जम्मे मरे।

४ वक्तुरेव हि तज्जाड्यं, यच्छ्रोता नाववुध्यते।
श्रोता अगर न समझे तो वक्ता की ही मूर्खता है।

५ पडित कथा कर रहा था, स्वाद न आने से श्रोता उठ-उठकर जा रहे थे। फिर भी मूर्ख चिल्लाता ही रहा, आखिर चार आदमी रह गए। पडित ने उनसे पूछा—कथा मे क्या समझे भाई? उन्होंने कहा—समझना क्या है? तुम उठ जाओ तो तख्त ले जाना है, हम तो मजदूर हैं।

६ घरशूरा मूढपडिया गाव गिवारे गोठ।
सभा माहि वतलावता, थर-थर धूजे होठ॥

—राजस्थानी दोहा

वक्तृत्वकला

१ भाषण देने की योग्यता या शक्ति को वक्तृत्व कहते हैं। वह यदि व्यव-
स्थित एवं आकर्षक हो तो 'वक्तृत्वकला' कहलाती है।

—नालंदा-विशालशब्दसागर के आधार पर

२ मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।

—नैषधीयचरित ९।८

परिमित एवं सारगर्भित वचन बोलना ही वाक्पटुता है।

३ वक्तृत्वकला केवल शब्दों के चुनाव में ही नहीं, वरन् शब्दों के उच्चारण
में, आंखों में और चेष्टाओं में भी होती है।

—सा० रोशेफो

४ सर्वोत्तम वक्तृत्व वह है, जो स्वेच्छा से कर्म कराने और निकृष्ट वह है, जो
उसमें बाधा डाले।

—लायड जार्

० वक्ता लोग व्याख्यान मे समस्यापूर्ति, पहेली या कूट आदि कुछ ऐसे अद्भुत श्लोको-दोहो का प्रयोग करते है, जिससे सभा वक्ता की विद्वत्ता से चकित और प्रभावित होकर उसके पीछे पागल-सी बन जाती है। यहा समस्यापूर्ति का दिग्दर्शन कीजिए।

१ **समस्यापूर्ति**—समस्यापूर्ति का अर्थ है, किसी एक छद के एक पद को सुनकर शेष पदो को बना देना।

समस्या यथा—तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्—

(क) घृतं न श्रूयते कर्णे, दधि स्वप्ने न दृश्यते।
मुग्धे! दुग्धस्य का वार्ता? तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्॥

घी सुनने मे नही आता, दही स्वप्न मे भी नही दीखता। अरी मूर्खे! तू दूध की क्या बात कह रही है। तक्र (छाछ) भी इन्द्र को दुर्लभ है।

(ख) समस्या—ठंठठठठठठठठं—

रामाभिषेके मदविह्वलाया हस्ताच्च्युतो हेमघटस्तरुण्याः।
सोपानमासाद्य करोति शब्द, ठठंठठंठंठठठठठ।

राम के राज्याभिषेक के समय एक मदविह्वल युवती के हाथ से सोने का घडा गिर गया। वह पेडियो से लुटका-लुटककर नीचे आता हुआ ठंठठ शब्द कर रहा है।

(ग) समस्या—हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतल :—

सुतं पतन्त प्रसमीक्ष्य पावके, न बोधयामास पतिं पतिव्रता।
तदा ह्यसौ तद्व्रतशक्तिपीडितो, हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतल.॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १८८-१८९

एक पतिव्रता का पुत्र खेलता-खेलता अग्नि में गिरने लगा। पतिव्रता उसे देखकर भी स्थिर बैठी रही। (उसकी गोद में पति सो रहा था।) पतिव्रता के वश में अग्नि घिसे हुए चन्दन के समान शीतल हो गयी।

२ प्रहेलिका—(पहेली)

जिस कविता में गूढ़ अर्थवाले प्रश्न होते हैं, उसे पहेली कहते हैं। संस्कृत पहेलियाँ यथा—

(क) अपदो दूरगामी च, साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च, यो जानाति स पण्डितः ॥१॥

जो अ-पद होकर भी दूरगामी है, साक्षर होकर भी पण्डित नहीं है तथा अ-मुख होकर भी साफ-साफ बोलनेवाला है। जो उसे जानता है, वही पण्डित है—बताओ कौन है?   उत्तर—लिखा हुआ पत्र

(ख) एकचक्षुर्न काकोऽयं, बिलमिच्छन् न पन्नगः।
क्षीयते वर्धते चैव, न समुद्रो न चन्द्रमाः ॥

एक आँखवाला है, पर काग नहीं है। बिल की इच्छा करता है, पर साँप नहीं है तथा घटता-बढ़ता है, किन्तु समुद्र और चन्द्रमा नहीं है—बताओ क्या है?   उत्तर—सुई-धागा

(ग) अस्ति ग्रीवा शिरो नास्ति, द्वौ भुजौ कर-वर्जितौ।
सीताहरणसामर्थ्यो, न रामो न च रावणः ॥

गर्दन है, सिर नहीं है, दो भुजाएँ हैं, पर हाथ नहीं हैं, फिर भी सीताहरण के लिए समर्थ है। लेकिन न राम है और न रावण—बताओ कौन है?   उत्तर—कंचुकी

(घ) वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराज-स्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी, जलं च बिभ्रन् न घटो न मेघः ॥

पेड़ पर रहनेवाला है, किन्तु गरुड़ नहीं है। तीन नेत्रवाला है, पर

महादेव नही है। वल्कल-वस्त्र धारण करता है, लेकिन सिद्ध योगि
है तथा जल से भरा हुआ है, परन्तु न घडा है, और न ही
वताओ कौन है ? उत्तर-

(ङ) पानीयं पातुमिच्छामि, त्वत्तः कमललोचने !
यदि दास्यसि नेच्छामि, नो दास्यसि पिवाम्यहम् ॥

हे कमलनेत्रे ! तेरे हाथ से पानी पीना चाहता हू, किन्तु तू
है तो नही पीऊगा अन्यथा पी लूगा।
(यहा दास्यसि क्रिया का भ्रम होता है।)

(च) एकोनाविंशतिः स्त्रीणा, स्नानार्थं सरयूं गताः।
विंशतिः पुनरायाता, एको व्याघ्रेण भक्षित ॥

एक पुरुष और वीस स्त्रिया नहाने के लिए सरयू नदी पर ग
नहाकर लौट आये और एक को वाघ खा गया।

(यहा एकोनाविंशति शब्द का अर्थ उन्नीस समझ मे आता है
लगाना कठिन होता है।)

(छ) विषं भुङ्क्ष्व महाराज ! स्वजनै. परिवारित ।
विना केन विना नाभ्या, कृष्णाजिनमकण्टकम् ॥
—सुभाषितरत्नभाण्डागार,

महाराज ! आप परिवारसहित निष्कटक पकार, ककार
नकार निकालकर "कृष्णाजिन" अर्थात् राज्य का उपभो
कृष्णाजिन शब्द से उपरोक्त अक्षर निकाल लेने पर ऋ-आजि-
रहता है, इनकी सधि करने पर राज्य वन जाता है।

(ज) तातेन कथितं पुत्र ! लेख लिख ममाज्ञया।
न तेन लिखितो लेख., पितुराज्ञा न लोपिता ॥

पिता ने पुत्र से लेख लिखने के लिए कहा, उसने नम्र होकर लिख
पिता की आज्ञा का लोप नहीं किया।
(यहा नतेन शब्द के कारण अर्थ लगाने मे कठिनाई होती है।)

(ग) भवित्री रम्भोरु त्रिदशवदनग्लानिरधुना,
स रामो मे स्थाता न युधि पुरतो लक्ष्मणसख·।
इय यास्यत्युच्चैर्विपदमधुना वानरचमू—
र्लंघिष्ठेदं षष्ठाक्षरपरविलोपात् पठ पुन ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ २१४

हे सीता ! देवो के मुख पर अब ग्लानि छा जाएगी। लक्ष्मण का भाई राम अब मेरे सामने युद्ध मे नही ठहर सकेगा और यह वानरो की सेना अब विकट विपत्ति मे पड जाएगी। रावण के कहे हुए इन तीन पद्यो मे से सातवा अक्षर निकालकर, हे शिष्य ! इन्हे पुन पढो ! इसका दूसरा ही अर्थ निकलेगा।

जैसे—हे सीता ! दशवदन (रावण) के मुख पर अब ग्लानि छा जायेगी। राम मेरे सामने युद्ध मे ठहर सकेगा और वानर सेना अब ऊंचे पद को प्राप्त होगी। (यहा तीनो पद्यो मे से सातवें अक्षर क्रमश "त्रि-न-वि" निकाले गए हैं।)

४ क्रियागुप्त—

(क) आगत· पाण्डवा· सर्वे, दुर्योधनसमीहया।
तस्मै गां च सुवर्णं च, रत्नानि विविधानि च ॥

जो भी याचक धन की इच्छा से आया। पाण्डवो ने उसे गाय, सोना एव रत्न आदि दिये। (यहां अदु क्रिया गुप्त है)

(ख) ललाटतिलकोपेत, कृष्ण कमललोचन।
गोकुलेऽत्र क्रिया वक्तु, मर्यादा दशवार्षिकी ॥

तिलकधारी एव कमलसमान नेत्रवाले श्रीकृष्ण गोकुल मे बाल्यलीला करते थे। यहा गुप्त क्रिया खोजने के लिए दस वर्ष का समय है, बतलाओ क्या क्रिया है ? (यहा "ललाट" क्रिया गुप्त है, जो "लटबाल्ये" धातु के लिट् लकार का रूप है।)

○ दो मां बेटी, दो मां बेटी, चली बाग मे जाय।
तीन नीबू तोडकर, साबत-साबत खाय॥

उत्तर—माता, पुत्री और दौहित्री

○ धूप लगै सूखै नही, छाया सूं कुमलाय।
म्हे थन्ने पुछु हे सखी! पवन लग्या मर जाय॥

उत्तर—पसीना

○ पाणी माही नीपजै, पान फूल फल नाय।
साजन! वो फल लावज्यो, राजा-रंक सब खाय॥

उत्तर—नमक

○ पान सडे घोडो अडे, विद्या वीसर जाय।
अंगारां बाटी जलै, कहो चेला किण न्याय?

उत्तर—फेरी नहीं

○ पेली म्हे जाम्या, पाछै बडो भाई।
धूम धडाके बाबो जाम्यो, पाछै जामी माई॥
उत्तर—दूध, दही, मक्खन, छाछ

○ ऊंटवाला ओठिया! थारै लारै कुण बैठी?
या की सासू म्हाकी सासू, आपस मे मां बेटी॥

उत्तर—ससुर-बहू

११ भाषण

१ भाषण मस्तिष्क का दर्पण है।

—सेनेका

२ भाषण मानव-मस्तिष्क पर शासन करने की कला है।

—प्लेटो

३ क्रान्तियों का जन्म लिखित शब्दों से नहीं, ध्वनित शब्दों (भाषणों) से हुआ है।

—हिटलर

४ भाषण करने की योग्यता प्रसिद्धि प्राप्त करने का सीधा मार्ग है। इससे मनुष्य जनता के सामने आ जाता है। और साधारण जनता से ऊपर उठ जाता है।

—डेलीकारनेगी

५ भाषण शक्ति है। भाषण शासन करने के लिए, मन बदलने के लिए और बाध्य करने के लिए दो।

—एमर्सन

६ साधारण से साधारण विषय पर भी एकदम भाषण देने खड़े न हो जाओ। पहले तैयारी करो।

७ चार तरह से भाषण दिये जाते हैं—
१ अपनी जानकारी दिखाकर, २ अपनी तारीफ करके, ३ प्रश्न उठाकर और ४ [illegible] ज्ञान।

८ भोजन और भाषण के तीन गुण हैं—प्रियकर, हितकर और परिमित।

९ अमेरिका के राष्ट्रपति—विल्सन से किसी ने—पूछा दस मिनिट भाषण देना हो तो ? दो सप्ताह तक सोचना पडेगा ।
एक घंटा बोलना हो तो ? एक सप्ताह तक सोचना पडेगा ।
अगर दो घंटा बोलना हो ? चलो अभी तैयार हूँ ।
तत्त्व यह है कि थोडा भाषण देने मे अधिक सोचना पडता है ।

१० भाषणो और भाषण करनेवालो से डरना और उनसे दूर रहना अच्छा है ।

\- गांधी

११ जापान एव अफ्रीका की कई जातियो मे वक्ता को एक पैर से खड़े होकर भाषण देना पडता है । पैर गिरते ही बैठना होता है । रहस्य यह है कि भाषण थोडा दिया जाये ।

●

१२ बात

१ जानी जानेवाली या जताई जानेवाली वस्तु या स्थिति को बात कहते है ।

—नालन्दा-विशालशब्दसागर

२ बात प्यारी कोनी बतुओ प्यारो है ।

—राजस्थानी कहावत

२ बात कर जाने तो बडी ही करामात है ।

—भाषाश्लोकसागर

४ सबके आगे होयकर, कबहु न करिये बात ।
सुधरे शाबासी नही, बिगडे गाली खात ।।

५ बिगरी बात बने नही, लाख करो किन कोय ।
"रहिमन" फाटे दूध को, मथे न माखन होय ।।

६ गई बात नै घोडा ही को नावडै नी ।

—राजस्थानी कहावत

७ तीर कमानो गल्ल जबानो ।

—पजाबी कहावत

८ कम बातें करो, कम मे बातें करो और काम की बातें करो ।

९ जब तक किसी बात के बारे मे पूरा प्रमाण नही हो और उसे साबित न कर सके, तब तक उसे कहना ही नही चाहिए ।

—गाधी

१० बाता सूं किसो पेट भरीजै ?

—राजस्थानी कहावत

११ वातेडी की विगडं ।

—श्री कालूगणी

१२ वात थोडी र वैदो घणो ।

० नई वात नौ दिन, खाची-ताणी तेरह दिन ।

—राजस्थानी कहावतें

१३ जो वाते विचार पर छोड दी जाती है, वे कभी पूरी नही होती ।

—हरिभाऊ उपाध्याय

१४ हैये छे पण होठे नथी ।

समय पर वात याद न आने से ऐसे कहा जाता है

० खरी वातमा शानो खार ।

—गुजराती कहावतें

१५ वातचीत मे १३ वर्ष—अदाजा लगाया गया है कि स्त्री-पुरुष अपने जीवन के तेरह वर्ष वातचीत मे व्यतीत कर देते हैं। ये हर रोज साधारण-तया १८ हजार शब्द बोल देते हैं, जिनसे एक पुस्तक के ५४ पृष्ठ भर सकते है। एक वर्ष मे ८०६ पृष्ठ की ६६ पुस्तकें तैयार हो सकती है और ७० वर्ष की उम्र मे तीन-तीन सौ पृष्ठो की ४६२० पुस्तको का एक पुस्तकालय वन सकता है।

—हिन्दी मिलाप, ६ जून १९५४

१६ जिन्ने मुंह उन्नीयां गल्ला ।

मुह जितनी वातें ।

० थुका नाल वडे नही पकदे ।

कोरी वातो मे काम नही होता ।

० विआह दे विच वो दा लेखा ।

—पजावी कहावतें

जरूरी वात के वीच मे गैरजरूरी वात करने लग जाना ।

१३ हंसी आनेवाली बातें

१ एक ब्राह्मण गोमुखी में हाथ डालकर विष्णु भगवान का जाप करता था एव निम्नलिखित श्लोक बोलता था—

> राम कृष्ण गोपाल दामोदर, हरि माधव भवजलतरणम्,
> कालियमर्दन कसनिकंदन, देवकीनन्दन त्वा शरणम्।
> चक्रपाणि वाराह महीपति, जलमायक मगलकरणम्,
> एते नाम जपो निशिवासर, जनम-जनम के भयहरणम् ॥

ब्राह्मण की छोटी लडकी भी अपने पिता के साथ इसी श्लोक का जाप किया करती थी। क्रमश उसकी ब्राह्मण पुत्र देवकीनदन ने शादी हुई। शादी होते ही उसका जाप बद हो गया क्योंकि भारत के कुछ क्षेत्रों में स्त्रियाँ अपने पति का नाम नही लिया करती। डेढ-दो वर्ष बाद उनके एक पुत्री हुई। उसका नाम चम्पा रखा। अब जाप भी शुरू कर दिया गया देवकीनदन त्वा शरण के स्थान पर चम्पा के चाचा त्वा शरणं जचा लिया गया। जब वह पीहर आयी तब चपा के चाचा सुनते ही उसका पिता चौंका और पुत्री की मूर्खता पर हसा। फिर तत्त्व समझाकर कहा कि भगवान का जाप करने मे हर्ज नही है।

२ नाभा (पजाब) मे एक बहन दर्शनार्थ आई। मैंने पूछा—किसके घर से हो? बहन ने कहा—मैं नाम किस-तरह लवा? उसदे नाम चे "चचा, नना, ते णणा" पैंदा है, तुसी नहीं समझे? मैंने कहा क्या चानण। हा! हा! एही। मुझे कुछ हसी आई एव विचार हुआ कि कितना अज्ञान है। जो नाम लेकर भी मैं नाम नही लेती, ऐसा मानती है। वस्तुत कुछ समझ मे

नही आता कि भारत के कतिपय प्रदेशो मे पति का नाम न लेना, यह परम्परा कैसे चली और किसने चलायी ?

—धनमुनि

३ नई बात—

राजा ब्राह्मणो से नई बात सुनता था। दक्षिणा मे एक मोहर देता था। रत्न ब्राह्मण की पुत्री-कमला आई, राजा ने कहा—"देरी से क्यो आई ?" कमला ने उत्तर दिया—मेरा अविवाहित पति घर आ गया। माता-पिता नही थे। मैंने रसोई बनाकर खिलाई। खाते ही पेट मे दर्द हो गया एव वह मरगया, उसे खड्डे मे गाडकर मैं यहां आई हू। राजा ने कहा—"क्या यह सत्य है ?" कन्या बोली—जो आप रोज सुनते है, यदि वह सत्य है तो यह भी सत्य है। बुद्धिविलक्षणता से प्रभावित होकर राजा ने उसे दो मोहरे दक्षिणा मे दी।

●

१४ बात करते समय सावधानी

१ दिवा निरीक्ष्य वक्तव्यं, रात्रौ नैव च नैव च ।
सचरन्ति महाधूर्त्ता, वटे वररुचिर्यथा ॥
दिन मे देखकर बात करनी चाहिये, किन्तु रात के समय तो बात करनी ही नही चाहिये । वटवृक्ष मे वर रुचिवत् धूर्त व्यक्ति घूमते ही रहते हैं ।

२ बात न करीये वाटे, बात न करीये घाटे नें, बात न करीये राते ।
० वाड साभले वाड नो काटो साभले नें भीत ने पण कान होय छे ।
० पेट मा ते पेटी मा नें होठ वहार ते कोट वहार ।
० साकर ना हीरा गल्या ते गल्या,
हाथी ना दंतूशल नीकल्या ते नीकल्या ।

—गुजराती कहावतें

३ एक-एक बात नौ-नौ हाथ ।
० एक बात हजार मुख ।

—राजस्थानी कहावतें

४ बात की रक्षा—
(क) आकार्यसिद्धे रक्षितव्यो मन्त्र ।

—नीतिवाक्यामृत १०।६

काम सिद्ध न हो, वहाँ तक बात गुप्त रखनी चाहिए ।

(ख) खेत्तं काल पुरिस, नाऊण पगासए गुज्झं ।

—निशीथभाष्य ६२२७ तथा बृहत्कल्प-भाष्य ७६०

देश, काल और व्यक्ति को समझकर ही गुप्त रहस्य प्रकट करना चाहिए ।

(ग) जिसने इतना भी जतला दिया कि मेरे पास कुछ भेद है, तो उसने आधा भेद तो खोल दिया और आधा खुलनेवाला ही है।

—लुकमान हकीम

(घ) होती कहने योग्य जो, तो क्यो रखते गुप्त ?
भूल कर रहे मूर्खजन, बात पूछ कर गुप्त।

—दोहासदोह

५ लूगाया रै पेट मे वात को टिकै नी।

--राजस्थानी कहावत

० पुडरीकनाग और गरुड :—
राजकुमार का साप डस गया, क्रुद्ध राजा ने सर्पयज्ञ किया। मन्त्राकृष्ट सभी नाग उपस्थित हुए। पुडरीकनाग भाग गया और एक ब्राह्मणपुत्री के साथ ब्राह्मणरूप से रहने लगा। एकदिन उसने ब्राह्मणी से अपना गुप्तभेद देकर कहा कि मुझे पकडने के लिए गरुडजी अन्यपक्षी के रूप मे घूम रहे है, अत तू सावधान रहना।
इधर नागपचमी के दिन स्त्रियो के साथ ब्राह्मणी जल भरने गई, वहाँ स्त्रिया कह रही थी कि जल्दी से पानी भर लो। आज नागपूजा के लिए चलना है। ब्राह्मणी ने कहा—बहनो। मैं तो नही जाती, मेरा स्वामी स्वय नागदेव ही है।[1]

---

१ इसी प्रसग को एक कवि ने राजस्थानी गीत द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया है—
सावण पहली पचमी हो, धण चालीजी, चाली पूजण नाग।
हेजो तो कांडॅ चाली पूजण नाग, नाग मेरे घर मे पीया।
मैं पूजण कैसे चलू, सखी! मेरा बटके हीया।
फण कू लिए फुलाय, नाग एक म्हलै कालो।
सखी! यूँ डर मुझ कू लगे मू छ दे आई हो तालो।

गरुड ने यह वात सुनली और चिडिया के रूप से घडे पर बैठकर उसके घर आ गया। घर आते ही चिल्लाकर स्त्री ने कहा—पतिदेव ! जल्दी आकर मेरे सिर से घडा उतारो। वोझ के मारे गर्दन टूट रही है। नाग समझ गया कि गरुड आ पहुचा। ज्योही घडा उतारने लगा, गरुड ने नाग को आ दवोचा। नाग ने कहा—

स्त्रीषु गुह्य न कर्त्तव्य, प्राणै कण्ठगतैरपि।
हन्यते पक्षिराजेन, पुण्डरीको महाफणी॥

प्रणान्त के समय भी स्त्रियो के सामने गुप्त वात नही कहनी चाहिये। इसी कारण से गरुड द्वारा पु डरीकनाग मारा जा रहा है।

गरुड ने पूछा—क्या कहा ? नाग ने श्लोक को दुहराया। फिर ज्योही गरुड नाग को मारने लगा, बुद्धिमान स्त्री ने निम्नलिखित श्लोक कहा—

एकाक्षरप्रदातारं, यो गुरु ं नाभिवन्दते।
श्वानयोनिशत भुक्त्वा, चाण्डालेष्वभिजायते।

जो एक अक्षर ज्ञान देनेवाले गुरु को भी वन्दना नही करता, वह कुत्ते की सौ योनियां भोगकर चाण्डालो मे जन्म लेता है।

उक्त श्लोक का तत्त्व समझकर गरुड ने नाग को गुरु माना और जीवित रहने दिया। लोकवाणी के अनुसार नागो के नौ कुल थे। उनमे आठ तो सर्पयज्ञ मे होम दिये गये। आज जो साप नजर आ रहे हैं, वे सब वचे हुए पु डरीकनाग की सताने है, अस्तु !

—श्री फानुगणी से श्रुत

१५ बात का निर्वाह

१ न चलति खलु वाणी सज्जनाना कदाचित् ।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

सत्पुरुषो की कही हुई बात कभी नही बदलती ।

२ जबान हार्‌यो ते जन्म हार्‌यो ।

० मर जावणो पण बात राखणी ।

—राजस्थानी कहावतें

३ शिवि दधीचि बलि जो कछु भाखा,
तन धन तजेउ वचन प्रण राखा ।
रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्राण जाय वरु वचन न जाई ।।

—रामचरितमानस

४ वचन छल्यो बलिराय, वचन कौरव कुल खोयो,
वचन काज हरिचन्द, नीच घर पाणी ढोयो ।
वचन काज श्री राम, लका विभीक्खण थाप्यो,
वचन काज जगदेव, शीश ककाली आप्यो ।
वचन बोलि कुवचन करै, ग्रही जीभ तसु कट्टिये,
बेताल कहै विक्रम सुणो, सुष वच नाहि पलट्टिये ।।

५ गल्ला करन सुखालिया, औखे पालने बोल ।

० गल्ल लखदी, अक्ल कक्ख दी ।

—पंजाबी कहावतें

कहावतें

ोलचाल मे वहुत आनेवाला ऐसा वंधा हुआ चमत्कारपूर्ण वाक्य ्हावत कहलाता है, जिसमे कोई अनुभव या तथ्य की वात संक्षेप । कही गई हो ।

—नालन्दा-विशालशब्दसागर

्हावतें युगो का सद्ज्ञान है ।

—जर्मन कहावत

्हावतें दैनिक-अनुभवो की पुत्रिया हैं ।

—डच कहावत

ंकसी भी राष्ट्र की प्रतिभा, कुशाग्रता और उसकी आत्मा का पता उसकी कहावतो से लगता है ।

—वेकन

ुई कहावतो की सत्यता आज संदिग्ध हो गई है । जैसे :—

दीकरी ने गाय, दौरे त्यां जाय ।
दरजी नो दीकरो जीवे त्यां सुधी सीवे ।
सोटी वाजे चम-चम, विद्या आवे घम-घम ।
स्पष्टवक्ता सुखी भवेत् । इत्यादि—

७

१७ मौन

१ मुनेर्भावो मौनम् ।

—आचारांग २।६ टीका

मुनि का भाव **मौन** कहलाता है ।

२ वाचां संवरणं मौनम् ।

—मनोनुशासन ३।१३

वचन के सवरण को मौन कहते हैं। यही वचनगुप्ति है ।

३ मौन उस अवस्था को कहते हैं, जो वाक्य और विचार से परे है यानी शून्य-ध्यान अवस्था है ।

४ मौनअवस्था मे मैं का लोप हो जाता है। फिर कौन बोले और कौन सोचे ?

५ मौन निद्रा के सदृश है—यह ज्ञान मे नयी शक्ति उत्पन्न करता है ।

—बेकन

६ मौन सम्मतिलक्षणम् । —सस्कृत कहावत

० साइलेन्स गिव्स कान्सेन्ट । —अग्रेजी कहावत

मौन सम्मति का लक्षण है ।

७ कभी-कभी मौन रह जाना, सबसे तीखी आलोचना होती है ।

८ विपत्ति मे मौन रहना अति उत्तम है । —ड्राईडेन

९ भय से उत्पन्न मौन पशुता है और सयम से उत्पन्न मौन साधुता है ।

—हरिभाऊ-उपाध्याय

१८ मौन की प्रेरणा

मुणी मोण समादाय,
धुणे कम्म-सरीरय ।

—आचाराग ५।४

मुनि मौन-मुनित्व को लेकर कर्म और शरीर का नाश करे ।

ज सम्मति पासहा, तं मोणति पासहा ।
ज मोणंति पासहा, त सम्मति पासहा ।
ण इम सक्क सिढिलेहिं,
अछिज्जमाणेहिं,गुणासाएहिं,वकसमायारेहिं,पमत्तेहिं,गारमावसंतेहिं ।

—आचाराग ५।४

जो सम्यक्त्व है, वह मौन-मुनित्व है और जो मौन है, वह सम्यक्त्व है। शिथिल, आर्द्र, (कमजोर दिलवाले) विपयास्वादी, वक्रचारी, प्रमत्त और घर मे रहनेवाले मनुष्यो द्वारा यह सम्यक्त्व एव मौन शक्य नही है।

३ वाद-विवादे विपघणा, वोले वहुत उपाध ।
मौन गहे सव की सहे, सुमिरे नाम अगाध ।।

—कवीर

४ नापृष्ठ' कस्यचिद् ब्रू या-न्नाऽप्यन्यायेन पृच्छत. ।
ज्ञानवानपि मेधावी, जडवत् समुपाविशेत् ।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ २७३

विना पूछे किसी से कुछ न कहे तथा अन्याय से पूछने पर भी ज्ञानी एव मेधावी व्यक्ति मूर्खवत् चुप-चाप बैठा रहे।

५ ददु'रा यत्र वक्तार-स्तत्र मौनं हि शोभनम्।

—सुभाषितरत्नमंजूषा

मेढको के समान मूर्ख मनुष्य ही जहाँ वक्ता बन रहे हो, वहाँ विद्वानो के लिए मौन रहना ही अच्छा है।

६ कोलाहले काककुलस्य जाते,
विराजते कोकिलकूजितं किम्।
परस्परं सवदता खलाना,
मौनं विधेयं सततः सुधीभि ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ६०

जैसे—काकसमूह का कोलाहल हो, वहाँ कोकिल को नही बोलना चाहिये, उसी प्रकार जहाँ दुर्जनो का आपसी सवाद होता हो, वहाँ विद्वानो को सदा चुप रहना चाहिये।

१६ मौन की महिमा

१ मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही हो तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नही।

—गांधी

२ मौन मे शब्दो की अपेक्षा अधिक वाक्शक्ति होती है।

—कार्लाइल

३ दी रेस्ट इज साइलेंस। —शेक्सपियर

विश्राम मौन है।

४ भाषण चांदी है, मौन सोना है। भाषण मानवीय है एव मौन दैविक है।

—जर्मन कहावत

५ मौखर्यं लाघवकर, मौनमुन्नतिकारकम्।

वाचालता अवनति करनेवाली है एव मौन उन्नति करनेवाला है।

६ मौनव्रत सवसे वडो, जो कोई जाणै साध,
जोगा बोल्यो राय पै, ताहि भई असमाध।
ताहि भई असमाध, जनम राजा घर पायो,
खग बोल्या वन माय, जीव आपणो गमायो,
चाकर बोल्या राय पै, ताहि भई असमाव।
मौनव्रत सवसे वडो, जो कोई जाणै साव॥

—भाषाश्लोकसागर

भक्ति से प्रसन्न होकर एक योगी ने राजा को पुत्र होने का वरदान दिया। फिर निदान करके अनशन द्वारा मरकर वह राजकुमार बना। कुछ समय पश्चात् पुत्र को लेकर राजा योगी के दर्शनार्थ गया, किन्तु वहा योगी न मिला। ज्योंही पुत्र को योगी की धूनी मे लिटाया, उसे जातिस्मरणज्ञान हुआ और वह पश्चात्ताप करने लगा कि मैं बोलकर योग मे भ्रष्ट हो गया, अत आज से मौन रखूगा। क्रमश बडा हुआ, लेकिन बिल्कुल नही बोलता। राजा ने अनेक उपचार किये, सब निष्फल गए। एक दिन राजकुमार सैर करने जा रहा था। तीतर पक्षी दाहिनी ओर (अशुभ माना जाता है) बोलते ही नौकरो ने उसके गोली मार दी। कुमार ने कहा—बोला ही क्यो? नौकरो ने राजा को बधाई दी। राजा ने कुमार को गोद मे बिठाकर बार-बार पूछा—बेटा! मेरे से क्यो नही बोलता? कुमार चुप रहा, राजा ने नौकरो को पीटना शुरू किया और कहा—तुम झूठे हो। नौकरो के मार पड़ती देखकर कुमार के मुह से सहसा फिर निकल गया "बोले ही क्यो?" आखिर राजा ने अत्यत आग्रह किया और राजकुमार बोलने लगा।

●

२० मौन से लाभ

मौनं सर्वार्थसाधनम् ।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

मौन समस्त अर्थो का सिद्ध करनेवाला है ।

वयगुत्तयाए णं निव्विकारत्तं जणयइ । निव्वकारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते याविं भवइ ।

—उत्तराध्ययन २६।५४

वचनगुप्ति से जीव निर्विकारिता को प्राप्त करता है । निर्विकार होने पर जीव अध्यात्मयोग की साधना से युक्त होता है ।

मौनिन॰ कलहो नास्ति ।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

मौन रखनेवालो के निकट प्राय कलह नही होता ।

नही बोल्या मे नव गुण ।

बोलें ते बे खाय अबोले त्रण खाय ।

—गुजराती कहावतें

इक चुप सौ सुख ।

ढकी रिझे कोई ना बुझे ।

—पजाबी कहावतें

चुप रहने से व्यक्ति के दुर्गुणो का किसी को पता नही लगता ।

२१ श्रवण-सुनना

१ सुई धम्मस्स दुल्लहा।

—उत्तराध्ययन ३।८

धर्म का श्रवण मिलना कठिन है।

२ किच्छं सद्धम्मसवण।

—धम्मपद १४।१४

सच्चे धर्म का सुनना मुश्किल है।

३ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं जहा—उवसमेण चेव, खएण चेव।

—स्थानांग २।४

दो कारणो से आत्मा को केवलि-प्ररूपित धर्म सुनने को मिलता है—कर्मों के उपशम से और कर्मों के क्षय से।

४ प्राचीन ऋषि कहते थे—पहले कान मे भोजन डालो, अर्थात् शास्त्र सुनो और पीछे मुह मे डालो।

५ श्रवण का फल—

(क) सेणं भंत्ते सवणे किं फले ?
गोयमा ! णाणफले।

—भगवती २।५।३७

हे भगवान ! श्रवण का क्या फल है ?
गौतम ! श्रवण करने का फल ज्ञान होता है।

(ख) सवणे नाणे य विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अणण्हये तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी॥

—भगवती २।५

धर्मश्रवण से तत्त्वज्ञान, तत्त्वज्ञान से विज्ञान (विशिष्ट तत्त्वबोध), विज्ञान से प्रत्याख्यान(सासरिक पदार्थों से विरक्ति) प्रत्याख्यान से सयम, सयम से अनाश्रव (नवीनकर्म का अभाव), अनाश्रव से तप, तप से पूर्वबद्ध कर्मो का नाश, पूर्वबद्ध–कर्मनाश से निष्कर्मता (सर्वथा कर्मरहित स्थिति) और निष्कर्मता से सिद्धि अर्थात् मुक्त-स्थिति प्राप्त होती हैं।

६ नहि सुतीक्ष्णाऽप्यसिधारा, स्वयं छेत्तुमाहित-व्यापारा,
नहि सुशिक्षितोऽपि नटवटुः स्वस्कन्धमधि-रोढु पटुः।

—स्याद्वादमञ्जरी

तीखी तलवार की धारा भी अपने आपको नही काट सकती एव सुशिक्षित नटपुत्र भी अपने कधे पर नही चढ सकता। इसी प्रकार अपने आप ज्ञान होना दु सभव है।

७ सुनने के बाद ही श्रद्धा, प्रतीति एव रुचि होती है।[1] इसीलिए शास्त्रो मे "सद्दहामि ण भते ! निग्गथपावयण" आदि पाठ आये है।

८ श्रुत्वा धर्मं विजानाति, श्रुत्वा जानाति दुर्मतिम्।
श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति, श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात्

—चाणक्यनीति ६।१

---

१ शास्त्रवाणी सुनने से अवश्य कल्याण होगा—ऐसा दृढविश्वास 'श्रद्धा' है। इससे अमुक-अमुक व्यक्तियो का कल्याण हुआ है, यह चिन्तन 'प्रतीति' है तथा दुर्गम से दुर्गम तत्त्व को भी डावाडोल न होते हुए प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार करना 'रुचि' है।

इस विषय को एक हेतु से और स्पष्ट किया गया है, जैसे—इस वैद्य की औषधि से मेरे अवश्य लाभ होगा—यह दृढविश्वास है 'श्रद्धा' है। इसने अमुक-अमुक रोगी ठीक हुए हैं—यह विचार 'प्रतीति' है तथा चाहे औषधि कितनी ही कटु या तिक्त हो, उसे मुँह न बिगाडते हुए प्रसन्न मन से लेना 'रुचि' है।

मनुष्य सुनकर ही धर्म को जानता है और सुनकर ही पाप को जानता है तथा सुनकर ही ज्ञान एव मोक्ष को प्राप्त होता है।

६ सुच्चा जाणइ कल्लाणं, सुच्चा जाणइ पावग।
उभय पि जाणइ सुच्चा, ज सेयं तं समायरे।

—दशवैकालिक ४।११

व्यक्ति सुनकर कल्याण—पुण्य को जानता है और सुनकर ही पाप को जानता है। पुण्य-पाप दोनो का सुनकर ही जानता है। दोनो मे जो श्रेय हो, उसका आचरण करना चाहिये।

१० बद्धनिकायकम्मा, सुणंति धम्म' न परं करेंति।
जिन जीवों के निकाचित कर्मों का उदय होता है, वे धर्म सुन लेने पर भी उसे कर नही सकते।

१२ सुनने की विधि—

(क) निद्दा-विगहापरिवज्जिएहिं, गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं।
भत्ति-बहुमाणपुव्व, उवउत्तेहिं सुणेयव्वं।

—विशेषावश्यक ७०७

निद्रा-विकथा को त्यागकर, मन-वचन-तन का गोपन कर, हाथ जोडकर तथा सजग होकर, भक्ति-बहुमानपूर्वक शास्त्रवाणी का श्रवण करना चाहिये।

(ख) सुनते हो व्याख्यान तुम, बनकर साहूकार।
लेकिन चोर बने बिना, नहिं होगा निस्तार॥

—दोहासंदोह

(ग) नदी की सीप न बनकर समुद्र की सीप बनो! समुद्र की सीप मे ही मोती होते हैं।

१३ जाटनी ने एकदिन व्याख्यान सुनकर घर को नरक मे स्वर्ग बना लिया।

—एक जाटनी अपने पति से वहुत लडा करती थी। गांव मे साधु आए, पडोसिन के कहने से एकदिन वह व्याख्यान सुनने गई। व्याख्यान मे विवाह-सम्वन्धी मत्र मुनाए गए एव पति-पत्नी का कर्तव्य वताया गया। जाटनी को ज्ञान हुआ। पति घर आया और पत्नी ने गर्म पानी, तेल, सावुन आदि उपस्थित किए एव गर्म रोटियां खिलाई। विस्मित पति ने लडाई न करने का कारण पूछा। पत्नी ने मुनि के व्याख्यान का हाल सुनाया। दोनो मुनि के पास गए एव लडने-झगडने का त्याग कर दिया, अस्तु।

२३ सुनते समय वक्ता के मुह की ओर देखो, मुनने के वाद उस पर चितन करो और फिर उसमे से मारतत्व को हृदयगम करो।

२२ श्रवण का असर

१ जब कषाय, इन्द्रियो के विकार लोक-लज्जा, भय और कुटुम्ब का मोह घटने लगे, प्रभु-शरण व साधुसेवा मे मनोवृत्ति ढलने लगे, परगुण व अपने दोष देखने की योग्यता बढने लगे तथा मेत्ती मे सव्वभूएसु का तत्त्व रग-रग मे रमण करने लगे—तभी समझना चाहिए कि ज्ञान सुनने का कुछ असर हुआ है एव धर्म समझ मे आया है।

२ सुनकर असर न हुआ तो ?

असर यदि कुछ ना हुआ तो, ज्ञान सुनकर क्या किया ?[1]
दिल का बदला ना हुआ तो, वक्त खोकर क्या किया ?
क्या किया खाकर के खाना, भूख यदि कुछ ना मिटी ?
प्यास बिल्कुल ना बुझी तो, जल को पीकर क्या किया ?
क्या किया साबुन से नहाकर, मैल यदि कुछ ना हटा ?
अगर ताकत ना बढी तो, दवा खाकर क्या किया ?
क्या किया व्यापार करके, नफा यदि कुछ नहिं मिला ?
तान यदि ना मिल सकी फिर, गीत गाकर क्या किया ?
क्या किया ले हाथ माला, अगर 'धन' ! दिल ना टिका ?
ना बढा वैराग्य फिर, त्यागी कहाकर क्या किया ?

—उपदेशसुमनमाला

३ नदी किनारे कोइ नर ऊभो, तरस्या नहीं समाणी,
का तो अग ज आलसु एह नु, का तो सरिता सुकाणी।

---

१ तर्ज—दर्द कांटे का अगर

कल्पतरू तल कोई नर बैठो, क्षुधा खूब पीडाणी,
नही कल्पतरु ए वावलियो, के भाग्यरेख भूसाणी।

—गुजराती पद्य

तत्त्व यह है कि—सुनकर यदि असर न हुआ तो उपदेशक या श्रोता इन दोनो मे मे, किसी एक मे अवश्य कमी है।

४ वाजार मे सतो का व्याख्यान हो रहा था। हजारो आदमी सुन रहे थे। एक मुमलमान ने रास्ते चलते कुछ सुन लिया। उसे ज्ञान हो गया एव उमने फकीरी ले ली। वारह साल के वाद घूमता-घूमता वह पुन वहा आया तो पूर्ववत् हजारो मनुष्य व्याख्यान सुन रहे थे। विस्मित होकर फकीर ने कहा—

एक रोज मैंने सुना, हुआ ज्ञान मे गर्क,
रोज-रोज तुम मुन रहे, कान हैं या दर्क?

२३ श्रोता

१ श्रोताओ के जिज्ञासा का पेदा और वुद्धि की खिडकी चाहिए ।

२ जिज्ञासु व मुमुक्षु श्रोता विरले हैं और यश, कीर्ति, धन, भौतिकसुख आदि के भूखे अधिक हैं ।

३ कथा खत्म होते ही कहा गया, सवाल करो ! उत्तर मिला, हम मिट्टी हैं—पत्थर नही ।

० मिट्टी के समान श्रोता ज्ञानअकुर पैदा करते हैं । पत्थरतुल्य श्रोता छींटे उछालते हैं अर्थात् तर्क-वितर्क करते हैं । कपडेतुल्य श्रोता पानी से निकलते ही सूख जाते हैं और खडतुल्य श्रोता वढकर घटने के कारण अच्छे नही होते ।

४ चौदह प्रकार के श्रोता—

मृच्चालिनी - महिष - हंस - शुकस्वभावा,
मार्जार-काक-मशकाऽज - जलौकतुल्या. ।
सच्छिद्र कुम्भ-पशु-सर्प शिलोपमाना—
स्ते श्रावका भुवि चतुर्दशधा भवन्ति ॥

—प्राचीनसग्रह से

१—मिट्टी, २—चालनी, ३—महिष, ३—हस, ५—तोता, ६—बिल्ली, ७—काक, ८—मच्छर, ९—बकरा, १०—जलौक, ११—छिद्रवालाघट, १२—मृग, १३—सर्प, १४—सिला ।

इन मिट्टी आदि १४ के समान स्वभाववाले श्रोता भी ससार मे चौदह प्रकार के होते हैं।

(इसका विस्तृतवणन ज्ञानप्रकाश, पुज २ मे किया गया है।)

५ **तीन तरह की सभा**—श्रोताओ के समूह का नाम 'सभा' है। वह तीन तरह की होती है—१ ज्ञायिका २ अज्ञायिका, ३ दुर्विदग्धा।

१. **ज्ञायिका**—इसके श्रोता हस की तरह गुणी एव गुणग्राही होते हैं।

२ **अज्ञायिका**—इसके श्रोता मृग, सिंह एव कुर्कट के छोटे बच्चो की तरह प्रकृति से मधुर एव भद्र होते है। उन को सहज मे ही समझाया जा सकता है।

६. **दुर्विदग्धा**—इस सभा के श्रोता ग्रामीण-पण्डित की तरह न तो कुछ जानते, न ही अपमान के भय से किसी से पूछते। अभिमान के वश फुटबॉल की तरह फूले-फूले फिरते हैं एव ज्ञानदान के अयोग्य होते है।

—नन्दीसूत्र-पीठिका

७ **पाच कोड़ियो और पाच करोड़ के श्रोता**—

अजायबघर मे एक-जैसी दो मूर्तियां देखकर आगतुक ने पूछा—ये दोनो सदृश क्यो ? उत्तर मिला, सदृश नहीं हैं—एक पाच कोडियो की है और दूसरी पाच करोड की है। यो कहकर गाइड ने दोनो मूर्तियो के कानो मे दो सलाइया डाली। एक की सलाई दूसरे कान से निकल गयी और दूसरी की अन्दर रह गयी। तत्त्व समझाते हुये गाइड ने बतलाया कि जो एक कान से उपदेश सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है, वह श्रोता प्रथममूर्ति के समान पाच कोडियो का है और जो उसे अपने अन्दर रख लेता है, वह पाच करोड का है।

२४ योग्य श्रोता

१ भक्तो वक्तुरगर्वित श्रुतरुचिश्चाञ्चल्यहीन पटु,
प्रश्नज्ञश्च वहुश्रुतोऽप्यनलसोऽनिद्रो जिताक्ष सुधी ।
दाता त्यक्तकथान्तर कृतगुणप्रीतिर्न निन्दापर,
श्रोतु पुंस इमे चतुर्दश गुणा विद्वज्जनैर्भाषिता ॥

—प्राचीनसंग्रह से

१—भक्त, २—वक्ता से अभिमान नही करनेवाला, ३—सुनने की रुचि-वाला, ४—चचलतारहित, ५—निपुण, ६—प्रश्न को समझनेवाला, ७—वहुश्रुत, ८—अप्रमादी, ९—निद्रा नही लेनेवाला, १०—इन्द्रियों को जीतनेवाला, ११—विद्वान्, १२—दाता, १३—व्याख्यान मे व्यर्थ वात नही करनेवाला, १४—गुणो का प्रेमी एव निन्दा न करनेवाला। विद्वानो ने श्रोता के ये चौदह गुण वतलाये हैं ।

२ प्रथम श्रोता गुणगेह, नेहभर नयणे निरखै,
हसितवदन हुँकार, सार पण्डितगुण परखै ।
श्रवण दिये गुरु वयण, नयणता राखै सरखै,
भाव भेद सुण पृच्छ, रीझ मन माही हरखै ॥
वेवक विनय विचार सूं, मार चतुराई अगला ।
कहै "कृपा" एहवी सभा तव कविजन दाखै कला ।

३ भव्याऽभव्यविचारो, न हि युक्तोऽनुग्रहप्रवृत्तानाम् ।
कामं तथापि पूर्वं, परीक्षितव्या वुधै परिषद् ॥१॥

वज्रमिवाऽभेद्यमना, परिकथने चालिनीव यो रिक्त ,
कलुपयति यथा महिष, पूनकवद् दोषमादत्ते ॥२॥
जलमन्थनवत् कथितं, वधिरस्येव हि निरर्थकं तस्य,
पुरतोऽन्धस्य च नृत्यं, तस्माद् ग्रहणं तु भव्यस्य ॥३॥

—अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका

यद्यपि कृपालु-वक्ताओ को भव्य और अभव्य श्रोताओ का विचार करना युक्त नही हैं। तथापि विद्वानो को परिपद् की परीक्षा तो करनी ही चाहिये। श्रोता यदि वज्रवत् अभेद्य-हृदय हो, चालनीवत् उपदेश को निकालनेवाला हो, महिपवत् सभा को कलुपित करनेवाला हो और पूनकवत् दोपग्राही हो, तो उसके सम्मुख ज्ञान सुनाना जल का मन्थन करना है, वधिर को गीत सुनाना है, अन्धे के आगे नाच करना है। अत योग्य श्रोताओ का ही ग्रहण करना चाहिए।

४ **सच्चे वक्ता और श्रोता**—दो नरकङ्काल थे। एक की हड्डिया गली हुई थी। दूसरे की हड्डियो मे छिद्र थे। तत्त्वज्ञ ने रहस्य वतलाते हुए कहा—प्रथम कङ्काल सच्चे वक्ता का है एव दूसरा सच्चे श्रोता का है। सच्चे वक्ता जो कुछ कहते हैं, खुद पालन करते हैं, अत उनकी हड्डिया गल जाती हैं तथा सच्चे श्रोताओ के हृदय मे ज्ञान के तीर लगते हैं। अत हड्डिया सच्छिद्र वन जाती हैं।

२५ अयोग्य श्रोता

१ केड बैठा ऊंघाय, जाय केइ अघविच ऊठी।
वात कर केड विढै, करै वलि कोटि अपूठी॥
केइ स्तवै निज जात, धर्ममति मानै झूठी।
केइ कहै कूडा हेतु, वात सहु पाडै पूठी॥
गलै हाथ देई करी, गोडा विच घालै गला।
कहै "कृपा" एहवी सभा, तव कवि नही दाखै कला॥

२ निष्फल श्रोता मूढ़ पै, वक्ता-वचनविलास।
हाव-भाव ज्यो तीय कै, पति अन्धे के पास॥

—वृन्दकवि

३ वक्ता श्रोता वाहिरा, वाच गमाया वैण।
मझ शृंगार पिउ पै चली, पिउ का फूटा नैण॥

४ गाय-गाय ने तोडी घाँटी, तो पिण न मिटी मन री आटी।
खाय-खाय नै वधायो मास, डूवी ऊपर तीन वास।

५ आंधो सुसरो घूंघट वहू, कथा सुणवा ने आवे सहू।
कहे किम्ं नें समझे किमूं आखनो ओपध पूठे घसूं।
ऊंडलो कूओ नें फूटलो वोक, कहे अक्खो ए सगला फोक।

—अखाभक्त

६ **कृष्ण की वासुरी जैसे श्रोता**—एक वार पतझड के समय कृष्ण ने वासुरी वजाई। सारा वन हरा हो गया। द्वारकानिवासी आश्चर्यचकित होकर इस विपय की खूब चर्चा कर रहे थे। एक व्यक्ति ने प्रश्न किया—सारा वन हरा हो गया तो वासुरी हरी क्यो नही हुई ? साधारण मनुष्य इसका उत्तर न दे सके। एक विशेपज्ञानी ने कहा—भाई ! वृक्षो ने कृष्ण के शब्द ग्रहण कर लिये थे, इसलिये वे हरे-भरे हो गये। वासुरी पोली थी, उसने कृष्ण की आवाज को विल्कुल नही पकडा, अत वह सूखी की सूखी रह गई। जो श्रोता सुनकर कुछ ग्रहण नही करते, उन्हें कृष्ण की वासुरी के समान कहा जाता है।

७ दीघी पिण लागी नही, रीते चूल्हे फूंक।
गुरु विचारा क्या करे, चेला ही मे चूक ॥

२६ मूर्ख श्रोता

१ जैनमुनि भगवतीसूत्र का व्याख्यान कर रहे थे। उसमे बार-बार गोयमा-गोयमा आता था। एक बुढिया कहने लगी—गाव के श्रावक कितने निर्दयी हैं। बेचारे साधु ओय मा!—ओय मा! करके चिल्लाते है, फिर भी इन्हे व्याख्यान से छुट्टी नही देते। सारे लोग बुढिया की मूर्खता पर हस पडे।

२ पडितजी भागवत की कथा करते थे। बुढिया खूब सिर हिलाकर सुनती थी। सातवें दिन वह रोने लगी। पडित ने पूछा तब बुढिया ने कहा—भाई! मेरी भैंस की पाडी तेरी तरह चिल्ला चिल्लाकर आठवें दिन मर गयी। तेरे भी कल आठवा दिन है। यदि तू मर जायेगा तो पीछे तेरे बाल-बच्चे क्या करेंगे? इसी दु ख से रो रही हू और मैं कथा मे कुछ नही समझती।

३ दाढीवाले पडितजी के भाषण मे एक बुढिया की आखो से आसू टपकते थे। पडितजी ने उससे रोने का कारण पूछा? बुढ़िया ने कहा—तेरी दाढी ठीक मेरे बकरे जैसी है। बोलते समय मु ह के साथ जब वह हिलती है, मुझे अपना बकरा (जो अभी-अभी मर गया) याद आ जाता है और मैं रोने लगती हू।

४ रामायण समाप्त हुई। वक्ता ने पूछा, क्यो भाई! कथा समझ मे तो आ गई न? एक श्रोता ने कहा—और तो ठीक! राक्षस राम था या रावण? तथा सीता का हरण हुआ था, वह फिर मनुष्य बनी या हिरण ही रह गई?

५ सामवेद का उच्चारण करने हुये पडित को पागल समझकर मूर्ख श्रोताओ ने लोहा गर्म करके डाम लगा दिया ।

६ **उल्टा ज्ञान लेनेवाले मूर्ख श्रोता**—पडित ने महाभारत की कथा की। एक चौधरी ने कहा—महाराज बहुत देर हो गई। अगर कुछ पहले यह कथा सुन लेता तो दुर्योधन की तरह भी मैं अपने भाइयो को वनवास दे देता।

चौधरण ने कहा—यदि यह ज्ञान मुझे कुछ पहले मिल जाता तो मं भी शादी से पूर्व दो-चार पुत्र पैदा करके कुन्ती के समान सतियो मे अच्छा नवर पा लेती। (उसने कर्ण को उत्पन्न किया था।)

पुत्र-वधू ने सास-ससुर को भी मात कर दिया, वह कहने लगी—मैं तो जानती थी कि जिससे विवाह हो गया, स्त्री के लिए वही परमेश्वर है, दूसरे पुरुप की इच्छा करना भी पाप है। लेकिन आज सुनने को मिला कि महासती द्रौपदी ने पाच पति बनाए थे। मेरा पति कई वर्षो मे राज-यक्ष्मा (टी बी) का शिकार है। अत अव मैं भी दूसरा पति बनाऊँगी और उसके साथ आनद से जीवन व्यतीत करूगी। वेचारा पण्डित इन सबका मुंह ताकने लगा एव बोला—भले माणसो! तुमने यह क्या ज्ञान लिया, सारा वेडा ही गर्क कर डाला।

२७ निद्रालु श्रोता

१ पडितजी की कथा मे वजाज नीद लेने लगा। स्वप्न मे दुकान पर ग्राहक आया। वजाज ने कपडा दिखाकर नौ आने गज कहा। ग्राहक ने छ आने गज लेना चाहा। आखिर वजाज ने पडितजी का साफा फाडते हुए कहा—अच्छा जा-जा ! सात आने गज मे ले जा ! सुवह का वक्त है, वेचारे पडितजी देखते ही रह गये।

१ इसी तरह पुस्तक के पन्ने पलटने की आवाज सुनकर एक निद्रालु-श्रोता ने अनाज की ढेरी पर गाय आई समझकर लाठी चला दी एव पडितजी का सिर फूट गया।

३ एक सेठ व्याख्यान मे नीद ले रहा था। सेठानी ने दो पतासे मुह मे डाल दिये। दूसरी वार कुत्ता मूत गया और व्याख्यान मीठा-खारा हो गया।

तीसरा कोष्ठक

शरीर

उत्पत्तिसमयादारभ्य प्रतिक्षणं शीर्यन्त इति शरीराणि ।

—स्थानाग ५।१।३६५ टीका

उत्पत्तिसमय से लेकर प्रतिसमय क्षीण होते हैं अत 'शरीर' कहलाते है ।

भोगायतन शरीरम् ।

—नीतिवाक्यामृत ६।३२

जो शुभ-अशुभ कर्म भोगने का स्थान है, वह शरीर है ।

वागादि पञ्च श्रवणादि पञ्च, प्राणादि पञ्चाऽभ्रमुखादि पञ्च ।
बुद्ध्याद्यविद्यापि च काम-कर्मणी, पुर्यष्टकं सूक्ष्मशरीरमाहु ॥

—विवेकचूडामणि ६६

वाग्आदि कर्मेन्द्रियां, श्रवणादि ज्ञानेन्द्रियां, प्राणादि पाच वायु, आकाशादि पाच तत्त्व, बुद्धि, अविद्या, काम और कर्म—ये पुर्यष्टक या सूक्ष्मशरीर कहलाते हैं ।

देहादिन्द्रियविषया, विषयनिमित्ते च सुख-दु खे ।

—प्रशमरति

इस शरीर से इन्द्रियसम्बन्धी शब्दादि-विषयो की उत्पत्ति होती है एव विषयसेवन से सुख-दु ख की परपरा चालू होती है ।

५ शरीर का वजन—

शरीर की लम्बाई जितनी इंच हो, वजन यदि उतने ही सेर हो तो वह ठीक माना जाता है। २५-३० वर्ष की आयु के बाद मनुष्य का कद बढ़ना बद हो जाता है।

३५ से ५० तक की आयु मे वजन का बढ़ना खराब है। हल्के एव चुस्त मनुष्यो की आयु लम्बी होती है। यह दो लाख व्यक्तियो की परीक्षा के बाद बीमा-कम्पनियो का निर्णय है।

—कविराज हरनामदास

६ शरीर का दाहिना अग—

मस्तिक का बाया भाग दाहिने अग को और दाहिना भाग बाएं अग को सचालित करता है। डॉक्टरो का मत है कि विचार-गर्भित वाणी के उत्पादक, उत्तेजक व सचालक ततु मस्तिष्क के बाए भाग मे रहते है। अतएव दाहिना अग सक्रिय रहता है। अधिकारी फैसला देते समय, लेखक लिखते समय एव वक्ता बोलते समय प्राय दाहिने हाथ को विशेष हिलाते-चलाते हैं। प्राचीन मानसशास्त्री दक्षिण अग का फड़कना इसीलिये उत्तम मानते थे, क्योकि बाए मस्तिष्क मे उत्पन्न नये विचार दक्षिणअग मे ही क्रिया करते हैं। सूर्पणखा ने शीघ्रमुद्धियता पादो, जयार्थमिह दक्षिण।[1] ऐसा इसीलिये कहा था।

० क्षत्रिय तलवार को बायी तरफ इसलिये लटकाते है कि काम पड़ते ही दाहिने हाथ से सुगमता के साथ निकाल लें।

—आत्मविकास, पृष्ठ २२-२३ से

---

१ वाल्मीकिरामायण

७ शरीर कंपन के चार कारण—

१ क्रोध का आवेश, २ मैथुन का आवेश, ३ चर्चा मे पराजय, ४ कम्पनवात ।

—आत्मविकास, पृष्ठ ६४-६५

८ पंच सरीरगा पन्नत्ता, तंजहा—

ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ।

—स्थानांग ५।१।३९५

पांच शरीर कहे हैं—

(१) औदारिक, (२) वैक्रिय, (३) आहारक, (४) तैजस, (५) कार्मण ।

१ पांच तत्त्व—वैज्ञानिक मतानुसार शरीर में मुख्यतया पांच तत्त्व हैं—१—प्रोटीन (मानजातीय-पदार्थ), २—चर्बी (स्निग्ध-पदार्थ घी-तेल आदि), ३—पार्थिवपदार्थ (लोहा-चूना आदि), ४—कार्बोहाईड्रेट (शर्कराजातीय-पदार्थ), ५—जल। इसके अलावा ऑक्सीजन, हाइड्रोजन आदि २३ तत्त्व और भी हैं। आक्सीजन के अतिरिक्त सभी पदार्थ पूर्वोक्त पांचों तत्त्वों में प्रविष्ट हो जाते हैं। शरीर में जल ५७ प्रतिशत, पार्थिव पदार्थ २० प्रतिशत एवं चर्बी, प्रोटीन व शर्करा ये तीनों मिलकर २३ प्रतिशत हैं। उक्त परिणामों में पांचों तत्त्व रहने से धातुएं सक्रिय रहती हैं।

२ शरीर में पांचभूत (तत्त्व)—

त्वक् च मांसं तथाऽस्थीनि, मज्जा स्नायुश्च पञ्चमम्।
इत्येतदिह संघातं, शरीरे पृथिवीमयम् ॥२०॥
तेजो ह्यग्निस्तथा क्रोध-श्चक्षुरुष्मा तथैव च।
अग्निर्जरयते यश्च, पञ्चाग्नेया. शरीरिणाम् ॥२१॥
श्रोत्रं घ्राणं तथाऽऽस्यं च, हृदयं कोष्ठमेव च।
आकाशात् प्राणिनामेते, शरीरे पञ्च धातवः ॥२२॥
श्लेष्मा पित्तमथ स्वेदो, वसा शोणितमेव च।
इत्यापः पञ्चधा देहे, भवन्ति प्राणिनां सदा ॥२३॥
प्राणात् प्रणीयते प्राणी, व्यानाद् व्यायच्छते तथा।
गच्छत्यपानोऽधश्चैव, समानो हृद्यवस्थितः ॥२४॥

उदानादुच्छ्वसिति च, प्रतिभेदाच्च भाषते ।
इत्येते वायव पञ्च, चेष्टयन्तीह देहिनम् ॥ २५ ॥

—महाभारत, शान्तिपर्व-अ० १८४

पृथ्वी—शरीर मे त्वचा, मास, हड्डी, मज्जा और स्नायु—इन पाँच वस्तुओ का समुदाय पृथ्वीमय है ॥२०॥

अग्नि—तेज, क्रोध, नेत्र, उष्मा और जठरानल—ये पाच वस्तुए देहधारियो के शरीर मे अग्निमय हैं ॥२१॥

आकाश—कान, नासिका, मुख, हृदय और उदर, प्राणियो के शरीर मे—ये पाच धातुमय खोखलापन आकाश से उत्पन्न हुए हैं ॥२२॥

जल—कफ, पित्त, स्वेद, चर्बी और रुधिर—प्राणियो के शरीर मे रहने वाली ये पाच गीली वस्तुए जलरूप हैं ॥२३॥

वायु—प्राण से प्राणी चलने-फिरने का काम करता है, व्यान से व्यायाम (बलसाध्य उद्यम) करता है, अपानवायु ऊपर मे नीचे की ओर जाती है, और समानवायु हृदय मे स्थित होती है ॥२४॥

उदान से पुरुप उच्छ्वास लेता है और कण्ठ, तालु आदि स्थानो के भेद से शब्दो एव अक्षरो का उच्चारण करता है। इस प्रकार ये पांच वायु के परिणाम हैं, जो शरीरधारी को चेष्टाशील बनाते हैं ॥२५॥

३ इस शरीर मे सात बट्टी साबुन है, दस गैलन पानी है, स्नानघर पोता जाय, इतना चूना है, एक डब्बी सक्कर की गोलियाँ हैं। दो इच लम्बी कील जितना लोहा है, नव हजार पेंसिलें बने इतना कार्बन है, बाईस-सो दियासलाइयाँ बनें इतना फासफर्स है और एक चम्मच मेगनेसिया है।

—डा० हेरोल्ड ह्वीलर

४ शरीर मे माता-पिता के अग—जिन अगो मे रुधिर का भाग अधिक होता है, वे अग माता के कहलाते हैं। जिन अगो मे वीर्य का भाग अधिक होता है, वे अग पिता के कहलाते है। जिनमे दोनो चीजे बराबर होती हैं, साधारणतया वे अग दोनो के कहलाते हैं। इस शरीर मे माता के तीन

अग हैं—मास, लोही और मस्तक की मज्जा। पिता के तीन अग हैं—हड्डी, हड्डी की मज्जा और केश-श्मश्रु-रोम तथा नख। (सिर के बाल-केश, दाढी-मूछ के बाल श्मश्रु और काख आदि के बाल रोम कहे जाते है।)

—स्थानाग ३।४।२०६

५ पुरुष के पाच कोठे होते हैं और स्त्री के छ कोठे होते है। (एक मे गर्भ रहता है।) पुरुष के मल निकलने के नव द्वार (दो कान, दो आंख, दो नाक, मुँह, मल-द्वार और मूत्र-द्वार) होते हैं और स्त्री के ग्यारह (दो स्तन अधिक) द्वार होते हैं।

—लोकप्रकाश, पुञ्ज ७ प्रश्न ५११

६ शरीरस्थ धातुएँ और मल—

रसाद् रक्तं ततो मांसं, मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च।
अस्थ्नो मज्जा तत· शुक्र, शुक्राद् गर्भ· प्रजायते ॥६२॥
कफ· पित्त मला· खेषु, प्रस्वेदो नख - रोम च।
स्नेहोऽक्षित्वग् विशामोजो, धातूना क्रमशो मला· ॥६३॥
केचिदाहुरहोरात्र्यात्, षड्हादपरे परे।
मासेन याति शुक्रत्व-मन्न पाकक्रमादिभि ॥६५॥

—अष्टागहृदय-शरीरस्थान, अध्याय २

खाये हुए पदार्थ का सार प्रथम हृदय मे पहुचता है, वहा से व्यानवायु द्वारा हृदयस्थ दश मूलशिराओ मे होकर सब देह मे फैलता हुआ रस बनता है। फिर क्रमश रस से रक्त, रक्त से मास, मास से मेद (चर्बी), मेद से अस्थि (हड्डी) अस्थि मे मज्जा (हड्डी का रस), मज्जा से शुक्र और शुक्र से गर्भ की उत्पत्ति होती है ॥६२॥

रस धातु का मल कफ है, रक्त का मल पित्त है, मास का मल वह है, जो नासिका आदि के छिद्रो मे निकलता है, मेद का मल पसीना है, अस्थियो का मल नख और रोम है, मज्जा का मल नेत्र, त्वचा और पुरीष-विष्ठा सम्बन्धी स्नेह है और शुक्र का मल ओज है ॥६३॥

कई आचार्य कहते हैं कि पाकक्रम द्वारा पच्यमान अन्न-रस-रक्तादि क्रम-पूर्वक एक दिन-रात मे शुक्र वन जाता है। कई-कई कहते हैं कि छह दिन मे अन्न से शुक्र वनता है। अन्य (पराशर) आचार्य कहते हैं कि एक महीने मे आहार से शुक्र वनता है ॥६५॥

७ इस शरीर मे आठ सेर खून होता है, चार सेर चरवी होती है, दो सेर मस्तक की मज्जा होती है, आठ सेर मूत्र होता है, दो सेर विष्ठा होती है, आधा सेर पित्त होता है, आधा सेर श्लेष्म होता है और एक पाव वीर्य होता है। उन सव धातुओ मे जव विकार होता है, तव शरीर का वजन घटता है या वढता है।

—लोकप्रकाश, पुञ्ज ७ प्रश्न ११

३ शरीर का महत्त्व

१ शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।

—कुमारसंभव ५।३३

शरीर धर्म का सर्वप्रथम साधन है ।

२ धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां, मूलमुक्तं कलेवरम् ।

धर्म-अर्थ-मोक्ष-काम—इन चारों का मूलकारण शरीर ही है ।

३ यह तुम्हारा शरीर पवित्र-आत्मा का मंदिर है ।

—बाइबिल

४ यदि कोई पवित्र वस्तु है तो मनुष्य-शरीर ही है ।

—ह्विटमैन

५ शरीररक्षा—

(क) शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः ।
शरीरात् स्रवते धर्मः, पर्वतात् सलिलं यथा ।

—स्थानांग ५।३ टीका

धर्मसंयुक्त शरीर की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये । क्योंकि पर्वत में पानी की तरह शरीर में भी धर्म प्रवाहित होता है ।

(ख) मन जावे तो जाणदे, दृढकर राख शरीर ।
खैंचे विना कमान के, किस विध निकले तीर ?

(ग) न कार्यव्यासङ्गे शरीरकर्मोपहन्यात्।

—नीतिवाक्यामृत १६।६

कार्य की व्यस्तता मे भी शरीर के क्रियाकाण्डो का उपहनन नही करना चाहिए।

(घ) विना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति असभव है।

—रामकृष्ण

६ शरीर किसलिए ?

(क) परोपकारार्थमिद शरीरम्।
यह शरीर परोपकार के लिए है।

(ख) पुव्वकम्मक्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे।

—उत्तराध्ययन ६।१४

पूर्वसचित कर्मो का नाश करने के लिये इस शरीर को धारण करो।

७ अनेकदोषदुष्टोऽपि, काय. कस्य न वल्लभ.।
अनेक दोषो मे दुष्ट होने पर भी यह शरीर सबको प्यारा लगता है।

८ देहस्नेहोऽस्ति दुस्त्यज.।

—कथासरित्सागर

देह का स्नेह छोडना कठिन है।

४ शरीर की अनित्यता

१ इम सरीरं अणिच्चं, असुइ असुइसभव । —उत्तराध्ययन १६।१३

यह शरीर अनित्य हैं, अशुचि है और अशुचि-रज वीर्य से उत्पन्न हुआ है ।

२ अमेध्यपूर्णे कृमि जाल संकुले, स्वभावदुर्गन्धिनि शौचवर्जिते ।
कलेवरे मूत्र-पुरीपभाजने, रमन्ति मूढा विरमन्ति पण्डिता ।

—पदचरित्र, पृष्ठ ११४

यह शरीर अशुचि-पदार्थो मे भरा हुआ है, कृमि-समूह मे व्याप्त है, स्वभाव से दुर्गन्धिवाला है, पवित्रता-रहित है और मल-मूत्र का भाजन है—ऐसे शरीर मे मूर्ख रमण करते है और पण्डित विरक्तभाव रखते हैं ।

० अकुरडी पर गुरु-शिष्य—गुरु-शिष्य जा रहे थे । अकुरडी आई । शिष्य ने मुँह विगाड कर कहा, जल्दी चलिए दुर्गन्धि आ रही है । गुरु ठहर गये, शिष्य ने चलने के लिए आग्रह किया । गुरु बैठकर कहने लगे—आवाज आ रही है और अकुरडी कह रही है कि मैं कल शाम को मिठाई के रूप मे हलवाइयो के यहाँ विराजमान थी । मनुष्य आते गये और मुझे खरीद-खरीद कर खाते गये । मैं रात-रात उनके पेट मे रही अतएव विष्ठा बनकर यहाँ सड रही हू । शिष्य समझ गया कि जिससे घृणा कर रहा हू, शरीर मे वही गन्दगी भरी पडी है ।

३ आहारोपचया देहा, परीसहपभगुरा । —आचारांग ८।३

आहार से पुष्ट किया हुआ यह शरीर परीषहो के सम्मुख क्षण-भगुर हो जाता है ।

४ जं पि य इम सरीरं उराल आहारोवइयं,
इमं पि य अणुपुव्वेण विप्पजहियव्व भविस्सति ।

—सूत्रकृतांग २।१।१३

जो यह आहार से उपचित उत्तम शरीर है, इसे भी क्रमश अवधि पूरी होने पर छोड देना पडेगा।

५ जे केई सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो।
मणसा काय वक्केण, सव्वे ते दुक्खसभवा॥

—उत्तराध्ययन ६।१२

जो अज्ञानी शरीर मे, वर्ण मे, रूप-लावण्य मे, मन, वचन, काया से आसक्त हैं, वे सब दु ख भोगनेवाले हैं।

६ असासए सरीरम्मि, रइ नोवलभामह।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणवुव्वुयसन्निभे॥

—उत्तराध्ययन १९।१३

पानी के बुलबुले के समान अशाश्वत शरीर मे मुझे प्रीति नही है, क्योंकि यह तो पहले या पीछे छोडना ही पडेगा।

७ मोह-ममता नै मन्त्र, मरै तो मारिये,
कनक-कामणी कलक, टलै तो टालिये।
साधा सेती प्रीत, पलै तो पालिये,
प्रभु भजन मे देह, गलै तो गालिये॥

—एक युवकसन्यासी

●

५

शरीर की निंदनीयता

१ इदं शरीरं बहुरोगमन्दिरम् ।

—धर्मकल्पद्रुम

यह शरीर अनेकानेक रोगों का घर है ।

२ विग्रहा गदभुजङ्गमालया ।

—धर्मबिन्दु

यह शरीर रोगरूप सर्पों का घर है।

३ को वास्ति घोरो नरकः ? स्वदेह ।

—शंकरप्रश्नोत्तरी

दृश्यमान घोरनरक कौन है ? अपना शरीर ।

४ हितान्नपानौषधिवर्धितं वपु, कृतघ्नमन्ते न समं मयैष्यति ।

—ब्रह्मानन्द-गीता

हितकारी अन्न-पानी एवं औषधियों से पुष्ट किया हुआ भी यह कृतघ्न-शरीर मरते समय साथ नहीं चलेगा ।

५ साधो ! इह तनु मिथ्या जानो !
या भितर जो राम बसतु है,
साचो ताहि पिछानो !!

—गुरुग्रन्थसाहब, महल्ला ९

६ शरीर की उपमाएँ

१ तुलसी ! काया खेत है, मनसा भयो किसान।
पाप-पुण्य दोउ बीज है, बुवै सो लुने निदान ॥

२ यह शरीर एक मोटर है, इसे चलानेवाला ड्राइवर दूसरा ही है। यदि यह स्वतन्त्ररूप से चलता, तो इसे जलाया क्यो जाता ? बच्चा मरने के बाद क्यो नही बढता ? प्यारा क्यो नही लगता ? खो जाने से ही हा ! हा ! होने लगता था, अब क्यो नही छुआ जाता ? क्या निकल गया ? थैली से दाम !

३ यह शरीर एक यत्र है, कर्त्ता चेतन-अन्दर बैठा है, अन्न-जल खीच रहा है, सुख-दुःख का अनुभव कर रहा है एव मेरा-मेरा पुकार रहा है। लेकिन इतना नही सोचता कि मैं कौन हू ?

४ यह शरीर एक विचित्र मकान है, क्योकि मालिक के बाहिर जाने पर भी मकान खडा रहता है, किन्तु मालिक के निकलते ही यह गिर जाता है।

५ यह तन एक पक्षी का घोसला है। एक-दूसरे के घोसले से प्यार करते हैं, किन्तु यह नही पूछते कि ऐ घोसलेवालो ! तुम कहा से आये हो और कौन हो ?

●

७

शरीर का व्यायाम

१ लाघवं कर्मसामर्थ्यं, स्थैर्यं दुःख-सहिष्णुता ।
दोपक्षयोऽग्निवृद्धिश्च, व्यायामादुपजायते ॥
—चरकसंहिता ७।३२

शरीर मे हल्कापन, कार्य करने की शक्ति, स्थिरता, दुःख सहने की क्षमता, रोग का क्षय और अग्नि की वृद्धि—शारीरिक व्यायाम से ये लाभ होते हैं ।

२ अव्यायामशीलेषु कुतोऽग्निदीपनमुत्साहो देहदार्ढ्यं च ।
—नीतिवाक्यामृत २५।१६

व्यायाम न करनेवालो के अग्निदीपन, उत्साह एव शरीर की मजबूती कहा ?

३ आदेहखेदं व्यायामकालमुशन्त्याचार्याः ।
—नीतिवाक्यामृत २५।१७

शरीर मे खिन्नता न हो, वहां तक व्यायाम का समय है—ऐसा आचार्य कहते हैं ।

४ श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णा, रक्तं, पित्त प्रतामकः ।
अतिव्यायामतः कासो, ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥
—चरकसंहिता ७।३३

अधिक व्यायाम करने से थकावट, क्लम, धातुक्षय, प्यास की अधिकता, रक्तपित्त रोग, श्वास, कास, ज्वर, वमन—ये रोग उत्पन्न हो जाते हैं ।

५ अंतरे खोतरे कसरत करे, देव न मारे अपने मरे।

—हिन्दी कहावत

६ व्यायाम के अयोग्य व्यक्ति—

> अतिव्यवाय - भाराध्वकर्मभिश्चातिकर्शिताः।
> क्रोध-शोक-भयायासैः, क्रान्ता ये चापि मानवाः॥
> वाल-वृद्ध-प्रवाताश्च, ये चोच्चैर्वहुभापकाः।
> ते वर्जयेयुर्व्यायामं, क्षुधितास्तृपिताश्च ये॥

—चरकसंहिता ७।३६-३७

अधिक मैथुन करनेवाला, अधिक भार वहनेवाला, अधिक चलने से, जो कृश हो गया हो, जो क्रोध, शोक, भय, परिश्रम से आक्रान्त हो तथा जो वालक हो, वृद्ध हो, प्रवल-वात प्रकृतिवाला हो, उच्चस्वर से अधिक वोलनेवाला हो, भूखा-प्यासा हो—इतने व्यक्ति व्यायाम के अयोग्य माने गए हैं।

७ धनुष्य-वाण चलाने का व्यायाम १५ वी १६ वी शताव्दी तक इग्लैण्ड मे अनिवार्य था। भारत मे तो सर्वमान्य था ही।

८ वुद्धि के व्यायामो मे एक शतरंज का खेल भी है। इसका आविष्कार रावण ने मदोदरी के लिए किया था। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को सिखाया था। वुद्धकालीन भारत मे इसका प्रचार काफी वढा-चढा था।

—आत्मविकास, पृष्ठ १४०

●

८

शरीर का वेग

१ वेगान्न धारयेद् वात - विण् - मूत्र-क्षव-तृट् - क्षुधाम् ।
निद्रा- कास - श्रम-श्वास - जृम्भा-ऽश्रुच्छर्दि - रेतसाम् ।।

—अष्टाङ्गहृदय-सूत्रस्थान ४।१

शरीर के वेग १३ प्रकार के है—१ वात (ऊर्ध्ववात-अधोवात), २ मल, ३ मूत्र, ४ छीक, ५ प्यास, ६ भूख, ७ निद्रा, ८ खासी, ९ श्रम-जनित श्वास, १० जमाई-उबासी, ११ आसू, १२ वमन, १३ वीर्य—इनके वेगो को नही रोकना चाहिए, रोकने से रोग की उत्पत्ति होती है।

२ मुत्तनिरोहे चक्खुं, वच्चनिरोहे जीविय चयति ।
उड्ढनिरोहे कोढं, सुक्कनिरोहे भवइ अपुमं ।।

मूत्र का वेग रोकने से नेत्र-ज्योति नष्ट होती है, मल के वेग को रोकने से जीवनशक्ति नष्ट होती है, ऊर्ध्ववायु को रोकने से कुष्ठरोग एव वीर्य के वेग को रोकने से पुरुपत्व नष्ट होता है।

३ मन के वेग—

धारयेत्तु सदा वेगान्, हितैषी प्रेत्य चेह च ।
लोभेर्ष्या - द्वेष-मात्सर्य - रागादीना जितेन्द्रिय. ।।

—अष्टाङ्ग-हृदयसूत्रस्थान ४।२४

लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, मात्सर्य एव रागादि—ये मानसिक वेग है। आत्महितैषी और जितेन्द्रियपुरुष को चाहिए कि वह इन्हे रोकने की चेष्टा करे।

६ वस्त्र-आभूषण

१ वस्त्र-आभूषण शरीर को सुशोभित एव अलकृत करनेवाले हैं। मनुष्य ने जब से सामाजिकरूप धारण किया है, तभी से इनकी आवश्यकता प्रतीत हुई।

२ वासः प्रधानं खलु योग्यताया,
वासोविहीनं विजहाति लक्ष्मीः।
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ तनूजा,
दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः॥

वस्त्र योग्यता का प्रधान कारण है। वस्त्रहीन को लक्ष्मी छोड देती है। देखो! पीतवस्त्रधारी विष्णु को समुद्र ने अपनी पुत्री लक्ष्मी दी एवं दिगम्बर महादेव को विष दिया।

३ वस्त्र पहनने मे तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं—वस्त्र आरामदेह हों, सस्ते हों और स्वच्छ हों।

—'जीवनलक्ष्य' से

४ कपडा सपेत, घोडा कमेत।

० कपडा कहे—तूं म्हारी इज्जत राख! हूं थारी राख सूं।

० कपड़ो फाट गरीबी आई, जूती फाटी चाल गमाई।

—राजस्थानी कहावतें

५ कपडा पहनो तीन वार—बुध-बृहस्पति-शुक्रवार।

६ अद्भुत गाउन :—फ्रेंच-सुन्दरी श्रीमती 'पाप-सिगर फ्रैंक्वाइस हार्डी' ने एक बार सुवर्ण तथा हीरों से निर्मित २० लाख ४० हजार डालर (लगभग १ करोड ४३ लाख रुपयों) की कीमत का गाउन पहनकर प्रथम अंतरराष्ट्रीय हीरक मेले के उद्घाटन के अवसर पर प्रदर्शन किया। संसार के इस सर्वाधिक मूल्यवान गाउन का निर्माण पेरिस की फैशन बनानेवाली संस्था "पैकोराबान" ने किया था।

—हिन्दुस्तान, २० मई, १९६८

श्रीमती पाप सिगर फ्रैंक्वाइस हार्डी
(बहुमूल्य कीमती गाउन की सुरक्षा के लिए सशस्त्र पहरेदार फ्रेंच-सुन्दरी के साथ)

७ पोशाक पर खर्च :—एक राजा (फिलिप चतुर्थ) इतना खर्चीला था कि उसने अपने ४४ वर्षों के शासनकाल मे १ करोड ४४ लाख ३८ हजार डालर तो केवल अपनी पोशाक पर खर्च किए थे ।

—नवभारतटाइम्स, २२ जून १९६९

८ अद्भुत गलीचा—१८ हजार रत्न जडा हुआ 'भारत की शान' नामक यह गलीचा, जो ७५ इ च लम्बा और ५-५ इ च चौडा है, ओटावा (कनाडा) मे प्रदर्शनी के लिए रखा गया । कीमत चार लाख डालर है ।

९ आभूषण—

० गहणा धायाँ रा सिणगार, भूखाँ रा आधार ।

० एक रूप आपरो, सहँस रूप कपडो ।
लाख रूप गहणो, करोड रूप नखरो ।।

—राजस्थानी कहावतें

१० वस्त्रहीनस्त्वलंकारो, घृतहीनं च भोजनम् ।
स्तनहीना च या नारी, विद्याहीन च जीवनम् ।।

—सुभाषितरत्नभाडागार, पृष्ठ १६८

जिस प्रकार विना घृत का भोजन, विना स्तन की स्त्री और विना विद्या का जीवन शोभित नही होता, उसी प्रकार विना वस्त्र का आभूपण भी शोभा नही देता ।

०

स्वास्थ्य-आरोग्य

१ धर्मार्थ-काम-मोक्षाणा-मारोग्यं मूलमुत्तमम् ।

—चरकसहिता

धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष—इन सबका मूलसाधन आरोग्य (स्वास्थ्य) है।

२ लाभानां श्रेष्ठमारोग्यम् ।

—महाभारत

सब लाभों में आरोग्य—लाभ श्रेष्ठ है।

३ किं सौख्यमरोगिता जगति जन्तोः ।

प्रश्न—सुख क्या है ?

उत्तर—प्राणियों का रोगरहित रहना।

४ प्रथम महान् संपत्ति है सुन्दर स्वास्थ्य ।

—एमर्सन

५ गुड हैल्थ अबोव वैल्थ ।

—अंग्रेजी कहावत

तंदुरुस्ती धन से बढ़कर है।

६ एक तंदुरुस्ती हजार नियामत ।

—पारसी कहावत

सेहत अच्छी तो सब जगह आराम !

७ अपने बदन को तुम अपना घर समझो ।

—अकबर

८ जिसके पास स्वास्थ्य है, उसके पास आशा है। और जिसके पास आशा है, उसके पास सब कुछ है।

—अरबी लोकोक्ति

९ सुखार्था सर्वभूताना, मता सर्वा प्रवृत्तय:।
सुखं च न विना स्वास्थ्यं, तस्मात् स्वास्थ्यपरो भवेत्॥
सब जीवो की सब प्रवृत्तिया सुख के लिए होती है और सुख स्वास्थ्य के के विना हो नही सकता। अत मनुष्य को स्वास्थ्य प्राप्त करने मे तत्पर बनना चाहिए।

१० अगर तू स्वस्थ शरीर चाहता है, तो उपवास और टहलने का प्रयोग कर। अगर स्वस्थ आत्मा चाहता है तो उपवास और प्रार्थना का अभ्यास कर। टहलने से शरीर को व्यायाम मिलता है और प्रार्थना से आत्मा को। उपवास दोनो को शुद्ध करता है।

—पवर्स

११ त्रय उपस्तम्भा इति-आहार, स्वप्नो, ब्रह्मचर्यम्।

— चरकसहिता-सूत्रस्थान २।३५

स्वास्थ्य को कायम रखने के लिये तीन उपस्तम्भ-आधार है—१—उचित आहार, २—उचितनिद्रा, ३—ब्रह्मचर्य।

११ स्वस्थ-नीरोग

१ समदोष. समाग्निश्च, समधातुमलक्रिय. ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमना , स्वस्थ इत्यभिधीयते ।।

—सुश्रुत १५।४१

जिसके दोष-वात-पित्त-कफ - अग्नि-पाचनशक्ति, धातुएं रस-रक्त-मास आदि तथा मल-मूत्र की क्रियाएं सम हो और जिसके आत्मा, इन्द्रिया एव मन प्रसन्न हो, उसे स्वस्थ-नीरोग कहते हैं ।

२ एक स्वस्थ-शरीर आत्मा के लिए अतिथिशाला के समान है और अस्वस्थ वन्दीगृह के समान ।

— वेकन

६ चरकऋषि ने चरकसंहिता का निर्माण किया, उसका काफी प्रचार हुआ। बडे-बडे वैद्यराज चरक की औषधियां प्रयोग मे लेने लगे । एक बार वैद्यो की परीक्षा करने ऋषि पक्षीरूप मे ग्रामो-नगरो मे घूमते हुए वैद्यो के द्वारो पर 'कोऽरुक्-कोऽरुक्-कोऽरुक्' ? यह पद्य बोलकर पूछने लगे कि नीरोग कौन है ? उत्तर मे कई वैद्य मकरध्वज खानेवालो को नीरोग कहते थे एव कई वसन्तमालती, वसन्तकुसुमाकर और च्यवनप्राश आदि का सेवन करनेवालो को नीरोग वतलाते थे । चरकजी सोचने लगे कि ये तो आरोग्य का मूल केवल औषधियो को मान बैठे है । मेरे रहस्य को बिल्कुल ही नहीं समझ पाये कि औषधिया तो विशेष-परिस्थिति मे ली जाती हैं, सामान्यतया उचित आहार-विहार से ही शरीर को स्वस्थ रखना चाहिए । यो विचार कर आगे बढ़े और ज्यो ही वैद्यराज वाग्भट्ट के

द्वार पर पूर्वोक्त पद्य बोले, वाग्भट्ट ने तीन पद्य नए बना डाले ? श्लोक इस प्रकार है —

कोऽरुक् - कोऽरुक् - कोऽरुक् ?
हितभुग् मितभुक् च शाकभुक चैव ।
सोऽरुक् - सोऽरुक् - सोऽरुक्,
शतपदगामी च वामशायी च ॥

प्रश्न—स्वस्थ कौन, स्वस्थ कौन, स्वस्थ कौन ?

उत्तर—हितभोजी-मितभोजी और शाकभोजी तथा वह स्वस्थ है—वह स्वस्थ है—वह स्वस्थ है—जो भोजन के बाद सौ कदम टहलता है एव बायी करवट शयन करता है।

३ नित्यं मिताहार-विहारसेवी, समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः ।
दाता समः सत्यपरः क्षमावा-नाप्तोपसेवी स भवत्यरोगः ॥

—चरकसंहिता

सदा परिमित-आहार एव विहार करनेवाला, विचारपूर्वक कार्य करनेवाला, समवृत्तिवाला, क्षमावान और आप्तजनो की सेवा करनेवाला—इन गुणो से युक्त व्यक्ति प्राय नीरोग होता है।

४ दायें स्वर भोजन करै, वायें पीवै नीर।
बायी करवट सोवतां, होय निरोग शरीर ॥

० भोजनांत सीधे रहे, आठ श्वास पुनि सोल।
दाहिने करवट होय के, वाम बत्तीस अमोल ॥

—स्वर-शास्त्र

५ भुक्त्वा पाणितले घृष्ट्वा, चक्षुषो यदि दीयते ।
जाता रोगा प्रणश्यन्ति न भवन्ति कदाचन ॥

भोजन के बाद हथेलियों को घिसकर यदि आंखो पर लगाया जाए तो नेत्र-सम्बन्धी पुराने रोग नष्ट हो जाते हैं, और नए उत्पन्न नही होते।

६ दूवे वालू जे करै, निरणा हरड़ै खाय।
ओकी दातण जे करै, तस घर वैद्य न जाय॥

७ वर्जित वस्तुएं—

चैत गुड वैसाखे तेल, जेठ पन्थ आसाढे वेल।
सावण दूव भादो मही, कार करेला कार्तिक दही।
अगहन जीरो पोपे धना, माह मिश्री फागुन चणा।
ये जो बारह महीना बचाय, उस घर वैद्य कभी नहीं आय॥

—राजस्थानी कहावत

१२ रोग

१ विकारो धातुवैपम्य, साम्यं प्रकृतिरुच्यते ।

—चरकसंहिता ९।४

वातादि दोपो अथवा रसादि दोपो की विपमता का नाम विकार (रोग) है और समता का नाम प्रकृति—स्वास्थ्य है ।

२—रोग का ज्ञान—

निदान पूर्वरूपाणि, रूपाण्युपशयस्तथा ।
सप्राप्तिश्चेति विज्ञान, रोगाणा पञ्चधा स्मृतम् ।।

—अष्टागहृदय-निदानस्थान १।२

रोग का ज्ञान पाच प्रकार से होता है—१-निमित्तकारण से, २-पूर्वरूप से, ३-वर्तमानरूप से, ४-अपराध से अर्थात् जो वस्तु रोगी को सुखकारक हो उससे, ५-सपूर्णलक्षणो से ।

३—रोग के कारण—

(क) हम समझ ले कि हर रोग कुदरत के अज्ञात कानून के भग का ही परिणाम है ।

—गांधी

(ख) सर्वेपामपि रोगाणां, निदानं कुपिता मला ।
तत्प्रकोपस्य सप्रोक्त, विविधाहितसेवनम् ।।

सभी रोगो का मूलकारण मलो का कुपित होना है और मल कुपित होने का कारण है विविध अहितकारी प्रवृत्तियो का सेवन करना ।

(ग) नवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया—
अच्चासणाए, अहियासणाए, अइनिद्दाए, अइजागरिएण, उच्चारनिरोहेण, पासवणनिरोहेणं, अद्धाणगमणेणं, भोयण-पडिकूलयाए, इंदियत्थ—विकोवणयाए ॥

—स्थानांग ९।८७४

रोग होने के नौ कारण हैं—
१—अतिभोजन, २—अहित भोजन, ३—अतिनिद्रा, ४—अतिजागरण, ५—मल के वेग को रोकना, ६—मूत्र के वेग को रोकना, ७—अधिक भ्रमण, ८—प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना, ९—अतिविषय सेवन करना।

(घ) अभियुक्तं वलवता, दुर्वलं हीनसाधनम्।
हृतस्वं कामिनं चोर-माविशन्ति प्रजागरा. ॥

—विदुरनीति १।१३

वलिष्ठ द्वारा दवाया गया दुर्वल, साधनहीन, जिसके धन का हरण हो गया हो वह, कामी और चोर—इन लोगो के निद्रासवधी रोग उत्पन्न होते हैं।

हृदय रोग के पांच कारण—शराव, तम्वाकू, चीनी, पत्नी की सुन्दरता, रसोइये की पाकशास्त्र मे कुशलता।

—हिंदुस्तान ८ मई १९७२

हृदयरोग विशेषज्ञो की गोष्ठी मे विशेषज्ञो का मत।

(ङ) धांनी काल री मासी।

—राजस्थानी कहावत

१३ रोग के प्रकार

वायुः पित्तं कफश्चोक्त, शारीरो दोपसंग्रह ।
मानस. पुनरुद्दिष्टो, रजश्च तम एव च॥

—चरकसंहिता १।५७

रोग दो प्रकार के हैं—शारीरिक और मानसिक ।
वात-पित्त एव कफ—ये शारीरिक रोग हैं और रज-तम—ये मानसिक रोग हैं ।

: चत्वारो रोगा भवन्ति, आगन्तु-वात-पित्त-श्लेष्मनिमित्ताः ।

—चरकसहिता-सूत्रस्थान २०।३

शारीरिक रोग चार प्रकार के होते हैं—१-आगन्तु (चोट आदि के निमित्त से आया हुआ), २-वातनिमित्त, ३-पित्तनिमित्त, ४-कफनिमित्त ।

३ साध्योऽसाध्य इति व्याधि—द्विंधा - तौ तु पुनर्द्विधा ।
सुसाध्यः कृच्छ्रसाध्यश्च, याप्यो यश्चानुपक्रम ॥

—सुश्रुत २

रोग दो प्रकार के हैं—साध्य और असाध्य । साध्य रोग के दो भेद है—सुसाध्य एव दु साध्य । असाध्य रोग भी दो प्रकार का है—याप्य (जो औषधि से एक बार शान्त होता है किन्तु मिटता नहीं) और अनुपक्रम (जिस पर औषधि का कोई असर नही होता) ।

४ सोलह रोग—

गंडी अदुवा कुट्ठी, रायंसी अवमारियं।
कणियं भिमिय चेव, कुणियं खुज्जिय तहा।
उअरिं पास मूयं च, सूणियं च गिलासिणिं।
वेवइं पीठसप्पि च, सिलिवयं मुहुमेहणिं।
सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो॥

—आचारांग ६।१

१—गडमाल, २—कोढ़, ३—क्षयरोग, ४—अपस्मार (मृगी-सन्निपात आदि), ५—नेत्ररोग, ६—शरीर की जड़ता, ७—हीनाङ्गता, ८—कुबड़ापन, ९—पेट का रोग, १०—गूंगापन, ११—शोथ-सूजन, १२—भस्मक (अतिभूख लगना), १३—कंपनवायु, १४—पीठवक्रता, १५—श्लीपद (पैर का रोग), १६—मधु-प्रमेह। क्रमशः—ये १६ रोग कहे गए हैं।

रोगी

१४

१ स्मृतिर्निर्देशकारित्व - मभीरुत्वमथापि च।
ज्ञापकत्व च रोगाणा-मातुरस्य गुण· स्मृता ॥
—चरकसहिता ६-

१—स्मरणशक्ति, २—वैद्य की आज्ञा पालने की प्रवृत्ति, ३—निर्भयता ४—रो
को अच्छी तरह बता सकना—ये चार रोगी के गुण है।

२ नह्यनाख्यातरोगस्य, रोगिणोऽपि चिकित्सितम्।
—त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरि

रोग को नही बतानेवाले रोगी की चिकित्सा नही हो सकती।

३ रोगी चाहता पलक मे, हो जाए आराम।
पर, दवा-दवा की रीति से, करती आखिर काम ॥
स्याणप उड जाती सकल, बुद्धि चपल बन जाय।
भोग-रोग के चक्र मे, चाहे जो फँस जाय ॥
लेने से पहले दवा, पूरा करो विचार।
बाज् दवा करती खडा, उल्टा नया विकार ॥
—दोहा

४ रोग अगन अर राड, जाण अलप कीजे जतन।
वधिया पछै विगाड, रोक्यो रहे न राजिया।
—सोर

५ का तो रोगी ठगीजै र, का भोगी ठगीजै।
६ नागो खावै अन्न, रोगी खावै धन ॥
—राजस्थानी

६ बीमार है वो रूह, जो के दर्दे-आशना[1] नही,
बीमार सर जो सामने, हक के झुका नही।
बीमार दिल है जिसमे, तहम्मुल[2] जरा नही,
बीमार आँख है जो के हकीकतनुमा[3] नही॥

—उर्दू शेर

७ भारत मे रोगी के पास जो कोई आता है, कुछ न कुछ दवा बता ही जाता है। अमेरिका मे यह रिवाज नहीं है, वहाँ प्रत्येक कुटुम्ब का अपना निश्चित डॉक्टर (फैमिली डाक्टर) होता है, एव उसी की सलाह से दवा दी जाती है।

१ जिसने दर्द को नही पहचाना।
२ सबर।
३ वास्तविकता को नही देखनेवाली।

१५ रोगी की सेवा

१ गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।

—स्थानांग ८

रोगी की सेवा के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए ।

२ सोऊण वा गिलाणं, पथे गामे य भिक्खवेलाए,
जदि तुरियं णागच्छति, लग्गति गुरुए सवित्थार ।

—निशीथभाष्य २९७० तथा बृहत्कल्पभाष्य ३७६९

विहार करते हुए, गाँव में रहते हुए, भिक्षा करते हुए यदि सुन पाये कि कोई साधु-साध्वी बीमार है, तो शीघ्र ही वहाँ पहुंचना चाहिये । जो साधु शीघ्र नही पहुचता, उसे गुरुचातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है ।

३ उपचारज्ञता दाक्ष्य-मनुरागश्च भर्तरि ।
शौचं चेति चतुष्कोयं, गुण- परिचरे जने ॥

— चरकसंहिता ८

१—उपचार की जानकारी, २—दक्षता, ३—रोगी के प्रति अनुराग और ४—सच्चाई रखने वाला, सेवा करनेवाले के—ये चार गुण माने गये हैं ।

१६ औषधि

१ बहुता तत्र योग्यत्व-मनेकविधकल्पना ।
संपच्चेति चतुष्कोऽयं, द्रव्याणां गुण उच्यते ।।

—चरकसंहिता ६।७

औषधि के चार गुण हैं—

१—अधिकता में मिलना ।

२—अपने रस-गुण-वीर्य-विपाकादि गुणों से युक्त होना ।

३—अनेकविधि (रस-चूर्ण-गोली-अवलेह आदिरूप से) कल्पित होने की योग्यता होना ।

४—रोग मिटाने की शक्ति होना ।

२ अप्रियमप्यौषधं पीयते ।

—नीतिवाक्यामृत ८।११

औषधि अप्रिय हो तो भी उसका सेवन किया जाता है ।

३ रुग्ण होना चाहता कोई नहीं,
रोग लेकिन आ गया जब पास हो ।
तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या ?
शमित होगा वह नहीं मिष्ठान्न से ।।

—दिनकर

४ विषस्य विषमौषधम् ।

—संस्कृत कहावत

विष की दवा विष है ।

५ एक रोगी इलाज करता-करता हार गया। डॉक्टर ने दवा लिखी, नहीं मिली। जगल मे भटकता-भटकता एक बार प्यासा हुआ। जल का एक कुण्डा भरा था, रोगी ने जलपान किया और निरोग हो गया, कारण वह जहरी सापो का ऐंठा हुआ था।

६ किं नाम भेषजं कुर्याद्, विकारे सन्निपातिके।

—त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र

सन्निपात हो जाने के वाद औषधि क्या कर सकती है?

७ वाद अजमुर्दने सुहरा वनोश दारु।

—पारसी कहावत

मरने के वाद दवाई।

८ न ह्यौषधिपरिज्ञानादेव व्याधिप्रशम.।

—नीतिवाक्यामृत १०।२

औषधि के ज्ञानमात्र मे रोग उपशान्त नही होता।

१७ कतिपय औषधियाँ

१ हरीतकी मनुष्याणा, मातेव हितकारिणी।
कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी।

—आयुर्वेद

हरड मनुष्य के लिए माता के समान हित करनेवाली है। माता कदाचित् कुपित हो जाती है, लेकिन पेट मे रही हुई हरड नही।

२ लकवे के रोगी के लिए मच्छर का डक लाभकारी है।

—डॉ. जे एफ. मार्शल

३ ट्रुथ ड्रग के इन्जेक्शन से मनुष्य सच्ची बात कह देता है।

—नवनीत, जनवरी १९५३

४ सोडियम पेंटोथल के इन्जेक्शन से अपराधी अपराध को स्वीकार कर लेता है।

—नवनीत, नवम्बर १९५२

१८ उत्तम औषधियाँ

१ सर्वोत्तम औषधियां हैं, विश्राम और उपवास।

—फ्रैंकलिन

२ अन्न दवा पानी दवा, दवा नींद अरु काम।
दवा-दवा घन! आखिरी, धर्म दवा अभिराम॥

—दोहासंदोह

३ १—सहिष्णुता, २—सम्मानदान, ३—स्वार्थत्याग, ४—सेवा, ५—समता —यह पंच सकार-चूर्ण भवरोग का नाशक है।

४ (१) शरीर की नहीं प्राण की रक्षा करो।
(२) शरीर के बजाय वातावरण को शुद्ध करो।
(३) रोगी को नीरोग रहना सिखाओ।
(४) खाओ कम और पिओ ज्यादा।
(५) सुविचारों से बढ़ी कोई औषधि नहीं है।

—दार्शनिक इब्नेसिना

१६ पथ्य

१ डाइट क्योर्स मोर दैन दी डॉक्टर्स ।

—अंग्रेजी कहावत

पथ्य ही उत्तम चिकित्सा है ।

२ विनैव भेपजैर्व्याधि पथ्यादेव विलीयते ।
न तु पथ्यविहीनस्य, भेपजाना शतैरपि ॥

पथ्य रखा जाए तो औपधि के विना ही रोग मिट जाता है, किन्तु पथ्यहीन रोगी सैकडो औपधियाँ खा लेने पर भी निरोग नही हो सकता ।

३ पथ्ये सति गदार्तस्य, किमौपधिनिपेवणैः ।
पथ्येऽसति गदार्तस्य,किमौपधि निपेवणै ॥

रोगी यदि पथ्य से रहता है तो उसे औपधि से क्या ? अर्थात् औपधि लेने की आवश्यकता नही है । और यदि पथ्य से नही रहता तो उसे औपधि से क्या ? अर्थात् उसको औपधि लेना व्यर्थ है ।

४ मुमूर्पाणा नु सर्वेपां, यत्पथ्यं तन्नरोचते ।

—वाल्मीकिरामायण ३।५३।१७

जो मरने की तैयारी मे होते हैं, उन्हे पथ्य अच्छा नही लगता ।

५ सर्वं बलवतः पथ्यमिति न कालकूटं सेवेत ।

—नीतिवाक्यामृत १६।१४

शक्तिशालियों के लिए सब कुछ पथ्य ही है—ऐसे कहकर जहर न खा लेना चाहिए ।

१ गुरोरधीताखिलवैद्यविद्य, पीयूषपाणिः कुशल क्रियासु।
गतस्पृहो धैर्यधरः कृपालुः, शुद्धोऽधिकारी भिषगीदृशः स्याद् ॥
—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृ० ४५

जिसने गुरुगम से वैद्यशास्त्र पढ़ा है, जिसके हाथ मे अमृत (यश) है, जो क्रिया-कुशल है, धन का लोभी नहीं है, धैर्यवान है, दयालु है और शुद्ध है—ऐसा वैद्य-वैद्यक का अधिकारी माना जाता है।

२ श्रुते पर्यवदातत्वं, बहुशोदृष्टकर्मता।
दाक्ष्यं शौचमिति ज्ञेय, वैद्ये गुणचतुष्टयम् ॥
—चरकसंहिता ९।६

१—आयुर्वेद का अच्छा ज्ञानी, २—अनुभवी (रोगी एव औषधियो का), ३—समय के अनुसार युक्ति का ज्ञाता, ४—पवित्र आचरणवाला—वैद्य के—ये चार गुण है।

३ मैत्री कारुण्यमार्तेषु, शक्ये प्रीतिरुपेक्षणम्।
प्रकृतिस्थेषु भूतेषु, वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधा ॥
—चरकसंहिता ९।२६

१—प्राणीमात्र से मित्रता।
२—रोगियो पर दयाभाव।
३—साध्यरोगो की प्रेमपूर्वक चिकित्सा करना।
४—मरणासन्न-रोगियो के प्रति उपेक्षाभाव रखना (उनकी चिकित्सा हाथ मे न लेना)—यो वैद्यो मे चार प्रवृत्तियाँ होनी है।

४ रोगे त्वेकौषधासाध्ये, देयमेवौषधान्तरम् ।

—त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र

एक औषधि से रोग न मिटे तो दूसरी औषधि देनी चाहिए ।

५ बादशाह ने हकीम से अपने लिए दवा पूछी । हकीम ने सवालाख रुपयों का नुस्खा लिखवाया । बादशाह भिखारी का रूप बनाकर रात को हकीम के पास गया । हकीम बोला—एक पैसे की मूली लेकर उस पर नमक लगाकर रात को छत पर रख दो एवं सुबह खालो—यों कहकर उसे पैसा भी दे दिया । आश्चर्यचकित बादशाह ने सुबह भेद पूछा ? हकीम ने कहा—ग्राहक की हैसियत के मुताबिक दवा दी जाती है ।

४ रोग रोगनिदान, रोगचिकित्सा च रोगमुक्तत्वम् ।
जानाति सम्यगेतद्, वैद्यो नायुःप्रदो भवति ।

वैद्य रोग को, रोगोत्पत्ति के कारण को, रोग की चिकित्सा को और रोग की मुक्ति को जान सकता है, किन्तु आयुष्य नही बढा सकता ।

७ अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः, किं करोति गतायुषि ?

आयुपूर्ण हो जाने पर धन्वन्तरि वैद्य भी क्या कर सकता है ?

८ डॉक्टर ने पादरी का इलाज किया । वे फीस देने लगे, तब डाक्टर ने हँसकर कहा—मैंने आपको स्वर्गवासी होते बचा दिया और आप मुझे नरकवासी होते बचा देना ।

२१

वैद्यों के प्रकार

१ भिषक्छद्मचरा सन्ति, सन्त्येके सिद्धसाधिता ।
सन्ति वैद्यगुणैर्युक्ता—स्त्रिविधा भिषजो भुवि ॥

—चरकसंहिता-सूत्रस्थान ११।४०

वैद्य तीन प्रकार के होते हैं :—

१ छद्मचर वैद्यों के समस्त उपकरण रखनेवाले ।

२ सिद्धसाधित – प्रसिद्ध वैद्यों या बड़े आदमियों के औषधालयों में काम करके नाम कमाने की चेष्टा करनेवाले ।

३ वैद्यगुणयुक्त—वैद्य के गुणों से सम्पन्न ।

२ वैद्य दो प्रकार के होते हैं—

१ प्राणाभिसर, २ रोगाभिसर । जाते हुए प्राणों को लौटाकर लानेवाला अच्छा वैद्य प्राणाभिसर कहलाता है । नए रोगों को बुलाकर रोगी को मारनेवाला मूर्खवैद्य रोगाभिसर कहलाता है ।

—चरकसंहिता-सूत्रस्थान २९।५

श्रेष्ठ-वैद्य

१ तदेव युक्तं भैषज्यं, यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजां श्रेष्ठो, रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत् ॥

—चरकसंहिता १।१३५

औषधि वही अच्छी है, जिससे आरोग्य की प्राप्ति हो, और वैद्य वही श्रेष्ठ है, जो रोगो से मुक्त कर दे।

२ हकीम और वैद्य यकसां है, अगर तश्खीस[1] अच्छी हो।
हमे सेहत से मतलब है, बनप्सा हो या तुलसी हो।

—अकबर

३ सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक वह है, जो निदान अधिक करता है एव औषधिया कम देता है।

—एच० जी० बोन

५ चिकित्सक, केवल चिकित्सा करता है, अच्छा करनेवाली तो प्रकृति है।

—अरस्तू

---

१ निदान—परीक्षण,

२३ निकृष्ट-वैद्य

१ स किं राजा वैद्यो वा, य स्वजीवनाय प्रजासु दोपमन्वेषयति ।

—नीतिवाक्यामृत ६।४

उस राजा एव वैद्य से क्या लाभ ? जो अपने जीवन की रक्षा के लिए प्रजा के दोषो (रोगो) को खोजता रहता है ।

२ वातपित्तादयो रोगा, ये चाजीर्णसमुद्भवा. ।
ते सर्वे धनिना सन्तु, वैद्यनाथ ! तवाज्ञया ॥

—बृहस्पति

शौचादि से निवृत्त होकर निकृष्ट वैद्य सोचा करता है—हे वैद्यनाथ ! आपकी कृपा से वात, पित्तादि एव अजीर्ण से प्रकट होनेवाले सभी रोग धनी लोगो के हो जाओ !

३ वैद्यराज ! नमस्तुभ्य, यमराजसहोदर !
यमस्तु हरति प्राणान्, वैद्य प्राण-धनानि च ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ४५

हे यमराज के सहोदर वैद्यराज ! तुझे नमस्कार है । यम केवल प्राण लेता है, लेकिन वैद्य (तू) प्राण-धन दोनो का हरण करता है ।

४ नाधीतश्चरको येन, सुश्रुत न च सुश्रुतम् ।
वाग्भटे वाग्भटो नैव, स वैद्यो यमकिंकर. ॥

जिसने चरक नही पढ़ा, सुश्रुत नही सुना एव जो वाग्भट का विवेचन करने मे समर्थ नही, वह वैद्य यम का दूत है।

२२ श्रेष्ठ-वैद्य

१ तदेव युक्तं भैषज्यं, यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजा श्रेष्ठो, रोगेभ्यो य प्रमोचयेत् ॥

—चरकसंहिता १।१३५

औषधि वही अच्छी है, जिसमे आरोग्य की प्राप्ति हो, और वैद्य वही श्रेष्ठ है, जो रोगो से मुक्त कर दे।

२ हकीम और वैद्य यकसा है, अगर तक्शीस[1] अच्छी हो।
हमे सेहत से मतलब है, बनफ्सा हो या तुलसी हो।

—अकबर

३ सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक वह है, जो निदान अधिक करता है एव औषधिया कम देता है।

—एच० जो० बोन

५ चिकित्सक, केवल चिकित्सा करता है, अच्छा करनेवाली तो प्रकृति है।

—अरस्तू

●

---

१ निदान—परीक्षण,

२३ निकृष्ट-वैद्य

१ स किं राजा वैद्यो वा, य स्वजीवनाय प्रजासु दोषमन्वेषयति।

—नीतिवाक्यामृत ६।४

उस राजा एवं वैद्य से क्या लाभ ? जो अपने जीवन की रक्षा के लिए प्रजा के दोषों (रोगों) को खोजता रहता है।

२ वातपित्तादयो रोगा, ये चाजीर्णसमुद्भवा।
ते सर्वे धनिना सन्तु, वैद्यनाथ ! तवाज्ञया॥

—बृहस्पति

शौचादि से निवृत्त होकर निकृष्ट वैद्य सोचा करता है—हे वैद्यनाथ ! आपकी कृपा से वात, पित्तादि एवं अजीर्ण से प्रकट होनेवाले सभी रोग धनी लोगों के हो जाओ !

३ वैद्यराज ! नमस्तुभ्यं, यमराजसहोदर !
यमस्तु हरति प्राणान्, वैद्यः प्राण-धनानि च॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ४५

हे यमराज के सहोदर वैद्यराज ! तुझे नमस्कार है। यम केवल प्राण लेता है, लेकिन वैद्य (तू) प्राण-धन दोनों का हरण करता है।

४ नाधीतश्चरको येन, सुश्रुतं न च सुश्रुतम्।
वाग्भटे वाग्भटो नैव, स वैद्यो यमकिंकरः॥

जिसने चरक नहीं पढ़ा, सुश्रुत नहीं सुना एवं जो वाग्भट का विवेचन करने में समर्थ नहीं, वह वैद्य यम का दूत है।

५ चिता प्रज्ज्वलिता दृष्ट्वा, वैद्यो विस्मयमागतः ।
नाहं गतो न मे भ्राता, कस्येदं हस्तलाघवम् ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ४५

जलती हुई चिता को देखकर वैद्य विस्मित होकर सोचने लगा—न तो मैं गया और न मेरा भाई गया। हमारे सिवा ऐसी करतूत किस वैद्य मे है, जो जाते ही रोगी को खत्म कर दे ?

६ सुनने मे आया है कि जयपुर के राजवैद्य श्रीलच्छीरामजी के हाथ मे इतना यश था, कि वे जहाँ भी जाते, रोगी मरता-मरता बच जाता, और उन्हीं के गुरुभाई का ऐसा हिसाब था कि किसी रोगी के प्राण कही अटके हुए होते, तो उनके पधारते ही प्राय तत्काल निकल जाते।

७ वरमात्मा हुतोऽज्ञेन, न चिकित्सा प्रवर्तिता ॥

—चरकसंहिता ६।१५

अपनी आत्मा को अग्नि मे होमना अच्छा है, किन्तु मूर्खवैद्य से चिकित्सा करवाना अच्छा नही है।

८ नीम हकीम खतरे जान, नीम मुल्ला खतरे ईमान।

—उर्दू कहावत

९ मूर्ख वैद्य की मातरा 'र' वैकुंठरी जातरा।

—राजस्थानी कहावत

१० जानमार तुल्लाखाँ हकीम—

साल भर लंघन से ज्वर को जराऊं जोर,
फांसी को गले मे कसी खासी को छुडाऊं मैं।
होय जो अजीरन तो तुरत जमालगोटा,
पाव भर दे के दस्त सैकडो कराऊं मैं।
मुक्कन से मार कर जहरवाद फोडूं,
गुद अदर भंगदर के नश्तर लगाऊं मैं।
हैजा मे अफीम तीन तोला ही खिलाऊं बस,
जानमारतुल्लाखाँ हकीमजी कहाऊं मैं॥

२४ चिकित्सा

१ आसुरी मानुषी दैवी, चिकित्सा त्रिविधा मता ।
शस्त्रैः कषायैर्लोहाद्यैः, क्रमेणान्त्या सुपूजिता ।।

चिकित्सा तीन प्रकार की होती है—

आसुरी, मानुषी और दैवी—ये क्रमशः शस्त्र, कषाय-कसैलापदार्थ एवं लोहादि द्वारा की जाती हैं। प्रथम से द्वितीय और उनसे तृतीय श्रेष्ठ है।

२ रोग दूर करने और शरीर को नीरोग करने की विधि को चिकित्सा कहते है। वह कई प्रकार की हैं। जैसे—आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक होमियोपैथिक एवं प्राकृतिक।

३ **सम्मोहनविद्या के सहारे शल्यक्रिया (आपरेशन)—**

डॉ० श्री व्ही एन उपाध्याय जब मेडिकल कॉलेज में एम बी बी. एस के प्रथमवर्ष के छात्र थे, तब उन्होंने एकबार पी सी सरकार के जादू के खेल में स्पष्ट देखा कि एक लड़की को काट दिया गया और पुनः उसे जीवित कर दिया गया। तब उनके दिमाग में यह बात आई कि क्यों न इसका प्रयोग चिकित्साविज्ञान में शल्यक्रिया (आपरेशन) के लिए किया जाय। बस, उन्होंने अनेक जादूगरों से सम्पर्क किया एवं इस विषय की अनेक पुस्तकें पढ़ीं। तत्त्व समझ में आया और अपने मित्रों पर प्रयोग करना शुरू किया। कुछ सफलता मिली। फिर उन्होंने अपनी नवविवाहिता पत्नी पर विद्या का परीक्षण किया।

इच्छा के विरुद्ध सम्मोहन नहीं होता—इस सिद्धान्त के अनुसार सर्वप्रथम उन्होंने अपनी पत्नी की सहर्ष सम्मति लेकर उसे आरामकुर्सी पर बैठाया और उसके सामने छ इंच की दूरी पर अपने हाथ की अंगूठी रखकर कहा—इस अंगूठी के नग पर ध्यान केन्द्रित करो! ध्यान केन्द्रित हो गया। फिर वे कहने लगे—तुम्हारा सारा शरीर हल्का होता जा रहा है, अब तुम अपनी आँखें खुली नही रख सकती। बस, ऐसे कहते-कहते ही स्त्री की आँखें बंद हो गई। फिर डॉक्टर ने कहा—अब तुम आराम से गहरी नींद मे सोगई हो और जब तक मैं नही उठाऊँगा, तुम नहीं जाग सकोगी। डाक्टर के इस कथन के साथ ही उनकी पत्नी प्रगाढनिद्रा में सोगई। इसी क्रम मे डॉक्टर ने पुन कहा—अब तुम्हारा बायाँ हाथ बिलकुल निष्क्रिय और शून्य हो गया है। उसको काटने पर भी तुम्हें कोई कष्ट नही होगा। ऐसे कहकर स्त्री के हाथ पर बड़े जोर से पिन चुभोई गई, लेकिन कोई असर नही हुआ।

कुछ समय तक वह निश्चलरूप से सोती रही। फिर उसे जागने के लिए डॉक्टर ने कहा—अब तुम्हारा बायाँ हाथ बिलकुल ठीक हो गया है, तुम्हारी नींद धीरे-धीरे कम होती जा रही है, अब तुम्हारी आँखे खुल रही है, अब तुम बिलकुल जाग गई हो। डॉक्टर के इतना कहते ही उनकी धर्मपत्नी पूर्ववत् जागृत हो गई और पूछने पर बोली—मुझे किसी भी चीज की चुभन का अनुभव नही हुआ।

इस परीक्षण के पश्चात् डा० उपाध्याय ने एक रोगी के सिर के सामने सेब के आकारवाले एक ट्यूमर (रसौली) का ऑपरेशन इसी सम्मोहन-विद्या के द्वारा किया। लगभग २४ मिनट का समय लगा। ऑपरेशन के समय रांची मेडिकल कॉलेज के सभी डाक्टर एवं स्टाफ के अन्य सदस्य वहाँ उपस्थित थे।

(देखिए, सम्मोहन-क्रिया करते समय के चित्र—पृष्ठ सं० ६३ पर)

सम्मोहननिद्रा के सहारे शल्यक्रिया (आपरेशन)

चित्र नं० १	चित्र नं० २
डा० स्टी० एस० उपाध्याय द्वारा सर्वप्रथम अपनी पत्नी पर सम्मोहननिद्रा का परीक्षण। श्रीमती डा० उपाध्याय सम्मोहित अवस्था में।	सेव के आकार का ट्यूमर (रसौली) का आपरेशन करने के लिए सम्मोहन निद्रा का प्रयोग करते हुए डा० स्टी० एस० उपाध्याय।
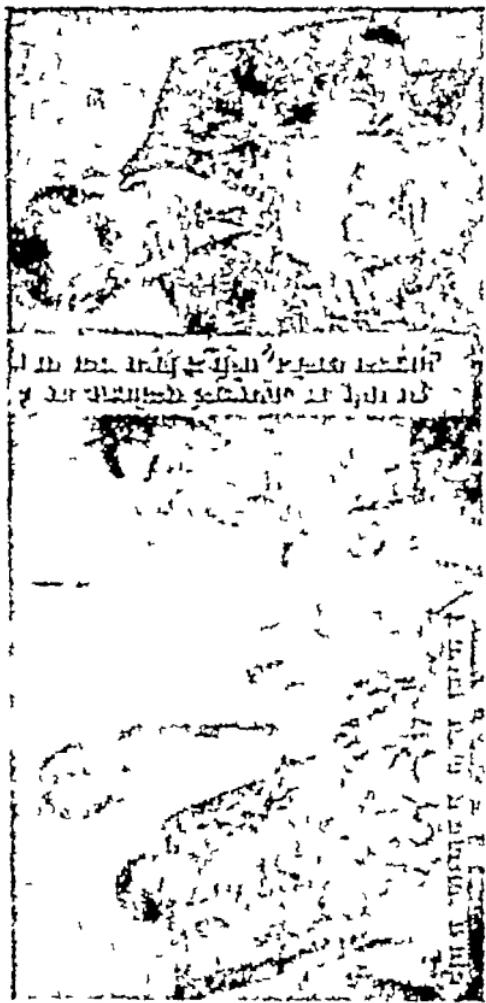
—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, ७ मई १९७०

२५ आयुर्वेद एवं नाड़ीविज्ञान आदि

१ हिताहितं सुखं-दुःख-मायुस्तस्य हिताहितम् ।
मानं च तच्च यत्रोक्त-मायुर्वेद स उच्यते ॥

—चरकसंहिता-सूत्रस्थान १।४०

आयु चार प्रकार की है—१–हितआयु, २–अहितआयु, ३–सुखआयु, ४–दुःखआयु—इन चारों प्रकार की आयु के लिए पथ्य, अपथ्य, इनका मान (प्रमाण-अप्रमाण) और स्वरूप बताया गया हो, उस शास्त्र को आयुर्वेद कहते हैं ।

२ श्वास के आधार पर आयु—

प्राणी	प्रति मिनट श्वास	आयु
अजगर	१	दस हजार वर्ष
सांप	३	एक हजार वर्ष
कछुआ	५	पांच सौ वर्ष
मनुष्य	१३	सौ वर्ष
घोड़ा	३५	पच्चीस वर्ष
कुत्ता	४५	बारह वर्ष

—एक योगी के मतानुसार

३ साधारणतया एक मिनट में १५ एक दिन में २१ हजार ६०० और वर्ष में ७७ लाख ७६ हजार श्वास लिये जाते हैं । क्रोध-भय-कामसेवन आदि के समय श्वास तेज होता है ।

• बैठत-पन्द्रह चालतऽठारह, बोलत आवे बीस।
भोगकाल में चौसठ आवे, निद्रा माही तीस॥

—श्री विलक्षण-अवधूत, पृष्ठ-२९९

४ अवस्था के आधार पर नाड़ी के ठबके और श्वासों की संख्या—

अवस्था	प्रति मिनट ठबके	अवस्था	प्रतिमिनट श्वास
गर्भावस्था में	१४०-१५०	दो मास से दो वर्ष तक	३५
स्तनपान के समय	१००-१४०	दो वर्ष से ६ वर्ष तक	२३
बाल्यअवस्था में	८०-१००	छः वर्ष से १२ वर्ष तक	२०
युवावस्था में	७२	बारह वर्ष से १५ वर्ष तक	१८
वृद्धावस्था में	७५-८०	पन्द्रह वर्ष से २१ वर्ष तक	१६-१८

—संकलित

५ नाड़ी की गति—

नाडी धत्ते मरुत्कोपे, जलौका-सर्पयोर्गतिम्,
कुलिङ्ग-काक-मण्डूक-गतिं पित्तस्य कोपतः।
हंस-पारावतगतिं, धत्ते श्लेष्मप्रकोपतः,
लाव-तित्तिर-वर्तीनां, गमनं सन्निपाततः।
स्थित्वा-स्थित्वा चलति या, सा स्मृता प्राणनाशिनी,
अतिशीता च क्षीणा च, जीवितं हन्त्यसंशयम् ॥

—आयुर्वेद

वायु कुपित होने पर नाड़ी जोंक एवं साँप की गति से चलती है। पित्त का प्रकोप होने पर कुलिंग, काक एवं मेंढकवत् चलती है। कफ प्रकुपित होने पर हंस एवं कबूतर की तरह चलती है और सन्निपात हो तब लाव, तित्तिर और बटेर के समान चलती है। ठहर-ठहर कर चलनेवाली नाड़ी प्राणनाशक है तथा अतिशीत एवं अतिक्षीण नाड़ी निःसन्देह जीवित का नाश करती है।

जन्म

१ पूर्वभव के स्थूलशरीर छोड़ने के बाद नवीनभव के योग्य स्थूलशरीर बनाने के लिये पहले-पहल जो योग्य पुद्गलों का ग्रहण किया जाता है, उसे जन्म कहते हैं।

जन्म के तीन भेद हैं—

सम्मूर्च्छनजन्म, गर्भजन्म और उपपातजन्म।

नारक, देवता और गर्भजमनुष्य-तिर्यञ्चों को छोड़कर शेष सब जीवों का सम्मूर्च्छनजन्म है। गर्भजमनुष्यों-तिर्यञ्चों का जन्म गर्भजन्म है और देवों व नैरयिकों का जन्म उपपातजन्म है।

—द्रव्य-लोक-प्रकाश, पुञ्ज ७ प्रश्न १

२ क्षेत्रभूता स्मृता नारी, बीजभूतः स्मृतः पुमान्।
क्षेत्र-बीजसमायोगात् संभवः सर्वदेहिनाम्॥

—मनुस्मृति ९।३३

स्त्री क्षेत्र के समान है और पुरुष बीज के समान है, इन दोनों के संयोग से गर्भज-प्राणियों का जन्म होता है।

३ जायो जायो सब कहे आयो कहे न कोय।
जायो नाम है जनम को म्हणो किस विध होय ?

—राजस्थानी दोहा

४ स जातो येन जातेन, याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे, मृतः को वा न जायते॥

जिस के जन्म से वंश की उन्नति हो, वास्तव में उसी का जन्म सार्थक है। ऐसे तो परिवर्तनशील-संसार में मरने के बाद कौन जन्म नहीं लेता ?

२७ जन्मसम्बन्धी अनोखी प्रथाएँ

१ देश-विदेश की अनोखी प्रथाएँ—

इण्डोनेशिया में बच्चे के जन्म लेने पर उसकी नाल को बांस के एक विशेष प्रकार के टुकड़े से काटा जाता है और फिर उस नाल को एक मिट्टी के बरतन में रखकर, उसमें पैसा, कागज का टुकड़ा और पेंसिल, सुई, नमक, दाल-चावल, फूल-फल तथा इत्र डालकर जमीन में गाड़ दिया जाता है।

बच्चे के जन्म के बाद फौरन उसे सुनहरे रंग के पानी से स्नान कराया जाता है। फिर उसे सुखाकर एक कपड़े में बांध दिया जाता है, जिससे वह हिल न सके। फिर एक मन्त्र पढ़कर उसके बिस्तर पर जोर-जोर से घूंसे मारकर उसे लिटा दिया जाता है। इसका मतलब यह होता है कि बालक बड़ा होने पर बिगड़ेगा नहीं।

- आस्ट्रेलिया के ईशानकोण में स्थित मेलेनेशिया द्वीप में बड़ी विचित्र प्रथा है। अगर किसी के जुड़वां बच्चे हो जायें और उनमें से एक लड़का और एक लड़की हो तो लड़की को अवश्य मार डालते हैं। या तो वह उसे समुद्र में फेंक देते हैं या उसे जिंदा दफना देते हैं। लेकिन सुलेमान-द्वीप और न्यू हेब्रीडेस द्वीप में जुड़वां बच्चे शुभ माने जाते हैं।
- सेन क्रिस्टोफेल द्वीप में तो सब सन्तानों को मार देते हैं और दूसरे द्वीपों से लाकर, किसी के बच्चे गोद ले लेते हैं, क्योंकि यहां छोटे बच्चों का लालन-पालन दुखदायी माना जाता है।
- फिजी द्वीप की कुछ जातियों में तो बड़ी ही अजीब प्रथा है। अगर वहाँ

कुटुम्ब का कोई भी सदस्य, चाहे वह बूढा हो या जवान, बेकार समझा जाये तो उसे जिन्दा ही गाड दिया जाता है। इसी प्रकार बालकों के साथ भी करते है। अगर वे अगहीन, कुरूप या रोगी हैं तो उन्हे भी जिन्दा गाड देते है। न्यूकेलीडिया मे बच्चो को बेच देते है।

* आस्ट्रेलिया के मूलनिवासी बच्चे के जन्म लेते ही उसकी नाक एक विशेष प्रकार के गर्मपानी से दबाते हैं, जिनसे वह चपटी हो जाय, क्योंकि वहाँ चपटी नाक सुन्दरता का प्रतीक समझी जाती है। एक स्त्री के चाहे जितने बच्चे हो, लेकिन वह पालन सिर्फ दो या तीन का कर सकेगी। शेष को भूखे-प्यासे रखकर या विषैली चीजें खिलाकर मार डालेगी। किसी समय मे तो यह भी प्रथा थी कि जो बालक व्यर्थ समझा जाता था, उसे मारकर बडा भाई या दादी-बाबा खा जाते थे। लेकिन अब यह प्रथा नही है।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १६ मई १९७१, पृष्ठ ६२

२ डेवन शायर मे बच्चे के जन्म लेने के दो-तीन दिन पूर्व एक पनीर का टुकडा तैयार किया जाता है बच्चे के पैदा होते ही पनीर के टुकडे को सर्वप्रथम उस परिवार के फैमेली डॉक्टर को खाना पडता है और शेष उस परिवार के अन्य सदस्यो को। शिशु के प्रथमबार में कटे हुए नाखूनो तथा बालों को एक केक मे रखकर किसी वृक्ष के नीचे गाड दिया जाता है। बच्चे को एक वर्ष तक आइना नही दिखाया जाता। बच्चे के नामकरण के समय बाइबिल खोली जाती है और जो पृष्ठ खुलता है, उसी मे से कोई नाम रख लिया जाता है। बच्चे पर पवित्र-जल भी छिडका जाता है। अगर पवित्र-जल छिडकते समय बच्चा रोता नही है, तो घर वाले चुटकी भरकर उसे रुला देते है।

० अधिकाश जन-जातियो मे बच्चे के जन्म के पश्चात् माताएँ कुआँ पूजती हैं, तभी उसे पवित्र माना जाता है। जिन जनजातियो मे कुएँ को पूजने की प्रथा है, उनमे शिशु के जन्म पर पिता को बिस्तर पर लेटकर ठीक वैसा ही व्यवहार करना होता है जैसे—उसी के गर्भ से बच्चा पैदा हुआ हो। शिशु-जन्म के बाद एक निर्धारित अवधि तक जिस प्रकार माता

किसी वस्तु के हाथ नही लगाती, ठीक उसी प्रकार पिता भी अस्पृश्य समझा जाता है ।

आस्ट्रेलिया मे 'साटाकुंज टुकोपिया' नामक एक वहुत छोटा स्थान है, इसलिए वहा प्रथम दो लडको को छोडकर शेष सव लडके मार डाले जाते हैं । इसका कारण वहा के निवामी यह वतलाते है कि वहा अधिक मनुष्यो को रहने के लिए स्थान नही है । लडकिया जीवित रहने दी जाती हैं । अतएव वहा पुरुपो की अपेक्षा स्त्रियो की सख्या तिगुनी है ।

वेक्स द्वीप मे भी लडके मार डाले जाते हैं और लडकिया जीवित रहने दी जाती हैं, क्योकि वहा वश लडकियो के नाम पर चलता है ।

—देश-विदेश की अनोखी प्रथाएं (पुस्तक से)

२८ पुनर्जन्म की वास्तविकता

१ अमेरिका के वर्जिनिया विश्वविद्यालय के डॉ० ईयान स्टीवेनसन ने घोषणा की कि पुनर्जन्म एक वास्तविकता है। उन्होंने विश्वभर के लगभग सभी देशों में पूर्वजन्म-स्मरण की १२०० घटनाओं के शोधकार्य के आधार पर अपना उक्त अभिमत व्यक्त किया। डॉ० स्टीवेनसन ने बताया कि लगभग पिछले बारह वर्षों से वे सतत इस गवेषणा-कार्य में लगे हुए हैं। पूर्वजन्म की स्मृति की घटनाएं भारत के अतिरिक्त अन्य देशों, जैसे—लंका, बर्मा, थाइलैंड, तुर्की, लेबनान आदि में तथा यूरोप और अमेरिका में भी घटित हुई हैं। इनमें से अधिकांश घटनाओं की जांच की गयी तथा पूर्वजन्म स्मरण करनेवाले व्यक्तियों ने (जिनमें अधिकांशत छोटे बच्चे होते हैं), जिन बातों की जानकारी दी, वे सही पाई गयी हैं।

— नवभारतटाइम्स, २४ अक्टूबर १९७२

२ प्रकाशचन्द्र—

१४ जुलाई १९६६ के दिन मथुरा से पच्चीस मील दूर कोसी नामक गांव में छातागामनिवासी ब्रजलाल वार्ष्णेय अपने दस वर्ष के पुत्र प्रकाशचन्द्र (जो पूर्व जन्म में यहां के भोलानाथजैन का पुत्र निर्मलकुमार था) को लेकर आए। दस हजार की जनता उसे देखने इकट्ठी हुई। बच्चे ने अपनी पुरानी दुकान पहचान ली, किन्तु भाग्यवश भोलानाथ उस दिन दिल्ली गए हुए थे। आने के बाद पता पाकर वे अपनी बड़ी पुत्री तारा को लेकर अपने पूर्वजन्म के पुत्र निर्मल से मिलने गये। प्रकाशचन्द्र पिता और बहन को पहचान कर रोने लगा। साथ-साथ

भोलानाथ और तारा की भी आखें डबडबा गई। आग्रह करने पर ब्रजलाल प्रकाश को लेकर फिर कोसी गए। पूर्वजन्म के पिता ने पुत्र मागा, लेकिन ब्रजलाल ने देने से इन्कार कर दिया। आखिर बच्चे को अच्छी तरह पढाने का आग्रह करके विदाई दी। बच्चे ने पाच वर्ष की उम्र से ही कोसी-कोसी की रटना लगा रखी थी। वह कहा करता था—यहाँ मू ज के माचे हैं, मेरे कोमी के घर मे निवार के पलग है। बच्चा चेचक की बीमारी मे मरा था।

—नवभारतटाइम्स, २३ जुलाई १९६१

३ स्वर्णलता—

छतरपुर (जबलपुर) के श्री एम० एल० मिश्रा की द्वादशवर्षीय पुत्री स्वर्णलता पिछले दो जन्मो की बाते बताती है। वह असमीभाषा मे गीत गाती है एव नृत्य करती है जबकि वह कभी असम नही गई। सेठ गोविन्ददास मध्यप्रदेश के मुख्य मन्त्री तथा उच्च अधिकारियो ने उक्त बालिका से काफी बात-चीत की एव आश्चर्य का अनुभव किया।

—हिन्दुस्तान, ६ मई १९६२

४ गोपाल अग्रवाल—

गोपाल—आसफअली रोड, दिल्ली स्थित एक पैट्रोल पम्प के मैनेजर का पुत्र है तथा अपने पिता के लिए ढाई वर्ष की आयु से ही एक समस्या बना हुआ है। गत रविवार को उसके पिता उसकी बातो से तग आकर गोपाल को मथुरा ले गये। ढाई वर्ष की आयु से ही वह कहने लगा था कि मैं पहले जन्म मे मथुरा मे था। वहाँ मेरी एक फैक्टरी भी है। मथुरा जाकर गोपाल एक मकान के सामने खडा हो गया और बोला यही मेरा घर है। फिर वह फैक्टरी गया और बोला कि यही मेरे छोटे भाई ने गोली मारकर मेरी हत्या की थी, तब मेरी आयु ३५ वर्ष की थी।

गोपाल के पिता ने नवभारतटाइम्स के प्रतिनिधि को भेंट के दौरान बताया कि जब यह ढाई साल का था तब एक दिन अचानक बोला—मैं मथुरा के एक मालदार घर का हू। वहाँ मेरे पिता अभी तक हैं।

बच्चे की बात को पिता ने पहले अनसुना कर दिया पर वह बार-बार दोहराता रहा—मेरा नाम शक्तिप्रसाद है, सन् १९४८ मे मेरे भाई ने सम्पत्ति के झगडे के कारण मेरी हत्या कर दी थी। गोपाल जब शक्तिप्रसाद की विधवा के सामने पहुँचा, तो उसे पहचान तो लिया पर उससे बात करने को राजी न हुआ और बोला—यह रुपये के लिए मुझसे झगडती रहती थी। एक दिन मैंने उससे पांच हजार रुपये मांगे पर इसने न दिये और कहा कि फैक्टरी से जाकर ले आओ। उसी दिन फैक्ट्री मे मुझे गोली मार दी गयी।

—नवभारतटाइम्स, २६ मार्च १९६५

●

१ **गर्भ मे जीव की उत्पत्ति—**

स्त्री की नाभि के नीचे फूल की नाल के समान दो नाडियाँ हैं। उनके नीचे-नीचेमुखवाली फूल के डोडे-तुल्य योनि होती है। उसके नीचे आम की मजरियो के समान मास-मजरिया होती हैं, जो ऋतुकाल मे फूटती है और उसमे से लोही की बूदो मे मे जितनी भी बूदें पुरुप-वीर्य से मिश्रित होकर कोशाकार योनि मे गिरती हैं, वे जीवो की उत्पत्ति के योग्य वन जाती हैं।

—तन्दुलवैचारिक-प्रकीर्णक के आधार से

२ **गर्भस्थित जीव का भोजन—**

गर्भ के नाभि स्थान पर कमलनाल के ममान दो नाडिया होती हैं, जो माता के शरीर से सम्बद्ध होती हैं। उन नाडियो के द्वारा गर्भस्थित जीव माता के खाये हुए रस विकारो के साथ उसके खून को खीचता है एव उससे वृद्धि को प्राप्त होता है। गर्भस्थ जीव के मल-मूत्र आदि नही होते। वह जो भी आहार करता है, उसे कान, आँख आदि शरीर के अगो के रूप मे परिणत कर लेता है। —भगवती १।७ गर्भाधिकार

३ **गर्भ-गत जीव वाहर की वातें भी सुन सकता है—**

(क) गर्भ मे रहकर कई जीव तो सन्तो का उपदेश सुनकर धर्म-रग मे रगे जाकर स्वर्गगामी वन जाते हैं तथा वैक्रियलब्धिवाले कई जीव लडाई की वातें सुनकर गर्भ मे रहते हुए लब्धि द्वारा सेना वनाकर शत्रुओ से सग्राम भी करने लग जाते है और दुर्भावनाओ से मरकर नरको मे चले जाते है।

—भगवती १।७ गर्भाधिकार

(ख) गर्भस्थित अभिमन्यु ने अर्जुन से सुनकर चक्रव्यूह-भेदन की विद्या पढ़ी।
—महाभारत

(ग) गर्भ स्थित अष्टावक्र ऋषि ने अपने पिता कोहल ऋषि के मुख से वेदमन्त्रों का अशुद्ध उच्चारण सुनकर उन्हें टोक दिया। क्रुद्ध पिता ने शाप देकर पुत्र को अष्टावक्र बना दिया। (अष्टावक्र के शरीर के आठ स्थान टेढ़े-मेढ़े थे)।
—महाभारत

४ प्राणियों की गर्भस्थिति—(लगभग)

प्राणी	गर्भस्थिति	प्राणी	गर्भस्थिति
१ मनुष्य	सवा नौ मास लगभग	११ बकरी	५ महीने
२ ऊँट	११-१२-१३ महीने	१२ बिल्ली	८ सप्ताह
३ कुत्ता	९ सप्ताह	१३ भेड़	५ महीने
४ खरगोश	१ महीना	१४ भेड़िया	६२ दिन
५ गधा	१२ महीना	१५ रीछ	६ महीने
६ गाय	९-१० महीने	१६ शेर	१०८ दिन
७ भैंस	१० महीना १० दिन	१७ सूअर	१६ सप्ताह
८ घोड़ा	११ महीना	१८ सियार	६० दिन
९ जिराफ	१४ महीने	१९ हाथी	२१ महीने
१० बन्दर	७ महीने	२० हरिण	८ महीने

—कमल-नाहटा के संग्रह से

५ गर्भ का पता लगानेवाली ट्यूब—

एक भारतीय हारमोन औषधि निर्मात्री फर्म ने एक ऐसी परीक्षण-ट्यूब तैयार की है, जिसके द्वारा महिलाओं के गर्भधारण के एक सप्ताह बाद गर्भ का पता लगाया जा सकता है।

इस ट्यूब में महिला अपने मूत्र की कुछ बूँदें पानी में मिलाकर उसे डेढ़-दो घंटे के लिए छोड़ दे, तो काँच की नली के तले में बननेवाले एक पीले छल्ले से गर्भ की पुष्टि हो जाती है।

—हिन्दुस्तान, १५ सितम्बर १९७२

३० सोलह संस्कार

हिन्दुधर्म मे गर्भाधान से मृत्यु तक निम्नलिखित सोलह सस्कार माने गये हैं—

१ गर्भाधान—ऋतुदान से पहले औपधिसेवन ।

२ पुसवन—गर्भधारण के वाद ब्रह्मचर्य-पालन ।

३ सीमन्तोपनयन—छठे महीने गर्भिणी की प्रसन्नता का उपाय ।

४ जातकर्म—जन्म के वाद होम आदि करना ।

५ नामकरण—नाम की स्थापना करना ।

६ निष्क्रमण—चौथे महीने वालक को सूर्य-चन्द्र के दर्शन करवाना, वाहर निकालना ।

७ अन्नप्राशन—आठ मास के वाद अन्न खिलाना ।

८ चूडाकर्म—मुण्डन (झडूला उतारना) ।

९ यज्ञोपवीत—ब्राह्मण को ८ वें वर्ष, क्षत्रिय को ११ वे वर्ष और वैश्य को १२ वे वर्ष जनेऊ धारण करना ।

१० वेदारम्भ—वेद पढना शुरू करना ।

११ समावर्तन—पढने के वाद स्नातक-पद लेना ।

१२ विवाह—अग्नि की साक्षी से स्त्री-पुरुप का पत्नी-पति के रूप मे परिणत होना ।

१३ गार्हपत्य—गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करना ।

१४ वानप्रस्थ—पचास वर्ष की आयु के वाद वन मे जाकर रहने लग जाना ।

१५ सन्यास—सन्यासी वन जाना ।

१६ अन्त्येष्टि—मृत्यु के वाद किया जानेवाला क्रियाकाड ।

—मनुस्मृति के आधार पर

०

बालक

चाइल्ड इज दी फादर ऑफ मैन ।

—वर्ड्स वर्थ

बालक आदमी का बाप है ।

एक बुद्धिमान पुत्र प्रसन्न-पिता बनता है ।

—बाइबिल

जगली बछेडे ही सुन्दर घोडे बनते हैं ।

—प्लटार्च

खेतो मे पडा कपास और अनाज ओढने एव खाने के काम नहीं आता । सस्कारित होने पर ही कपडा तथा रोटी बनकर उपयोगी होता है, उसी प्रकार बच्चे भी सस्कारित होकर आदर्श बनते है ।

आज तुम जिस जगह खडे हो, अन्त मे सफलता पानेवाले भी वही खडे हैं । तीस साल बाद तुम विचार कर देखना कि उस समय जो देश के प्रभावशाली वक्ता, कवि, राष्ट्र व धर्म के उद्धारक होंगे, वे उस समय तुम्हारे ही बराबर खडे हैं ।

—टाल्पेज

वृष्टि होने के बाद बच्चे मिट्टी के घर बनाते है एव उनके लिए लडने भी लगते है । लोग उन्हें मूर्ख कहते हैं, किन्तु इतना नहीं सोचते कि हम भी तो मिट्टी के घरो के लिए सिर फोड रहे हैं ।

—धनमुनि

मिट्टी का खिलौना फूटते ही बच्चा रोने लगता है, उसे देखकर लोग हसते हैं, किन्तु हसनेवाले भी तो बच्चे ही हैं।

: बालक की उक्ति—

अत मे माता-पिता के खेल का सामान हूं मैं।
जो विचारें सो बनालें ! देव हूं, शैतान हूँ मैं ॥

: मानव मस्तिष्क का विकास शिशु के पालने से प्रारम्भ होता है।

—टी. फोगन

:० वीर नेपोलियन से किसी ने पूछा—आपने यह वीरता कहा से सीखी ? उत्तर मिला—माता के दूध के साथ मिली हुई है।

:१ आज बालक मे मा-बाप का क्या रहा ? कहा भी है—

तिफ्लू मे बू आए क्या, मां-बाप के इतवार की।
दूध तो डिब्बो का है, तालीम है सरकार की ॥

—उर्दू शेर

:२ शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरञ्जनोऽसि,
संसार—माया — परिवर्जितोऽसि।

मदालसा महासती पुत्र को लोरी देते समय कहा करती थी—हे पुत्र ! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरञ्जन है और ससार की माया से रहित है।

बालकों के गुण और दोष

बालको मे स्वाभाविक छ गुण और तीन दोष होते हैं।

छः गुण—१—कोमलता, २—विनोदप्रियता, ३—अनुकरणप्रियता, ४—चञ्चलता, ५—स्वतन्त्रता, ६—जिज्ञासा वृत्ति।

तीन दोष—१—रोना, २—लडना, ३—दूसरो की शिकायत करना।

विश्वास और निर्दोषता शिशु के अतिरिक्त किसी मे नही पाये जाते।

—दाँते

आदर्श बालक के विशेष गुण—

१—वह शान्त-स्वभावी होता है, २—उत्साही होता है, ३—सत्यनिष्ठ होता है, ४—धैर्यशील होता है, ५—सहनशील होता है, ६—अध्यवसायी (अपने उद्यम को कभी नही छोडनेवाला) होता है, ७—समचित्त होता है, ८—साहसी होता है, ९—आनन्दी होता है, १०—विनयी होता है, ११—उदार होता है, १२—ईमानदार और आज्ञाकारी होता है।

—कल्याण—बालकअक, पृष्ठ २०

जगत्प्रसिद्ध आदर्श-बालक—

भक्त बालकों मे—ध्रुव, प्रह्लाद, शुकदेव, मीराबाई, आदि।

गुरुभक्तो मे—अर्जुन, एकलव्य आदि।

मातृ-पितृ भक्तो मे—गणेशजी, राम, भीष्म, श्रवणकुमार आदि।

वीरो मे—लव कुश, अभिमन्यु, वीरबादल, आल्हा-ऊदल, पृथ्वीसिंह, राणाप्रताप, दुर्गादास राठौड़ आदि।

ईमानदारो में—वीरेश्वर मुखोपाध्याय, गोपालकृष्ण गोखले आदि ।

सत्यवादियो में—सुकरात, नेपोलियन आदि ।

धर्म पर बलिदान होनेवालो में—गुरुगोविन्दसिंह के पुत्र, मुरलीमनोहर, हकीकतराय आदि ।

मेघावियो में—रोहक, बीरबल, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

चतुरबालिका—बायोला, राजेलिया, ओलरिच आदि ।

नेताओ में—राममोहनराय, तिलक, गाधी, अरविंद, टैगोर, सुभाषचन्द्र आदि ।

इन सबका बचपन अपने-अपने क्षेत्र मे अत्यद्भुत था। इनके चरित्र 'कल्याण बालकअक' से पढने योग्य है ।

३२ बालकों के निर्माण की कुछ विधियां

१ अच्छे बच्चों के निर्माण का सर्वश्रेष्ठ उपाय है, उन्हे प्रसन्न रखना।

—बाइबल

२ शिशुओ को वही शिक्षा दो, जिन पर उन्हे चलना चाहिए।

—बाइबिल

३ जो-जो बातें बच्चो को सिखानी है, उनमे माता-पिता एव शिक्षको को भी सावधान रहना चाहिए। जैसे—बच्चो के सामने—

(क) गाली-गलौज नही बकनी चाहिए।

(ख) किसी से भी अधिक हसी-मजाक नही करनी चाहिए और न अश्लील बाते ही करनी चाहिए।

(ग) किसी को भी डाटना-डपटना अथवा किसी से दुर्व्यवहार नही करना चाहिए।

(घ) नशीली वस्तु आदि का सेवन नही करना चाहिए।

(ङ) अपनी स्त्री आदि के साथ अनुचित ढग से व्यवहार एव वार्तालाप न करना चाहिए।

—'कल्याण' बालकअंक, पृष्ठ २२०

४ अभिभावक को विशेष ध्यान देने योग्य कई बातें !

(क) भारतीय संस्कृति में बच्चों के सुन्दर और प्यारे नाम रखने की प्रथा है, इस प्रथा को न बिगाड़ो।

(ख) बच्चों को ऐसी आदत डालो कि वे सोकर रोते हुए न उठें, हसते हुए उठें।

(ग) बच्चो के अन्दर भय पैदा करना, उनको नीचा दिखलाना, अपमानित करना या मारना बुरा है ।

(घ) बच्चो को ऐसी कहानिया सुनाओ, जिनसे उनमे उत्साह और देशाभिमान पैदा हो, उनकी हिम्मत बढे, उनके हृदय मे धर्म का भाव पैदा हो ।

(ङ) बच्चो को 'तू' मत कहो, 'तुम' कहो । 'आप' कहना तो और भी अच्छा है, इससे उनको भी आप कहने की आदत बचपन मे ही पड जाएगी ।

(च) कोई छोटा बच्चा कुछ कहना चाहे तो उसकी बात पहले सुन लो, पर यदि वह किसी की शिकायत करे, तो सहसा उस पर कोई कार्रवाई न करो ।

(छ) बच्चो को पहले भोजन दो । सबसे छोटे बच्चे से शुरू करो ।

(ज) बच्चो को निश्चत समय पर खाना दो । हर वक्त खाने की आदत बुरी है । निश्चित समय पर ही शौच, स्नान आदि की भी उनमे आदत डालो ।

(झ) भूत-प्रेत की या दूसरी डरानेवाली कहानिया बच्चो को मत सुनाओ । उन्हे अधेरे मे जाने से मत डराओ ।

(ञ) बच्चो को नगा मत रखो, कम से कम जाघिया या लँगोट पहनाए रखो ।

(ट) जितनी जल्दी हो सके, बच्चो को अपने आप चलने, खाने और अलग सोने की आदत डालो । उनका बिछौना बहुत नरम नही होना चाहिए ।

(ठ) बच्चो से कोई चीज टूट-फूट जाये तो उनको मारो मत, उनको समझा दो, जिससे वे भविष्य मे वैसी असावधानी न करें । अच्छा तो यह होगा कि ऐसी चीजे वहाँ रक्खो जहा उनका हाथ न जाय ।

—'कल्याण' बालकअक, पृ० २३६

५ गलती करने पर बच्चो को धमकाओ मत, अन्यथा वे झूठ बोलना सीख जायेंगे ।

६ कहीं-कहीं धमकाना भी आवश्यक है। कहा भी है—

पीयूषमपिबतो बालस्य किं न क्रियते कपोलहननम्।

—नीतिवाक्यामृत १०।१५

दूध न पीने पर क्या बालक के थप्पड़ नहीं मारा जाता!

६ रोते बच्चे को भय दिखाकर चुप रखना भी उसके लिये हानिकारक है।

० मेम और साहब छोटे बच्चे को नौकर के पास छोड़कर कार्यवश बाहर गए। पीछे से बच्चा रोने लगा। नौकर ने अन्धेरे कोठे में उसे हाऊ कहकर डरा दिया। भयभीत बच्चा रातभर चुपचाप पड़ा रहा। दूसरे दिन मेम-साहब आए। बच्चे को गुमसुम देखकर कारण पूछा? नौकर ने सच्चा हाल कहा। साहब ने उसका भय निकालने के लिये अन्धेरे कोठे में काले कागज का राक्षसाकार एक हाऊ बनाया। फिर बच्चे के सामने उसे पिस्तौल से मार कर उसका वहम निकाला।

७ भारतवर्ष में अधिकांश माताएँ बच्चों को डरा-धमका कर चुप रखने की कोशिश करती हैं। जैसे—राजस्थान में कई माताएँ कहती हैं—बाबा! ई नन्हिये रा कान काट लै रे! ईनै पकड़ लै रे! आदि-आदि।

८ अपने बालक को चुप रहना सिखाइये! वह जल्दी ही बोलना सीख जायेगा।

—फ्रैंकलिन

●

कतिपय देशो की जन्म-मृत्यु एवं बाल-मृत्यु की तालिका (प्रति सहस्र)

देश का नाम	वर्ष	जन्म दर	मृत्यु दर	बाल-मृत्यु दर
भारत	१९६०-६४	३८ ४०	१२ ९०	१३९ (१९५१-६१)
पाकिस्तान	१९६३	४३ ३०	१५ ४०	१४५ ६०
जापान	१९६६	१३ ७०	६ ८०	१८ ५०
ब्रिटेन	१९६६	१७ ९०	११ ८०	१९-६०
आयरलैंड	१९६६	२१ ६०	१२ १०	२४ ९०
नार्वे	१९६५	१७ ५०	९ १०	१६ ४० (१९६४)
स्वीडेन	१९६६	१५ ८०	१० ००	१३ ३० (१९६५)
डेन्मार्क	१९६६	१८ ४०	१० ३०	१८ ७० (१९६५)
फ्रान्स	१९६६	१७ ५०	१० ७०	२१ ७०
स्वीट्जरलैंड	१९६६	१८ १०	९ ३०	१७ ८० (१९६५)
रूस	१९६६	१८ २०	७ ३०	२६ ५०
चेकोस्लावाकिया	१९६६	१५ ६०	१० ००	२३ ७०
अमेरिका	१९६६	१८ ५०	९ ५०	२३ ४०
कनाडा	१९६६	१९ ७०	७ ५०	२३ ६० (१९६५)
आस्ट्रेलिया	१९६६	१९·३०	९ ००	१८ २०
न्यूजीलैंड	१९६६	२२ ५०	८ ९०	१७ ७०

—यू० एन० डेमोग्राफिक इयरबुक, १९६६

६ कहीं-कहीं धमकाना भी आवश्यक है। कहा भी है—

पीयूषमपिबतो बालस्य किं न क्रियते कपोलहननम्।

—नीतिवाक्यामृत १०।१५

दूध न पीने पर क्या बालक के थप्पड़ नहीं मारा जाता!

६ रोते बच्चे को भय दिखाकर चुप रखना भी उसके लिये हानिकारक है।

० मेम और साहब छोटे बच्चे को नौकर के पास छोड़कर कार्यवश बाहर गए। पीछे से बच्चा रोने लगा। नौकर ने अन्धेरे कोठे में उसे हाउ कहकर डरा दिया। भयभीत बच्चा रातभर चुपचाप पड़ा रहा। दूसरे दिन मेम-साहब आए। बच्चे को गुमशुम देखकर कारण पूछा? नौकर ने सच्चा हाल कहा। साहब ने उसका भय निकालने के लिये अन्धेरे कोठे में काले कागज का राक्षसाकार एक हाउ बनाया। फिर बच्चे के सामने उसे पिस्तौल से मार कर उसका वहम निकाला।

७ भारतवर्ष में अधिकांश माताएँ बच्चों को डरा-धमका कर चुप रखने की कोशिश करती हैं। जैसे—राजस्थान में कई माताएँ कहती हैं—बाबा! ई नान्हियै रा कान काट लै रे! ईनै पकड़ लै रे! आदि-आदि।

८ अपने बालक को चुप रहना सिखाइये! वह जल्दी ही बोलना सीख जायेगा।

—फ्रेंकलिन

●

जन्म-मृत्यु एवं बाल-मृत्यु

कतिपय देशो की जन्म-मृत्यु एवं बाल-मृत्यु की तालिका (प्रति सहस्र)

देश का नाम	वर्ष	जन्म दर	मृत्यु दर	बाल-मृत्यु दर
भारत	१९६०-६४	३८ ४०	१२ ९०	१३९ (१९५१-६१)
पाकिस्तान	१९६३	४३ ३०	१५ ४०	१४५ ६०
जापान	१९६६	१३ ७०	६ ८०	१८ ५०
ब्रिटेन	१९६६	१७ ९०	११ ८०	१९-६०
आयरलैंड	१९६६	२१ ६०	१२ १०	२४ ९०
नार्वे	१९६५	१७ ५०	९ १०	१६ ४० (१९६४)
स्वीडेन	१९६६	१५ ८०	१० ००	१३·३० (१९६५)
डेन्मार्क	१९६६	१८ ४०	१० ३०	१८ ७० (१९६५)
फ्रान्स	१९६६	१७ ५०	१० ७०	२१ ७०
स्वीट्जरलैंड	१९६६	१८ १०	९ ३०	१७ ८० (१९६५)
रूस	१९६६	१८ २०	७ ३०	२६ ५०
चेकोस्लावाकिया	१९६६	१५ ६०	१० ००	२३ ७०
अमेरिका	१९६६	१८ ५०	९ ५०	२३ ४०
कनाडा	१९६६	१९ ७०	७ ५०	२३ ६० (१९६५)
आस्ट्रेलिया	१९६६	१९ ३०	९ ००	१८ २०
न्यूजीलैंड	१९६६	२२ ५०	८ ९०	१७ ७०

—यू० एन० डेमोग्राफिक इयरबुक, १९६६

३ बाल-मृत्यु के प्रधान कारण—

(१) बाल विवाह।

(२) बहुत छोटी अवस्था मे गर्भाधान।

(३) प्रसव की दूषित रीति।

(४) प्रसूतिगृहो के दोष।

(५) माता-पिता के असयमपूर्ण जीवन।

(६) माता-पिता मे गर्भाधान तथा बाल-पोषण के ज्ञान का अभाव।

(७) दरिद्रता।

(८) शुद्ध खाद्य-द्रव्य का अभाव।

(९) गोदुग्ध का अभाव।

—'कल्याण'-बालकअंक पृष्ठ ४२६

१५

बालकों को बिगाड़ने एवं सुधारनेवाले अभिभावक

१ **गुड-मूगफली**—सीतापुर (सौराष्ट्र) मे एक वार हम सरकारी गेस्ट हाउस मे ठहरे हुए थे। सध्या-प्रतिक्रमण के वाद मैं जाप-ध्यान कर रहा था। एक वूढा वहा आकर एक तरफ वैठ गया और गुड-मूगफली खाने लगा। सतो ने कारण पूछा तो उसने कहा—क्या करू घर ले जाऊ तो वच्चे मुझे खाने ही न दें, अत जव भी खाने का मन होता है, चुपके से यहाँ वैठकर खा लेता हू। सुनकर विचार हुआ कि ऐसे वूढे ही वालको की आदत को विगाडते हैं। इन्हे देखकर वच्चे भी चोरी से खाना-पीना सीख जाएगे।

—धनमुनि

२ **दो पतासे**—छुट्टी के दिन वच्चा वाजार मे घूम रहा था। एक दूकान मे गल्ले के पास कुछ पैसे पडे थे। दुकानदार सो रहा था। वालक ने एक पैसा चुराया और घर आकर माता के सामने सारी वात कही। माता ने खुश होकर उसे दो पतासे दिए। वस, उसी दिन से वच्चा चोरी मे प्रवृत्त हो गया और आगे जाकर एक वडा चोर वन गया। कोतवाल के प्रयत्न से पकडे जाने पर राजा ने उसे फासी पर लटकाने का हुक्म दे दिया। पता पाकर माता ज्योही आकर उससे मिलने लगी, पापी ने माता की नाक (दातो से) काट खायी। राजा के पूछने पर पर चोर ने कहा—मुझे

और बनानेवाली—यह मेरी माता ही है। अगर उस दिन दो पतासे न देकर दो थप्पड़ लगा देती, तो आज मेरी यह दुर्दशा क्यों होती ?

— व्याख्यानरत्नमंजूषा के आधार पर

बालक का सुधार बचपन में ही संभव

पाकी हाडी कानठा, चढ़ै न शोभा थाय।
काचा हूंख्ये केवट्यां, मोडै ज्यूं मुड़ जाय॥

सेठानी पति के साथ हर रोज झगड़ा किया करती थी। उसकी पुत्री सुन्दरबाई भी इसी तरह झगड़ालू बन गई। लोग उसे लेने से इनकार होने लगे। आखिर एक दूरदेशवर्ती चतुर सेठ से उसकी शादी की गई। बरात विदा हुई। वर-वधू एक बैलगाड़ी में बैठे थे और उनके आगे दहेज में प्राप्त बर्तनों की गाड़ी चल रही थी। खाल की जमीन आने पर बर्तन खड़खड़ाने लगे। सेठ ने लाठी से उन्हें फटा-फट फोड़ डाले। लोगों ने रोका तब बोला—ये तो बर्तन हैं, खड़खड़ाट करेगी तो मैं सेठानी का भी सिर फोड़ डालूँगा। सुन्दरबाई समझ गई और उसने अपनी आदत बदल डाली।

एक बार पिता पुत्री से मिलने के लिए गया। पुत्री ने काठे दाल-चावल बनाए। थाली में परोसकर पति के सामने देखने लगी। पति ने बायीं आँख दिखाई—उसका मतलब था तेल डालना, पिता की थाली में तेल परोसना अशक्य था, अतः धीरे से बोली—बाबे में भी बायीं। पति ने दाईं आँख दिखलाई और सुन्दरबाई ने घी परोस दिया। पिता अनभिज्ञ होकर दामाद से कहने लगा कि आपने सुन्दर को तो आगे से समझा लिया, लेकिन इसकी माता का सुधार कर दो, तो मैं भी निहाल हो जाऊं। दामाद ने फूटी हांडी देकर कहा—इसके कान लगवा लाइये। सेठ कुम्हार के यहाँ हांडी ले गया लेकिन उसके कान नहीं लग सके। दामाद ने समझाते हुए कहा—सुन्दर की माता पक्की हांडी हो गई, अब उसका सुधार नहीं हो सकता।

४ सुसस्कारी मनोहर—

मढार (गुजरात) निवासी **वापूभाई अहमदावाद** मे रहते हैं। उन्होने अपने पुत्र **मनोहर** को यह शिक्षा दी कि वेटा! कभी चोरी मत करना और झूठ मत वोलना। फिर उन्होंने रुपयो-पैसो की पेटी विना ताले के रखनी शुरू कर दी। फलस्वरूप मनोहर इतना सुसस्कारी वन गया कि कई वार पैसो के लिए घटो रो लेता, लेकिन पेटी मे से पैसा निकालना उसके लिए हराम था।

सत्यवादी भी इतना वना कि एक वार इन्सपेक्टर आनेवाला था। मास्टर ने वच्चो से कहा—देखो! मेरे लिए इन्सपेक्टर पूछे, तो इतनी सख्या से अधिक ट्यूशन मत वतलाना। (अक्सर अध्यापक लोग नियम से ज्यादा ट्यूशन करते हैं।) मनोहर ने कहा—मास्टर जी! पिताजी ने मना किया है, अत मैं तो झूठ नही वोलूगा। आप हमेशा निर्दिष्ट सख्या से अधिक ट्यूशन करते हैं। मास्टर घवरा कर आया और वावूभाई से कहने लगा कि मैं तो आज से मनोहर को नही पढाऊगा। क्योंकि यह सच वोलकर मुझे नौकरी से वरखास्त करवा देगा। वावू भाई अपने पुत्र की सच्चाई पर प्रसन्न हुये।

—धनमुनि

३६ बालकों की सरलता

१ दाऊ शैल्ट एन्टर दी किंगडम ऑफ गॉड ऐज चिल्ड्रन।
ईसामसीह कहा करते थे कि जो इस बच्चे की तरह सरल होगा, वही ईश्वरीय-राज्य में जाएगा।

२ ध्रुव, प्रह्लाद, नचिकेता, शुकदेव एवं सनकादि बालकों के जीवन पढ़ने से पता चलता है कि बालक कितने निर्लेप एवं सरल होते हैं।

३ कतिपय उदाहरण—

(क) पिता ने कहा—बेटा झूठ मत बोला करो! पुत्र ने पूछा—झूठ क्या होता है?

(ख) पुत्र ने पूछा—मां! कृष्ण कैसे होते हैं?
माता ने कहा—काले! पुत्र चौंककर बोला, तब फिर तू हरे कृष्ण-हरे कृष्ण! क्यों करती है?

(ग) माता ने कहा—बेटा! दो पैरों की धूप ले आ। पुत्र—पैर यहाँ मुर्झे रही हो, धूप तो अपने आप आ जायेगी।

(घ) कई आदमी सेठ से मिलने आए बच्चे ने दौड़कर खबर दी। सेठ ने कहा—जा कह दे, सेठ जी यहाँ नहीं हैं। सरल बालक ने बाहर आकर कहा—भाई! सेठजी ने कहा है—जा कह दे! वे यहाँ नहीं हैं।

(ङ) भोले बालक की कथा भी सरलता की अद्भुत शिक्षा देनेवाली है। जैसे—दिवाली के त्योहार पर गली में बच्चों को मिठाई आदि खाते देख-

कर वालक ने माता से मिठाई माँगी। माँ ने कहा—वेटा, तेरे मौसाजी गुजरे हुए हैं, अत अपने घर कढाई नही चढ सकती। वच्चे ने हठ किया, अत माता ने कुछ वना दिया और उसे खिलाते हुए कहा—देख वेटा ! राड हुई तो मौसी हुई ले तू तो तेरा खाले, लेकिन मौसी से यह वात मत कह देना। वच्चा खा-पीकर मौसी के घर पहुचा। मौसी ने पूछा—वेटा ! तूने क्या खाया ? वच्चा वोला, मैंने सकरपारे-खजलियाँ आदि कई चीजें खायी थी, लेकिन मेरी माँ ने वताने की मनाई की है अत मैं नही वताता। यो कहते हुए सारी वात कह दी।

(च) छोटा-सा राजकुमार (जिसकी माता सख्त वीमार थी) खेलता-खेलता विमाता के महल मे जा पहुचा। विमाता उसे छुरी से मारने लगी। सरल वालक ने कहा—मा ! तू हमाले घर च्यू नहीं आती ? छुरी गिर गई एव विमाता ने उसे हृदय से लगा लिया। फिर जीवन भर उससे पुत्र जैमा व्यवहार रखा।

(ज) पचवर्षीया वालिका ने रोते हुए पुलिमवालो मे कहा—मेरे पिताजी नोट छापते हैं, किन्तु मुझे नए कपडे नही वनवा देते। आप उनमे कह-सुन-कर मेरे लिए कपडे वनवा दीजिए। पुलिसवालो ने छापा मारकर जाली नोट वनानेवाले (उस वाप) को गिरफ्तार कर लिया।

—(काहिरा) नवभारतटाइम्स, ६ अप्रैल १९६६

४ वालक का पोस्टकार्ड—

मा-वेटे को दूध पिलाया करता थी। चीनी पूरी हो गई। घर मे गरीवी थी। वेटे ने कहा माँ ! फीका दूध अच्छा नही लगता माँ वोली—वेटा ! चीनी तो भगवान भेजेंगे तभी आएगी ? वेटे ने पूछा—मा भगवान कहाँ रहते हैं ? माता ने कहा—वैकुण्ठ मे ! वच्चे ने एक कार्ड लिखा—भगवान मैं आपका वच्चा हू मेरे से फीका दूध नही पिया जाता, अत जल्दी से जल्दी चीनी भेजने की कृपा करें। ज्यो

ही बच्चा कार्ड को लेटर-बाक्स मे डालने गया,वह ऊँचा था अतः बच्चे के हाथ न पहुंचे। वह उछल-उछल कर डालने का प्रयत्न कर रहा था। इतने मे एक सेठ आया और बोला—ला बेटा ! मैं डाल दूं तेरा कार्ड ! बच्चे ने कार्ड दे दिया। सेठ ने पढ़कर उसे लेटर-बॉक्स मे डाल दिया और उसी वक्त उनके घर पाँच सेर चीनी भेज दी। बच्चा खेलता-कूदता घर पहुचा। माता ने कहा—बेटा ! ले मीठा दूध पीले ! तेरे लिए भगवान ने चीनी भेज दी है।

●

३७

बालकों की उच्छृंखलता

१ कस्य नोच्छृङ्खल बाल्य, गुरुशासनवर्जितम् ।

—कथासरित्सागर

गुरु के नियन्त्रण से शून्य किसका बचपन उच्छृंखल नही होता ।

२ कहदो चाहे सहज मे, बच्चो को कोई बात ।
उत्तर देंगे तडक के, लड्डू-सा साक्षात ॥
बच्चो को होता अगर, बचपन का कुछ भान ।
तो माँ-बापो का कभी, नही करते अपमान ॥

—दोहा-सदोह

३ बाल-अपराध—
भारत के अन्दर १९५८ मे बाल-अपराध २९७७४, सन् १९५९ मे ४७९२५, सन् १९६२ मे ५३८०३ हुए ।

—हिन्दुस्तान, ३० सितम्बर १९६३

४ अमरीका के बच्चो की विचित्र स्थिति—
शपथ-ग्रहण के एक विशेष अवसर पर राष्ट्रपति जानसन ने अमरीकी बच्चो के अधकारमय भविष्य के आंकडे प्रस्तुत करते हुए कहा—"अमरीका के कुल बच्चो के दस प्रतिशत को १८ वर्ष की अवस्था तक पहुचने के पूर्व ही बाल अपराध-न्यायालय मे जाना पड जाता है ।"
लगभग दस लाख बच्चो को हरसाल अपनी पढाई बीच मे ही छोड देनी पडती है । पांच लाख बच्चे मस्तिष्क की अवसन्नता से पीडित हैं और लगभग पांच लाख ही मृगी के शिकार हैं ।

—हिन्दुस्तान, २४ जून १९६८

१ १० अक्तूबर १९६३, मेरठ-छावनी के सरकारी-अस्पताल में एक बालक पैदा हुआ। उसके ३२ दांत थे एवं वह अंग्रेजी में बोलने भी लगा था।

—हिन्दुस्तान, १२ अक्टूबर १९६३

२ १७ वर्षीय लड़के के फेफड़े से बच्चा :—(लन्दन १३ अप्रेल, ना०) फ्रांस के जीन जैक्यूज नामक एक १७ वर्षीय लड़के के दाहिने फेफड़े से सर्जरी की सहायता द्वारा नौ इंच लम्बा एवं तीन पौण्ड १५ औंस वजनवाला एक बच्चा निकाला गया। उसके शरीर में हड्डियाँ, नाखून एवं दांत भी विद्यमान थे। आश्चर्यचकित डॉक्टरों का कहना है कि यह बच्चा जीन-जैक्यूज के जुड़वें भ्रूण का ही एक हिस्सा था, जिसे १७ वर्ष पूर्व उसके साथ ही पैदा हो जाना चाहिये था। छाती में दर्द की शिकायत करने पर उक्त बच्चा निकाला गया। अब वह दर्द ठीक-ठाक है।

—नवभारतटाइम्स, १५ अप्रेल १९६४

३ १२ वर्षीय बालक बिली ब्राउ (जिसकी मौजूदगी में आग की लपटें निकलती थीं।) बिली ब्राउ पर किसी भूत का साया समझकर उसकी चाची 'हौस्म क्लाउ' ने उसे घर से निकाल दिया। जहाँ भी वह गया, वहाँ आग लगने लगी। एक पड़ोसी किसान को उस पर दया आ गई और वह उसे अपने घर ले गया। एक नजदीक के एक स्कूल में भर्ती करा दिया।

एक दिन विली ने स्कूल मे भी अपना करिश्मा दिखा दिया। सवक याद नही कर लाने के कारण मास्टरनी ने उसकी लानम-मलामत की। विली ने क्रोध भरी आंखो से मास्टरनी की मेज की तरफ देखा और तुरन्त वहाँ रखे कागज-पत्रो से आग की लपटें निकलने लगी। यह देखकर मास्टरनी ने उसे निकाल देने की धमकी भी दी। विली ने झुंझला कर कमरे की छत की ओर गौर से देखा और दूसरे ही क्षण वहाँ आग की लपटें उठती दिखाई देने लगी, सारे स्कूल मे हलचल मच गई। पुलिसवालो ने आकर जाँच-पडताल की और उन्होंने विली पर कडी निगरानी रखनी शुरू कर-दी। एकदिन विली इस कडी निगरानी से उकता गया और उसी दिन शाम को उसकी आँखें आग पर आग लगाने लगी। आखिर पुलिस ने उसे पकडकर इंट की दीवारोवाली जेल मे वन्द कर दिया। टाउनवोर्ड की वैठक के निश्चय के अनुसार विली को शहर से निकाल दिया गया। लेकिन, उसने अपने इस वहिष्कार का वदला लेने का निश्चय किया। लगभग आधी रात के समय एकवार फिर सारे शहर मे खलवली मच गई। इस वार तमाम कोशिशो के वावजूद स्कूल की सारी इमारत जल कर राख हो गई। इसके वाद विली का कही पता नही चला। न्यूयार्क हेराल्ड नामक पत्र मे १६ अक्टूवर १८८६ को इस विचित्र घटना का विस्तृत वर्णन प्रकाशित हुआ था।

—विचित्रा-वर्ष ३, अंक ४, १९७१

४ द्विलिङ्ग शिशु—

दक्षिणी सालामारा (असम) के स्वास्थ्य-सेवाकेन्द्र के चिकित्सा-अधिकारी के अनुसार आठ मील दूर स्थित हमीदावाद नामक एक गाँव में एक ऐसे वच्चे का जन्म हुआ है, जिसके स्त्री और पुरुष दोनो की ही जननेन्द्रियाँ हैं, परन्तु दोनो ही पूर्ण नही हैं।

उन्होंने वताया कि मैं वच्चे की देखभाल रख रहा हू। यह सम्भव है कि जव यह वच्चा वयस्क हो जायगा तव कोई भी एक जननेन्द्रिय पूर्णतः

विकसित हो जायेगी और तभी उसका पुरुष अथवा स्त्री होना निश्चित किया जा सकेगा। इसी परिवार में इस प्रकार का यह दूसरा बच्चा जन्मा है। इससे पहले ३० वर्ष पूर्व ऐसा बच्चा हुआ था कि बड़ा होने पर उसका व्यवहार लड़कियों जैसा हुआ। माता-पिता ने अल्पायु में ही उसकी शादी एक पुरुष के साथ करदी, परन्तु उसका निधन शीघ्र ही हो गया। बालिका जब १५ वर्ष की हुई तो उसका स्वभाव बदलने लगा और २० वर्ष की आयु होने पर वह पूर्णतः पुरुष बन गई। अभी दो वर्ष पूर्व ही उसकी शादी एक लड़की से हुई है और अब वह पिता भी बन चुका है।

—नवभारतटाइम्स, २० जनवरी १९६९

हैदराबाद के उस्मानिया अस्पताल में एक अजीब केश आया था। एक १४ मास के बालक का पेट गर्भवती स्त्री की तरह फूल रहा था। एक्सरे लिया गया और आपरेशन करके उस बालक के पेट से ६-७ इंच का एक शिशु निकाला गया। निकालते ही नवजात शिशु मर गया। उसके सभी अंग यथास्थान थे।

—धर्मयुग, २३ फरवरी १९६४

रामगढ़—(शेखावटी) में एक दशवर्षीया बालिका के मुँह से रंगीन धागा निकलता है। विस्मित लोग उसे मिठाई आदि खिलाते हैं एवं मुँह से जो धागा निकलता है, उसे ले जाते हैं।

—नवभारतटाइम्स, २२ नवम्बर १९६५

री (पंजाब) स्टेशन के पास क्वार्टर में पठान के घर वि० सं० २०१२ जन्माष्टमी को नाग की सी आकृति उत्पन्न हुई। पेट से ऊपर तो थी व नीचे का भाग नाग था अर्थात् पैर की ओर हाथ, कान, आंख नाक-र थे। लोगों ने इसे चतुर्भुज जी-नाथजी का अवतार माना, फिर दिये र, दिल्ली तक के यात्री दर्शनार्थ आए। गाड़ी भी क्वार्टर के पास रुकने लगी। लोग रुपये, पैसे-वस्त्र आदि चढ़ाने लगे। ये १३-१४ दिन

जीवित रही। मरने के बाद उनका शव पटियाला म्यूजियम में रखा गया। देखिए चित्र—
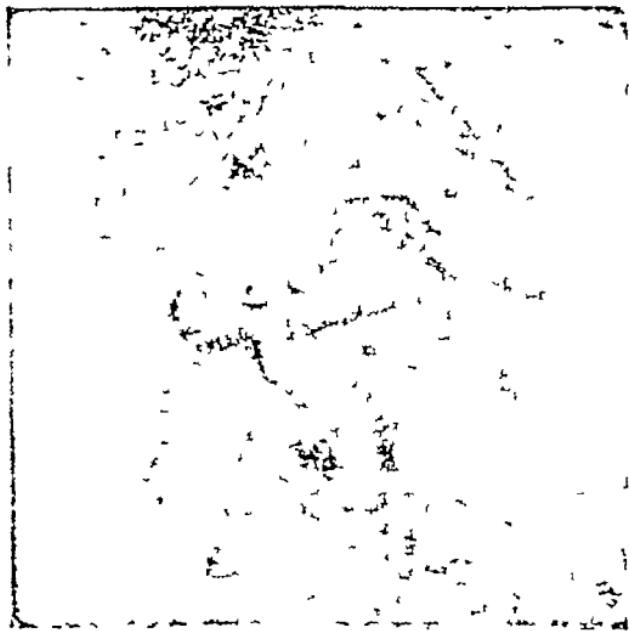
दो जुडवा लडकिया

८ १४ जून, इलाहाबाद—रामसुन्दर ब्राह्मण की पुत्री जिसकी आयु तीन वर्ष ९ महीने है एव जो तीन फुट ऊँची है, उसने गर्भ धारण किया है। प्रारम्भ मे लडकी के शरीर मे असामान्य परिवर्तन हुए।

—हिन्दुस्तान, २१ जून १९६५

९ इटली की रोजेटा प्रस्फेरो बालिका ऊपर से गिराने पर फुटबॉल की तरह उछलती थी एव उसके पीडा भी नही होती थी।

१० फोकेश मे रहनेवाली १२ वर्ष की एक कन्या के शरीर मे चुम्बक का-सा आकर्षण था। वह चलती थी तब थाली, लोटा, शीशी, तश्तरी वगैरह चीजें नाचने लग जाती थी।

११ नीग्रो—सबसे लम्बी नीग्रो-लडकी आठ फिट दो इच है।

चौथा कोष्ठक

१ यौवन

१ यौवनं जलरेखेव ।

—तत्त्वामृत

पानी की लकीर की तरह यौवन देखते-देखते नष्ट हो जाता है ।

२ जलदपटलतुल्यं यौवनं वा धनं वा ।

—शुभचन्द्राचार्य

यौवन और धन बादलवत् दृष्टविनश्वर हैं ।

३ वात्याव्यतिकरोत्क्षिप्त-तूलतुल्यं हि यौवनम् ।

—योगशास्त्र

आंधी के झटके से भटकती हुई अर्कतूली की तरह यौवन अस्थिर है ।

४ यौवनं त्रिचतुराणि दिनानि ।

—उपदेशमाला

यौवन तीन-चार दिन का है ।

५ It was a nine days wonder

इट वाज ए नाइन डेज वन्डर ।

—अंग्रेजी कहावत

चार दिनों की चांदनी, फिर अन्धेरी रात ।

६ यौवन कुसुमोपमम् ।

—गरुडपुराण

यौवन पुष्प की तरह शीघ्र ही कुम्हला जाता है ।

७ जराक्रान्तं हि यौवनम् ।

—शुभचन्द्राचार्य

यौवन बुढापे से घिरा हुआ है ।

८ काना केसा लोयणा, कर गोडाँ दाँतांह ।
एता माँह विखो पडे, जोवनियो जाताह ॥

—कालूगणी से श्रुत

९ यौवन एक भूल है, सपूर्ण मनुष्यत्व एक सघर्ष और वार्धक्य एक पश्चात्ताप ।

—डिजराइली

१० जुवानी मां रल्युं ते रात नुं दल्युं ।

० सियाला नी खेड ने, जुवानी नो दीकरो,
चौमासा नो खेड ने शियाला नी चाकड़ी ।

—गुजराती कहावतें

यौवन ३ घण्टे की पिक्चर है।

यौवन का अनर्थकारित्व

यौवनं धन-संपत्तिः, प्रभुत्वमविवेकिता ।
एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम् ?

—हितोपदेश-कथारम्भ ११

यौवन, धन-सपत्ति, प्रभुत्व-ऐश्वर्य, अविवेकीपन—इनमें प्रत्येक अनर्थकारी है। जहा ये चारो मिल जाएँ, वहा की तो वात ही न पूछिये ?

जवानी दीवानी है और बुढापा कुढापा है।

—हिन्दी कहावत

एक जोवन दूजो धन पल्लै, साहिव करै तो सीधो चल्लै।

—राजस्थानी कहावत

युवक—

बूढो की हर वात पर, करते युवक मखौल।
खुलती आँखें किन्तु जव, घटता तन का तोल ॥

—दोहासंदोह

●

३ जरा-वृद्धावस्था

१ जीवा ण भते ! किं जरा—सोगे ?
गोयमा ! जीवा ण जरावि सोगेवि !
से केणट्ठेण भते !
जाव सोगेवि ! जे ण जीवा सारीरं वेयण वेयति, तेसि ण जीवाणं जरा । जे ण जीवा माणसं वेयणं वेयति तेसि णं जीवाणं सोगे ।

—भगवती १६।२

भगवन् ! क्या जीवो के जरा एव शोक हैं ।
हाँ गौतम ! है ।
भगवन् ! किस अपेक्षा से ?
गौतम ! शारीरिक-वेदना की अपेक्षा से जरा है एवं मानसिक-वेदना की अपेक्षा से शोक है ।

२ मिनातिश्रिय जरिमा तनूनाम् ।

ऋग्वेद १।१७६।१

जरा शरीर की शोभा को बिगाड देती है ।

३ वण्ण जरा हरइ नरस्स राय ।

—उत्तराध्ययन १३।२६

हे राजन् ! जरा मनुष्य की सुन्दरता को समाप्त कर देती है ।

४ जरा धुतारी धोवणी, धोया देश विदेश ।
विन पाणी विन साबुणे, धोला कर दिया केश ॥

—राजस्थानी दोहा

५. वृद्धावस्था यमराज का नोटिस है—

वैष्णवीमान्यता के अनुसार एकबार यम के दूत एक वकील को धर्मराज के पास ले गये। उन्होने वकीलजी का हिसाब देखकर कहा—इन्होंने धर्म बिल्कुल नही किया, पाप ही पाप किया है, अत इन्हें नरक में भेज दो ! वकीलजी ने दलील दी कि आपने जो बिना नोटिस दिये ही मेरे पर वारट निकाल कर मुझे गिरफ्तार कर लिया, यह कानून के विरुद्ध है। धर्मराज ने कहा—हमने आपको कई नोटिस दिए हैं। जैसे—सर्वप्रथम आपके केश श्वेत किए, फिर क्रमश आँखो की ज्योति मद की, कानो में बहरापन प्रकट किया, दाँत गिराए एव घुटनो में दर्द पैदा किया, लेकिन आपने हमारे नोटिसो की बिल्कुल परवाह नही की।। तब हमें वारट जारी करना ही पडा। अब वकीलजी को क्या बोलना था—चुपचाप नरक की ओर रवाना हो गए।

६ जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं एवं वियाणाहि।

—उत्तराध्ययन ४।१

जरा से ग्रस्त हो जाने के बाद कोई शरणभूत नही है—ऐसा जानो !

७ जरादण्ड-प्रहारेण, कुब्जो भवति मानव.।
गत यौवनमाणिक्यं, वीक्षते तत् पदे-पदे ॥

जरा के दण्ड-प्रहार से मनुष्य कुबडा हो जाता है। वह खोए हुए यौवन-रूपी माणिक को कदम-कदम पर खोज रहा है।

८ अध' पश्यसि किं वृद्ध ! पतितं तव किं भुवि ?
रे रे मूर्ख ! न जानासि, गतं तारुण्यमौक्तिम् ॥

—चाणक्यनीति १७।२०

अरे वृद्ध ! नीचे क्यो देख रहा है, क्या कुछ तेरा गिर गया ? बच्चों के पूछने पर बूढा बोला—रे मूर्खो ! यौवनरूपी मोती गिर गया है, उसे खोज रहा हू।

९ वदनं दशनविहीन, वाचो न परिस्फुटा गता शक्ति'।
अव्यक्तेन्द्रियशक्ति., पुनरपि बाल्यं कृतं जरया।

मुह दतविहीन हो गया, वाणी अस्फुट हो गई, ताकत चली गई व इन्द्रियो का बल प्रकट नही रहा, इस प्रकार जरा ने दुबारा वचपन ला दिया।

- old age is the second childhood
ओल्ड एज इज दि सेकिण्ड चाइल्डहुड।

—अंग्रेजी कहावत

वुढापा दूसरा वचपन है।

।१ अलंकरोति हि जरा, राजामात्य-भिषग् यतीन्।
विडम्वयति पण्यस्त्री - मल्ल-गायन - सेवकान्॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ६६

राजा, मत्री, वैद्य और यती—इन चारो को जरा अलकृत करती है और वेश्या, मल्ल, गायक और नौकर—इन चारो की विडम्वना करती है।

४ वृद्ध

१ गात्र सकुचित गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलि-
दृष्टिर्नश्यति वर्धते वधिरता वक्त्रं च लालायते ।
वाक्य नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शुश्रूषते,
हा ! कष्ट पुरुषस्य जीर्णवयस पुत्रोऽप्यमित्रायते ।।

—पचतंत्र २।१८६

गात्र सिकुड जाता है, गति स्खलित हो जाती है, दाँत गिर जाते है, आँख की ज्योति नष्ट हो जाती है, वहरापन वढ जाता है, मुँह मे लार गिरने लगती है, भाई-विरादरीवाले आदर नही करते, स्त्री सेवा नहीं करती हा ! हा ! वृद्ध हो जाने के वाद वेटा भी दुश्मन वन जाता है ।

२ बूढा नै भावै खीचडी रे, माही घी रे सुवास ।
वहुआ घाले घाटडी रे, माहें खाटी छास ।
वुढापो आवियो जीवा ! वांधो घरमरी पाल ।।

—राजस्थानी गीत

३ डोकरी रै कह्यां खोर कुण राधै ।

—राजस्थानी कहावत

४ अद्यैव कुरु यच्छ्रेयो,वृद्धत्वे किं करिष्यसि ।
स्वगात्राण्यपि भाराय, भवन्ति हि विपर्यये ।

—योगवाशिष्ठ ६, १६२।२०

जो अपने कल्याण का काम है, उसे आज ही करले, वृद्ध होकर क्या करेगा ? वृद्धावस्था मे अपने शरीर के अवयव भी भारभूत हो जाते हैं।

५ यही आगन यही देहरी, यही सुसर को गाम ।
दुलहिन-दुलहिन टेरता, बुढिया पडगयो नाम ।।

—हिन्दी दोहा

६ पुरुष भवे प्रायीक, वर्ष चालीसा मीठो,
कड़ुवो होय पचास,साठ तिहा क्रोघ पइट्ठो।
सत्तरा सगो न कोय अस्सिया आस न काई,
नाह नवे मे होय, हंसै सब लोक-लुगाई।
सौ हुवो-सौ हुवो सब कहै, सब तन हो गयो जोजरो।
घर की पतिव्रता यू कहे, अब मरे तो सुधरे डोकरो ।।

—भाषाश्लोकसागर

७ मरै न माचो छोडे ।

—राजस्थानी कहावत

८ वृद्ध और वृद्धत्व का सवाद—

धरित्र्यामनाकारित. कोऽपि कस्य-
गृहे नैवयातीति वार्ता श्रुताथ।
न तुभ्यं मयादायि हूति कथं तद्,
अरे वार्धक्य ! त्व समायात आशु ? ।।६२।।
शिशुत्व त्वया हारित खेलयित्वा,
युवत्वे युवत्या महाऽभोजि सौख्यम् ।
कृतो न त्वया सत्यधर्मः कदापि,
ह्यतो ज्ञापनार्थं समायात आशु. ।।६३।।

—प्रास्ताविक-श्लोकशतक

५

वृद्धों का सम्मान

१ वृद्धस्य वचन ग्राह्यम् ।

वृद्धो की वात ग्रहण करने योग्य होती है ।

२ विद्या-विनय वृद्ध्यर्थं वृद्धसेवैव शस्यते ।

—शुभचन्द्राचार्य

विद्या एव विनय की वृद्धि के लिए वृद्ध पुरुषो की सेवा प्रशस्त मानी गई है ।

३ न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
धर्मो न वै यत्र न सत्यमस्ति,
सत्य न तद् यच्छलमभ्युपेतम् ।

—विदुरनीति ३।५८

वास्तव मे वह सभा नही, जिसमे वृद्ध-बूढे न हो, वे वृद्ध नही, जो धर्म न समझायें, वह धर्म नही, जिसमे सत्य न हो, और वह सत्य नही जिसमे छल हो ।

४ वसती वैद तपेसरी, प्रोहित तदुल पान ।
ये नौ जूना चाहिए, राजा शाह दीवान ।।

• वैद ब्राह्मण नै वाणियो, चौथा डोढ़ीदार ।
इतरा तो दाना भला, कर्म करै मोट्यार ।।

—राजस्थानी दोहे

५ नराँ, नाहराँ, दिगंवराँ, पाकाँ ही रस होय ।

—राजस्थानी कहावत

६ वृद्ध कैसे होते हैं—यह जानना एक बुद्धिमत्ता का कार्य है और जीवनयापन की कला एक शिष्टतम पाठ है ।

—एमी. एल.

७ अनुभवी वृद्ध—कुछ तरुण सेवकों ने राजा से प्रार्थना की राजन् ! पके हुए केशवाले और जीर्ण शरीरवाले वृद्धों को न रखकर यदि आप नवयुवकों को सेवा मे रखे तो सम्भव है, राज्य शीघ्रातिशीघ्र उन्नत हो सके । अच्छा, सोचेंगे ! ऐसे कहकर राजा ने कुछ दिनों के बाद सभा मे ऐसा प्रश्न किया—युवको एव वृद्धो ! कहिए—यदि कोई मेरे शिर मे लात मारे तो क्या दण्ड देना चाहिए ? युवकों ने तत्काल जवाब दिया कि उसको उसी क्षण मार देना चाहिए ।

राजा ने वृद्धो की ओर देखा । उन्होंने कुछ सोच-विचार कर निश्चय किया कि महारानी के सिवा राजा के शिर मे लात मार ही कौन सकता है ? यह प्रश्न राजा ने हमारा बुद्धिवल देखने के लिए किया है, अस्तु ! ऐसे विचार-विमर्श करके उन्होने राजसभा मे आकर कहा—महाराज ! हमारी समझ मे तो यही आता है कि आपके शिर मे लात मारनेवाले का आपको खूव सम्मान करना चाहिए । राजा प्रसन्न हुआ एव वृद्धों की भूरि-भूरि प्रशसा करके उन्हे ऊचे पदो पर नियुक्त किया ।

—नदी टीका के आधार से

वृद्धों के प्रकार

दस थेरा पन्नत्ता, त जहा—
गामथेरा, नगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थारथेरा, कुलथेरा, गणथेरा, सघथेरा, जाइथेरा, सुअथेरा, परियायथेरा।

—स्थानाग १०।७६१

दस प्रकार के स्थविर (वृद्ध) कहे हैं —

ग्रामस्थविर—गांव मे व्यवस्था करनेवाले बुद्धिमान एव प्रभावशाली व्यक्ति।

नगरस्थविर—नगर के मानीय एव प्रतिष्ठित व्यक्ति।

राष्ट्रस्थविर—राष्ट्र के माननीय मुख्यनेता।

प्रशास्तृस्थविर :—धर्मोपदेश देनेवालो मे प्रमुखव्यक्ति।

कुलस्थविर :—लौकिक एव लोकोत्तर (धार्मिक) कुलो की व्यवस्था करनेवाले एव व्यवस्था तोडनेवालो को दण्डित करनेवाले व्यक्ति।

गणस्थविर —गण की व्यवस्था करनेवाले व्यक्ति।

सघस्थविर ,—सघ की व्यवस्था करनेवाले व्यक्ति। (धर्मपक्ष मे एक आचार्य की सतति को या चान्द्र आदि साधुसमुदाय को कुल कहते हैं। कुल के समुदाय को अथवा सापेक्ष तीन कुल के समूह को गण कहते हैं तथा गणो के समुदाय को सघ कहते हैं।)

जातिस्थविर—साठ वर्ष की आयुवाले वृद्धव्यक्ति।

५ नराँ, नाहराँ, दिगवराँ, पाकाँ ही रस होय।

—राजस्थानी कहावत

६ वृद्ध कैसे होते हैं—यह जानना एक बुद्धिमत्ता का कार्य है और जीवनयापन की कला एक शिष्टतम पाठ है।

—एमी. एल.

७ अनुभवी वृद्ध—कुछ तरुण सेवकों ने राजा से प्रार्थना की राजन्! पके हुए केशवाले और जीर्ण शरीरवाले वूढों को न रखकर यदि आप नवयुवकों को सेवा में रखें तो सम्भव है, राज्य शीघ्रातिशीघ्र उन्नत हो सके। अच्छा, सोचेंगे! ऐसे कहकर राजा ने कुछ दिनों के बाद सभा में ऐसा प्रश्न किया—युवको एवं वृद्धो! कहिए—यदि कोई मेरे शिर में लात मारे तो क्या दण्ड देना चाहिए? युवकों ने तत्काल जवाब दिया कि उसको उसी क्षण मार देना चाहिए।

राजा ने वृद्धों की ओर देखा। उन्होंने कुछ सोच-विचार कर निश्चय किया कि महारानी के सिवा राजा के शिर में लात मार ही कौन सकता है? यह प्रश्न राजा ने हमारा बुद्धिवल देखने के लिए किया है, अस्तु! ऐसे विचार-विमर्श करके उन्होंने राजसभा में आकर कहा—महाराज! हमारी समझ में तो यही आता है कि आपके शिर में लात मारनेवाले का आपको खूब सम्मान करना चाहिए। राजा प्रसन्न हुआ एवं वृद्धों की भूरि-भूरि प्रशंसा करके उन्हें ऊँचे पदों पर नियुक्त किया।

—नंदी टीका के आधार से

वृद्धों के प्रकार

दस थेरा पन्नत्ता, त जहा—
गामथेरा, नगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थारथेरा, कुलथेरा, गणथेरा, सघथेरा, जाइथेरा, सुअथेरा, परियायथेरा।

—स्थानाग १०।७६१

दस प्रकार के स्थविर (वृद्ध) कहे हैं —

१ ग्रामस्थविर—गांव मे व्यवस्था करनेवाले बुद्धिमान एव प्रभावशाली व्यक्ति।

२ नगरस्थविर—नगर के मानीय एव प्रतिष्ठित व्यक्ति।

३ राष्ट्रस्थविर—राष्ट्र के माननीय मुख्यनेता।

४ प्रशास्तृस्थविर :—धर्मोपदेश देनेवालो मे प्रमुखव्यक्ति।

५ कुलस्थविर :—लौकिक एव लोकोत्तर (धार्मिक) कुलो की व्यवस्था करनेवाले एव व्यवस्था तोडनेवालो को दण्डित करनेवाले व्यक्ति।

६ गणस्थविर —गण की व्यवस्था करनेवाले व्यक्ति।

७ सघस्थविर ,—सघ की व्यवस्था करनेवाले व्यक्ति। (धर्मपक्ष मे एक आचार्य की सतति को या चान्द्र आदि साधुसमुदाय को कुल कहते हैं। कुल के समुदाय को अथवा सापेक्ष तीन कुल के समूह को गण कहते है तथा गणो के समुदाय को सघ कहते हैं।)

८ जातिस्थविर—साठ वर्ष की आयुवाले वृद्धव्यक्ति।

९ श्रुतस्थविर—स्थानाङ्ग-समवायाङ्ग शास्त्र के ज्ञाता मुनिराज ।

१० पर्यायस्थविर—बीस वर्ष की दीक्षापर्यायवाले साधु ।

२ यम्हि सच्चं च धम्मो च, अहिंसा सञ्ञमो दमो ।
स वे वन्तमलो धीरो, थेरो ति पवुच्चति ॥

—धम्मपद १९।६

जिस मे सत्य, धर्म, अहिंसा सयम और दम है, वस्तुत वही विगतमल धीर व्यक्ति स्थविर कहा जाता है ।

●

७

वृद्ध ऐसा चिंतन करें !

बालपने न संभार सक्यो कुछ, जानत नाहि हिताहित हीको।
जोवन वेश वसी वनिता उर, लाग रह्यो नित ही लिछमी को।
होय के वृद्ध विगोयदियो नर ! डारत क्यो नरके निज जी को।
आए हैं श्वेत अजो शठ चेत, गई सो गई अब राख रही को ॥१॥

—भूधरदास

सत की संगति नाह करी,
न धरी चित्त मे हित सीख कही को।
नीत-अनीत कुरीत करी नित,
जीवत ही ग्रहि मूढमती को।
या जमवार मे आय गिवार ते,
मारी इतादिन भार मही को।
रे सुन जीव ! कहै ध्रमसीह,
गई सो गई अब राख रही को ॥२॥

२ फरीदा ! तेरी दाढी उत्ते, आ गया बूर।
अग्गू नेडां रह गया, पच्छू रह गया दूर ॥

—पंजाबी पद्य

३ यातं यौवनमधुना, वनमधुना शरणमेकमस्माकम्।
स्फुरदुरुहार-मणीनां, हा ! रमणीना गतः काल. ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ३६१

१४

यौवन व्यतीत हो गया अत. अब हमे वन की शरण लेनी चाहिए। खेद है कि अब रत्नमय हारों से चचल वक्षस्थलवाली स्त्रियो के साथ रहने का समय चला गया।

४ द्यु भिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु !

—ऋग्वेद-१०।५९।४

हमारी वृद्धावस्था दिन-प्रतिदिन सुखमय हो।

५ यदि वृद्धावस्था की झुरिया पडती हैं, तो उन्हें हृदय पर मत पडने दो, कभी आत्मा को वृद्ध न होने दो।

—जेम्जगार फील्ड

६ यदि बूढा चाहता नही, बूढी का सहवास।
कैसे चाहे युवती फिर, बूढे से घरवास।।

—दोहा-संदोह

जीवन

आरभस्वेमाममृतस्य श्नुष्टिम् ।

—अथर्ववेद ८।२।१

यह (जीवन) अमृत की लडी है । इसे अच्छी तरह मजबूती मे पकडे रखो।

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु ।

—विक्टरह्यूगो

जीवन एक बाजी के समान है । हार-जीत तो हमारे हाथ नही है, लेकिन बाजी का खेलना हमारे हाथ मे है ।

—जर्मीटेलर

४ जीवो जीवस्य जीवनम् ।

—सुभाषितरत्नखडमंजूषा

एक जीव के आधार से ही दूसरे का जीवन टिकता है ।

५ मत्स्य एव मत्स्य गिलति ।

—शतपथब्राह्मण १।८।१।३

बडी मछली छोटी मछली को निगलती है ।

६ जीवन और कुछ नही है, केवल मृत्यु को कुछ समय के लिए टालना है ।

—शोपेनहॉवर

७ हम आते हैं और रोते हैं—यही जीवन है ।
हम जभाई लेते है और मर जाते हैं—यही मृत्यु है ।

—असोन-द-चासेस

८ जीवन का द्वार तो सीधा है, पर मार्ग सकीर्ण है।

—सतमैथ्यू

९ साधारण जीवन मे एक ही विधान है—यौवन भूल है, जवानी सघर्ष है और बुढापा पश्चात्ताप।

—डिजरायली

१० उष्ण एव जीविष्यन्, शीतो मरिष्यन्।

—शतपथब्राह्मण ८।७।२।११

जीनेवाला गर्म और मरनेवाला ठडा होता है।

११ जीवन के प्रथम चालीस वर्ष पाठ्य हैं और द्वितीय तीस वर्ष इस पर व्याख्या।

—शोपेनहॉवर

१२ बीस वर्ष की अवस्था मे अभिलाषा प्रधान होती है, तीस वर्ष की अवस्था मे बुद्धि और चालीस वर्ष की अवस्था मे निर्णयशक्ति प्रधान होती है।

—फ्रैंकलीन

१३ मनुष्य जीवन के सौ वर्ष—

वैष्णवी कल्पना के अनुसार ईश्वर ने मनुष्य, बैल, कुत्ते एव उल्लू को ४०-४० वर्ष की आयु देकर पृथ्वी पर भेजना चाहा। बैल आदि इन्कार हुए एव अपने लिए २०-२० वर्ष की आयु रखी। शेष सबके २०-२० वर्ष मनुष्य ने ले लिए। अतएव मनुष्य ४० वर्ष तक तो अपना जीवन जीता है फिर २० वर्ष तक बैल की तरह (पुत्रादि के लिए) दौडता हुआ, फिर २० वर्ष तक कुत्ते की तरह भौंकता हुआ और शेष २० वर्ष तक दिन मे उल्लू की तरह अधरूप से जीवन व्यतीत करता है।

६ जीवन के हेतु आदि

१ विद्या शिल्पं भृति सेवा, गोरक्ष्यं विपणि' कृषिः।
वृतिर्भैक्ष्यं कुसीदं च, दश जीवन-हेतव' ॥

—मनुस्मृति १०।११६

जीवन निभाने के ये दस साधन माने गए हैं—

१–विद्या, २–शिल्पकला, ३–नौकरी, ४–सेवा, ५–गोरक्षा, ६–व्यापार, ७–खेती, ८–सन्तोष, ९–भिक्षा, १०–ब्याज।

२ जिन्दगी के तीन मार्ग—१–आधिभौतिक (जडवाद), (२)–आधिदैविक—(बुद्धिवाद), ३–आध्यात्मिक (आत्मवाद)।

६ जीवन के चार सूत्र—१–क्लेश हो ऐसा बोलो मत, २–रोग हो ऐसा खाओ मत, ३–कर्ज हो ऐसा खर्चो मत, ४–पाप हो ऐसा करो मत।

—जीवनलक्ष्य से

४ विनोबा अपने जीवन के सूत्र की व्याख्या करते हुए कहते है कि "रसायन-शास्त्र की भाषा मे पानी का सूत्र—एच-टू-ओ है, यानी दो भाग हाइड्रोजन और एक भाग ऑक्सीजन मिलकर पानी बनता है, उसी प्रकार जीवन का सूत्र—एम-टू-ए है—दो भाग मेडीटेशन (चिंतन-मनन) और एक भाग एक्टीविटी (प्रवृत्ति)।

—नवभारतटाइम्स, ११ सितम्बर १९७१

५ जीवन के तीन सिद्धान्त—

(क) जीव जीव का भोजन है। —डार्विन

(ख) जीओ और जीने दो। —हक्सले

(ग) जिलाने के लिए जीओ। —गांधी

●

१० जीवन की अस्थिरता

अणिच्चे खलु भो! मणुयाणजीविए कुसग्गजलविन्दुचंचले।

— दशवैकालिकचूलिका १

ओह! मनुष्यो का जीवन अनित्य है एव डाभ की अणी पर ठहरे हुए जलविन्दुवत् चचल है।

जीविय चेव रूव च, विज्जुसपायचंचल।

—उत्तराध्ययन १८।१३

यह जीवन और रूप—सौन्दर्य विजली की चमक के समान चचल है।

उद्घाटितनवद्वारे, पञ्जरे विहगोऽनिलः।
यत्तिष्ठति तदाश्चर्यं, प्रयाणे विस्मयः कुत.॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ३८४

इस शरीररूप पीजरे मे—दो कान, दो आख, दो नाक मु ह, मूत्रद्वार मलद्वार—ये नव द्वार खुले हुए हैं। इसमे श्वासरूप पछी जो ठहरता है, वह आश्चर्य है, उसके उड जाने मे नहीं अर्थात् जीना आश्चर्य है, मरना नहीं।

जीवन एक खिले हुए फूल के समान है, कुछ समय के वाद अपने आप ही कुम्हलाकर गिर पडेगा।

सयोगा विप्रयोगान्ता, मरणान्तं ही जीवितम्।

कात्यायन-स्मृति

आखिर सयोग वियोग के रूप मे, और जीवन मरण के रूप मे परिणत होनेवाला है।

क्षणिक प्रकाश देनेवाले दीपक बुझो ! जीवन तो केवल चलती-फिरती छाया (क्षणिक प्रकाश) है।

—शेक्सपियर

तिनका सम जीवित है जग मे,
सुत-मित्र-सहोदर है किनका।
किन कारन भूल रह्यो भवफद मे,
मार है धर्म दया जिनका।
जिन कानन रामचरित्र सुन्यो,
सोहि केवल जन्म दिया तिनका।
तिनका जब ध्यान लगा प्रभु से,
तो कहा जमराज करे तिन का ।।

—भाषाश्लोकसागर

११ जीवन से लाभ

१ जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति ।
जीवित व्यक्ति सैंकडो सुख देख लेता है ।

२ एति जीवन्तमानन्दो, नरं वर्षशतादपि ।

—वाल्मीकिरामायण ५।३४।६

जीवित मनुष्य को सौ वर्ष के बाद भी आनन्द प्राप्त हो जाता है ।

३ जीएगा नर तो फिर वसेगा घर ।
- सिर सलामत तो पगडी पचास ।
- जान है तो जहान है ।

—हिन्दी कहावत

४ जीवतो माणस मौवाना जुए ।
- कोठी हशे तो ढांकण घणाय मलशे ।

—गुजराती कहावतें

५ दृषद्भि सागरो बद्ध, इन्द्रजिन्मानवैर्जित. ।
वानरैर्वेष्टिता लङ्का. जीवद्भिः किं न दृश्यते ?

—चन्दचरित्र, पृष्ठ ७६

पत्थरो ने समुद्र को बाध डाला, मनुष्यो ने इन्द्रजित् को जीत लिया और वानरो द्वारा लका घेरली गई । जीवित व्यक्ति क्या-क्या नही देखते ?

श्रेष्ठ जीवन

१२

१ पञ्ञाजीविं जीवितमाहु सेट्ठं । —सुत्तनिपात १।१०।२

प्रज्ञामय (बुद्धियुक्त) जीवन को ही श्रेष्ठ जीवन कहा है।

२ अच्छा जीवन ज्ञान और भावनाओ तथा बुद्धि और सुख का समिश्रण होता है। —सुकरात

३ स्वाभिमान, आत्मज्ञान और आत्मसयम—ये तीन ही जीवन को अलौकिक शक्ति की ओर ले जानेवाले हैं। —टेनीशन

४ जीवन एक कहानी के सदृश है, वह कितनी लबी है—यह नही वरन् कितनी अच्छी है - यह विचारणीय विषय है। —सेनेका

५ एक विद्वान् ने कहा—
लिविंग इज कीलिंग अर्थात् जीना दूसरो को मारना है। तत्काल प्रश्न हुआ कि फिर श्रेष्ठजीवन कौन सा ?
विद्वान् ने उत्तर दिया—
कीलिंग लीस्ट लिविंग बेस्ट अर्थात् वही जीवन श्रेष्ठ है, जिसमें कम हिंसा हो।

६ यस्मिन् श्रुतिपथायाते, दृष्टे स्मृतिमुपागते।
आनन्द यान्ति भूतानि, जीवित तस्य शोभते ।। —योगवाशिष्ठ

जिसके श्रवण से, दर्शन मे और स्मरण मे प्राणी आनन्द पाते है, वास्तव मे उसी का जीवन शोभायुक्त है।

७ वाणी रसवती यस्य, भार्या पुत्रवती सती।
लक्ष्मीर्दानवती यस्य, सफल तस्य जीवितम्॥

—सुभाषितरत्नभाडागार, पृष्ठ १०२

जिसकी वाणी सरस है, स्त्री पुत्रवती एव सती है और लक्ष्मी दानवती है, उसी का जीवन सफल है।

८ एक दिन दुपहर को सत कबीर सूत सुलझा रहे थे। बनारस के एक विद्वान् ने आकर उनसे पूछा—गृहस्थ बनू या साधु? कबीर ने उत्तर न देकर अपनी स्त्री से कहा—सूत सुलझाना है अत दीपक लाओ! स्त्री बिना किसी तर्क के फौरन दीपक ले आई। विद्वान् कुछ नही समझा। फिर उसे लेकर कबीर एक वृद्धसाधु के स्थान पर गए एव आवाज दी, महाराज! जरा नीचे आइए, दर्शन करना है। साधु आया। कबीर बोले—अच्छा चले जाइए, हो गए दर्शन। साधु ऊपर पहुचा ही था कि फिर आवाज दी। बेचारा नीचे आकर पूछने लगा—क्या काम है? कबीर ने कहा—प्रश्न पूछना था किन्तु अभी तो भूल गए। साधु को इस प्रकार कई बार नीचे बुलाया एव ऊपर भेजा, फिर भी वह गर्म नही हुआ।

कबीर आगन्तुक विद्वान् से कहने लगे, भाई! यदि ऐसी क्षमा रख सको तो साधु-जीवन अच्छा है और वैसी विनीत-स्त्री हो तो गृहस्थजीवन भी अच्छा ही है।

८ हम ऐसा जीवन व्यतीत करें कि दफनानेवाले भी दो आंसू बहा दें।

—पैट्रार्क

९ याद है कि वक्ते-पैदाइश, सब हँसते थे और तू रोता।
ऐसी करनी करो कि मरते वक्त, सब रोते रहें और तू हँसता।

—उर्दू शेर

१० तुम अपने जीवन को इतना पवित्र रखो कि कोई तुम्हारी निन्दा करे, फिर भी लोग उसका विश्वास न करें।

—अमूल्यशिक्षा से

११ What is life ?

Life is to live, to live is to act, to act is to do something good, to do something good is to love humanity, to love humanity is to love God, so to live is to love, the difference is only of I & O I means selfness O means Zero or nothing, So in the real sence of the world, life is to reduce your I in to O,

वाट इज लाइफ ?

लाइफ इज टु लिव, टु लिव इज टु ऐक्ट, टु ऐक्ट इज टु डु समथिंग गुड, टु डु, समथिंग गुड इज टु लव ह्यूमेनिटी, टु लव ह्यूमेनिटी इज टु लव गोड, सो टु लिव इज टु लव, दी डिफरेंस इज ओनली ओफ आई ऐन्ड ओ आई मीन्स्, सेल्फनेस ओ मीन्स् जीरो ओर नथिंग, सो इन दी रीयल सेन्स ऑफ दी वर्ल्ड, लाइफ इज टु रिड्यूस योर आई इन टु ओ।

—एक अंग्रेज विचारक

जीवन क्या है—जीवन जीने के लिए है, जीना कुछ करने के लिए है, करना कुछ सत्कर्म करने के लिए है, सत्कर्म करना मनुष्यता से प्रेम करने के लिए है, मनुष्यता का प्रेम भगवान से प्रेम करने के लिए हैं। सार यह निकला कि जीवन प्रेम के लिए है। "लिव" और "लव" में केवल "आई" एवं "ओ" का अन्तर है। "आई" का अर्थ खुदगर्जी है तथा "ओ" का अर्थ शून्य अथवा कुछ नहीं है। अतः विश्व का वास्तविक सत्य यही है कि "लिव" (जीवन) में विद्यमान "आई" को "ओ" में बदल दो अर्थात् खुदगर्जी को खत्म करके प्रभु के प्रेमी बन जाओ।

१३ निकृष्ट जीवन

१ स जीवति गुणा यस्य, यस्य धर्मः स जीवति ।
गुण-धर्मविहीनस्य, जीवितं निष्प्रयोजनम् ॥

—चाणक्यनीति १४।१२

जिसके अन्दर गुण और धर्म विद्यमान है, उसी का जीवन सच्चा जीवन है । गुण और धर्महीन जीवन निरर्थक है ।

२ जीवन्तोऽपि मृताः पञ्च, श्रूयन्ते किल भारते ।
दरिद्रो व्याधितो मूर्खो, प्रवासी नित्यसेवकः ॥

—पंचतंत्र १।२।८६

(१) दरिद्र, (२) रोगी, (३) मूर्ख, (४) विदेश में भ्रमण करनेवाला, (५) दूसरों की सेवा करनेवाला (नौकर) ये पांच जीवित भी मृतकों के के समान हैं । ऐसे महाभारत में सुना जाता है ।

३ धिग् जीवितं ज्ञातिपराजितस्य,
धिग् जीवितं व्यर्थ - मनोरथस्य ।
धिग् जीवितं शास्त्र-कलोज्झितस्य,
धिग् जीवितं चोद्यमवर्जितस्य ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १८०

जो स्वजनों से पराजित है, व्यर्थ संकल्प-विकल्प करनेवाला है, शास्त्र एवं कला से शून्य है और निरुद्यमी है—इन सभी का जीवन धिक्कार का पात्र है ।

४ प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जित धनम् ।
तृतीये नार्जित पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यति ?

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६६

जिसने जीवन के पहले भाग मे विद्या नही पढी, दूसरे भाग मे धन नही कमाया और तीसरे भाग मे धर्म-पुण्य नही किया । वह चौथे भाग मे क्या कर सकेगा ?

५ जवानी के दिन जो गंवाते फिरे, वडे होके चिमटा वजाते फिरे ।
जो फ़लो की सेजो मे लेटा करे, खडे होके काटा समेटा करे ।
समेटे जो गरमी मे फ़लो का रस, न शरदी मे क्यो शहद चाटे मगस ॥

—उर्दू शेर

६ विना लक्ष्य का जीवन जीनेवाला, कहाँ जाना है—यह निश्चय किए विना रेलगाडी मे चढ वैठनेवाले व्यक्ति के समान मूर्ख है ।

७ तीन के विना जीवन व्यर्थ है—
१—विना दया के जीवन व्यर्थ है,
२—विना परोपकार के जीवन व्यर्थ है,
३—विना उदारता के जीवन व्यर्थ है ।

—'तीनवात' पुस्तक से

८ गुजर की जव न हो सूरत, गुजर जाना ही वेहतर है ।
हुई जव जिन्दगी दुश्वार, मर जाना ही वेहतर है ॥

—उर्दू शेर

१५ आयु

१ जिसकी विद्यमानता मे जीव जीता है एव पूरा होने पर मरता है या जिसके उदय से जीव एक गति से दूसरी गति मे जाता है अथवा स्वकृतकर्म से प्राप्त नरकादि—दुर्गति मे निकलना चाहते हुए भी नही निकल सकता, उसको आयु अथवा आयुष्यकर्म कहते हैं।

—प्रज्ञापना २३।२ टीका

२ आयु के चार भेद—१—नरकायु, २—तिर्यञ्चायु, ३—मनुष्यायु, ४—देवायु। नरकायु और देवायु जघन्य दस हजार वर्ष की है, एवं उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की है। तिर्यञ्चायु एव मनुष्यायु जघन्य अन्तर्मुहूर्त की है और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की है।

—प्रज्ञापना ४

३ नरकादि-आयुबन्ध के कारण—

चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्म पगरेंति, त जहा—महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, पंचिंदयवहेण, कुणिमाहारेण।
चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेण, कूडतुल-कूडमाणेण।
चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पगरेंति, त जहा—पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए।
चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्म पगरेंति तं जहा—सरागसंजमेण संजमासंजमेण, बालतवोकम्मेण, अकामणिज्जराए।

—स्थानाग ४।४।३७३

चार कारणो से जीव नरक का आयुष्य वांधता है—

१—महारम्भ से—तीव्र-कपायपूर्वक-जीवहिंसा करने से,

२—महापरिग्रह से—वस्तुओ पर अत्यन्त मूर्च्छा करने से,

३—पञ्चेन्द्रिय जीवो का वध करने से,

४—मास का भोजन करने से ।

चार कारणो से जीव तिर्यञ्च का आयुष्य वांधता है—

१—माया-कपट करने से,

२—निकृति-गूढ-माया करने से, (ढोग करके दूसरो को ठगने से),

३—असत्य वोलने से,

४—झूठा तोल-माप करने से अर्थात् माल लेते समय वडे और देते सम
छोटे माप-तोल का उपयोग करने से ।

चार कारणो से जीव मनुष्य का आयुष्य वाधता है—

१—प्रकृतिभद्रता यानी सरल स्वभाव से,

२—प्रकृति की विनीतता से (विनीतस्वभाववाला होने से),

३ दयावान होने से,

४—मत्सर-ईर्ष्याभाव न रखनेवाला होने से ।

चार कारणो से जीव देवता का आयुष्य वाधता है—

१—सराग-अवस्था मे सयम पालने से,

२—श्रावकपना पालने से,

३—अकामनिजरा से,

४—अज्ञान-अवस्था मे काय-क्लेश आदि तप करने से ।

४ अल्पायु-दीर्घायु—

तिहि ठाणेहि जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति त जहा—
पाणे अइवाइत्ता भवइ, मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समण वा, माहण
वा, अफासुएण अणेसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमे
पडिलाभित्ता भवइ ।

तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति, तं जहा—
णो पाणे अइवाइत्ता भवइ, णो मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणंवा माहण वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभित्ता भवइ।

—स्थानांग ३।१।१२५

तीन कारणों से जीव अल्प-आयु बाधता है—

१—जीवहिंसा करने से,

२—झूठ बोलने से,

३—श्रमण-निर्ग्रन्थो को अप्रासुक-अनेषणीय आहार आदि देने से।

तीन कारणो से जीव दीर्घ-आयु बांधता है—

१—जीवहिंसा छोडने से,

२—झूठका परित्याग करने से,

३—साधुओ को प्रासुक-एषणीय आहार आदि देने से।

५ कम से कम अल्पआयु २५६ आवलिका की होती है। निगोद के जीव इसी अल्पआयु के हिसाब से एक मुहूर्त मे ६५५३६ भव करते है—इनका दुःख नरक से भी अधिक माना गया है।

●

३

लम्बी आयुवाले व्यक्ति

१६० वर्षीय वृद्ध बाबा पूरणसिंह

१ एक सौ साठ वर्षीय पूरणसिंह ने कहा—"आज के लोग बहुत पापी और अधर्मी हैं। महाराजा रणजीतसिंह का युग बहुत अच्छा था, लोग धर्म पर आस्था रखते थे और सच बोलते थे, लेकिन आज चारो ओर झूठ का बोलबाला है। दसवें बादशाह गुरु गोविन्दसिंह ने मुझे एक बार स्वप्न में दर्शन दिये और कहा—"झूठ मत बोलना। मुझे अब भी कभी-कभी दसवें बादशाह गुरु गोविन्दसिंह के दर्शन होते रहते हैं।" बाबा पूरणसिंह का कहना है कि उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह का युग देखा है और वे अब १६० वर्ष के हो गए हैं और पता नहीं कितने दिन और जीवित रहेंगे? जालन्धर

(पजाव) की एक वस्ती खेल के निवासी वावा अपनी दीर्घायु का रहस्य
खुश्क रोटी दाल और चाय वतलाते हैं।

—धर्मयुग, १३ फरवरी १९७२
['अपने वतन मे' से साभार]

२ रूस मे १०० वर्ष से अधिक लम्वी आयुवाले लगभग ३० हजार व्यक्ति हैं,
उनमे ४०० महिलाएँ भी हैं। लम्वी आयुवाले व्यक्तियो मे से एक व्यक्ति
ने अभी-अभी अपना १६४ वा जन्म दिन मनाया है। वह सोवियत रूस के
अजरवैजानके ताल्यिस पर्वत श्रेणी पर वहुत ऊचाई मे वसे हुए दारजाबू
गाँव मे रहता है एव उसका नाम शिराली मुस्लिमोव है। इतनी लम्वी
आयु होने पर भी वह वहुत स्वस्थ है।

— हिन्दुस्तान, ४ जुलाई १९६९ यून्यू के अनुसार
तथा सोवियतभूमि, अक २०, अक्टूवर १९६५ के आधार से।

३ तुर्की और सोवियत सघ की सीमा के समीप सार्प गाँव मे एक वृद्धा रहती
है, उसका नाम हेटिस नाइन है। आयु १६८ वर्ष की है, फिर भी वह पूर्ण
स्वस्थ है। वृद्धा का जन्म सन् १७९५ मे हुआ था, उस समय सयुक्तराज्य
अमेरिका के राष्ट्रपति वाशिगटन पदारूढ थे। सन् १८५३-५५ मे हुए
क्रीमिया के युद्ध की वाते उसे अच्छी तरह याद हैं। इसी युद्ध मे घायल
होकर उसका पुत्र मरा था।

—नवभारतटाइम्स, २ जून १९६३ के आधार से

४ १८० वर्षीय मुहम्मद अयूव, जो विश्व के सवसे वूढे व्यक्ति वताए जाते हैं
वह पूर्वोत्तर ईरान के सव्जावार क्षेत्र के निवासी है। (देखिए क्रमश तीनों
के चित्र पृष्ठ २२७ पर)

—वीर अर्जुन, ११ जनवरी १९७० के आधार से

५ गोलपाडा जिले के फिशनवारी ग्राम का मुशी उमेदअली एशिया का
सवसे वृद्ध व्यक्ति माना जाता है। अली की आयु इस समय १८२ वर्ष की
है। इस अवस्था मे भी उसके अंग वहुत मजवूत हैं तथा दृष्टि और श्रवण
शक्ति विलकुल ठीक हैं।
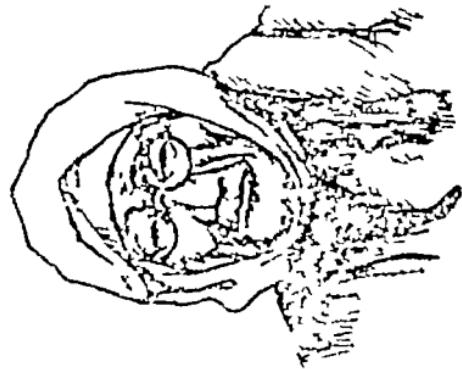
शिराली मुस्लिमोव[1] हैटिस नाइन[2] मुहम्मद अयूब[3]

१ सोवियत रूस के अजरबैजान के तालिश पर्वतश्रेणी के उच्चशिखर पर बसे बारजावू गाव का निवासी १६४ वर्षीय शिराली मुस्लिमोव।

२ तुर्की और सोवियत संघ की सीमा पर स्थित सार्प गाव की निवासिनी १६८ वर्षीय वृद्धा हैटिस नाइन"

३ पूर्वोत्तर ईरान के सब्जावार क्षेत्र के निवासी १८० वर्षीय मुहम्मद अयूब।

आगरा की वृद्ध जनसम्मानसमिति ने उमेदअली का सम्मान करने और उसे उचित पुरस्कार देने की घोषणा की है। उसका परिवार अब ८०० सदस्यों का है, जिसमे उसके पोते और परपोते भी शामिल है।

मुंशी उमेदअली को आशा है कि वह अभी कम से कम दस वर्ष तक और जीवित रहेगा।

—हिन्दुस्तान, ३० दिसम्बर, १९६९ के आधार से

काहिरा मे एक आदमी है जिसकी आयु लगभग २०० वर्ष की है और नाम अमर-शाहत है। उसकी पहली शादी ४२ वर्ष की आयु मे तथा दूसरी शादी १२० वर्ष की आयु मे हुई थी। उसका कहना है कि जब वीर नेपोलियन ने मिश्र को छोडा था, उससे कुछ समय पूर्व ही उसकी पहली शादी हुई थी।

—हिन्दुस्तान, १२ अप्रेल १९५२ के आधार से

७ लम्बी आयुवाले कतिपय पशु-पक्षी—

मिश्र के गीध ११२ साल तक जीते हैं। सुनहले ऊकाब ११४ वर्ष तक, तोते १०२ वर्ष तक, हँस ६० वर्ष तक, सारस ४३ वर्ष तक, मोर ४० वर्ष तक, बुलबुल २५ वर्ष तक, गिलहरी १५ वर्ष तक और सियार १४ वर्ष तक जिन्दा रहते हैं।

—साप्ताहिक हिंदुस्तान

१६ कतिपय देशों की औसत आयु

क्र० सं०	देशो के नाम	समय	पुरुष	स्त्री
१	नार्वे	१९५६-६०	७१ ३२	७५ ९०
२	स्वीडन	१९६१-६५	७१·६०	७५ ७०
३	कनाडा	१९६५-६७	६८ ७५	७५ १८
४	फ्रान्स	१९६४	६८ ००	७५ १०
५	आस्ट्रेलिया	१९६०-६२	६७ ९२	७४ १८
६	स्वीट्जरलैंड	१९५८-६१	६९ ५०	७४ ८०
७	डेनमार्क	१९६३-६४	७०·३०	७४ ६०
८	यू० के० (इंगलैंड)	१९६३-६५	६८ ३०	७४ ४०
९	यू० एस० ए०	१९६८	६६ ६०	७४ ४०
१०	न्यूजीलैंड	१९६०-६२	६८ ४४	७३ ७५
११	चेकोस्लोवाकिया	१९६४	६७ ७६	७३ ५६
१२	जापान	१९६५	६७ ७३	७२ ९५
१३	आयर्लैंड	१९६०-६२	६८ १३	७१ ८६
१४	रसिया	१९६७-६८	७० ००	७० ००
१५	मैक्सिको	१९६५-७०	६१ ०३	६३ ७३
१६	मारीशस	१९६१-६३	५८ ६६	६१ ८६

क० स०	देशो के नाम	समय	पुरुष	स्त्री
१७	सिलोन	१९६२	६१ ९०	६१ ४०
१८	ब्राजील	१९६५-७०	६० ७०	६० ७०
१९	लिबिया	१९६५-७०	५२ १०	५२ ०
२०	पाकिस्तान	१९६२	५३ ७२	४८ ८०
२१	अलजीरिया	१९६५-७०	५० ७०	५० ७०
२२	चाइना	१९६५-७०	५० ०	५० ०
२३	केन्या	१९६५-७०	४७ ५०	४७ ५०
२४	भारतवर्ष[1]	१९५७-५८	४५ २३	४६ ५७
२५	वर्मा	१९५४	४० ८०	४३ ८०
२६	इथोपिया	१९६५-७०	३८ ५०	३८ ५[illegible]
२७	घाना	१९६०	३७ ८०	
२८	अफगानिस्तान	१९६५-७०	३७ ५०	३७ ५०

—यू० एन० डेमोग्राफिक इयरबुक—१९६६ तथा १९७०-७१

[1]—इस समय भारतवर्ष की औसत आयु ५२ वर्ष है ।

आयुः-क्षय

१ आयु दो प्रकार की है—अपवर्तनीय और अनपवर्तनीय। बाह्य-शस्त्रादि का निमित्त पाकर जो आयु बीच में टूट जाती है अर्थात् स्थितिपूर्ण होने के पहले ही शीघ्रता से भोग ली जाती है, वह अपवर्तनीय आयु है। जो आयु अपनी पूरी स्थिति भोगकर ही समाप्त होती है, बीच में नहीं टूटती वह अनपवर्तनीय आयु है।

२ अपवर्तनीय और अनपवर्तनीय आयुवाले व्यक्ति—

औपपातिक-चरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः।

—तत्वार्थसूत्र २।५३

देव, नारक, चरमशरीरी (उसी भव में मोक्ष जानेवाले जीव), उत्तम-पुरुष (तीर्थंकर—चक्रवर्ती आदि ६३ शलाकापुरुष) तथा असंख्यातवर्ष की आयुवाले मनुष्य-तिर्यञ्च (युगलिक)—ये अनपवर्तनीय-आयुवाले होते हैं एवं शेष जीव दोनों ही प्रकार की आयुवाले होते हैं।

३ आयु टूटने के सात कारण—

सत्तहिं ठाणेहिं आउ भिज्जइ तं जहा—

अज्झवसाण-निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए।

फासे आणपाणू, सत्तविहं भिज्जए आउ।

—स्थानांग ८।७५

सात कारणों से आयुष्य टूटता है :—

१ अध्यवसान—राग, स्नेह या भयरूप प्रबल आघात के लगने से।

२ निमित्त—शस्त्र, मुद्गर एवं दण्ड आदि शस्त्रों के प्रहार लगने से।

३ आहार—अधिक भोजन या विषादियुक्त भोजन करने से ।
४ वेदना—अक्षिशूल—उदरशूल आदि द्वारा असह्यवेदना-(पीडा) होने से ।
५ पराघात—गड्ढे-कूप आदि मे गिरने रूप बाह्य-आघात लगने से ।
६ स्पर्श—शरीर मे विष फैलानेवाली वस्तु के स्पर्श से अथवा सर्प आदि जहरी-जन्तुओ के काटने से ।
७ आनप्राण—श्वास की गति बन्द हो जाने से ।

४ सेणे जह वट्टयं हरे, एव आउखयमि तुट्टइ ।

—सूत्रकृतांग २।१।२

जैसे—बाज, चिडिया आदि पक्षियो को हर लेना है, वैसे, आयु क्षीण होने पर काल जीवन को नष्ट कर देता है ।

५ ताले जह बधणच्चुए, एव आउखयमि तुट्टइ ।

—सूत्रकृताग २।१।६

जिस प्रकार ताल का फल वृन्त से टूट कर नीचे गिर पडता है, उसी प्रकार आयु क्षीण होने पर प्रत्येक प्राणी जीवन से च्युत हो जाता है ।

६ गब्भाइ मिज्जंति बुया बुयाणा, नरा परे पचसिहा कुमारा ।
जुवाणगा मज्झिम थेरगा य, चयति ते आउखए पलीणा ॥

—सूत्रकृतांग ७।१०

आयु क्षीण होने पर कई जीव गर्भावस्था मे मर जाते है, कई स्पष्ट बोलने की अवस्था मे, कई उससे पहले ही कुमारावस्था मे, कई युवा होकर, कई आधी उम्र के होकर एव कई वृद्ध होकर मर जाते है ।

७ कुत: कुशलमस्माक, गलत्यायुर्दिने-दिने ।
मिलनेवाले पूछा करते है कि कुशल-क्षेम है ? किंतु हमारा कुशल कहाँ है, आयुष्य तो दिन-दिन घटता जा रहा है ।

८ विना खेवटिये नाव चलावत, सो तो बुड्यो क-बुड्यो क-बुड्यो है ।
देवी के आगे महीप खड्यो फिर, सो तो गुड्यो क-गुड्यो क-गुड्यो है ।
जे नर जोगी को संग करे नित्यो,सो तो मुंड्यो क-मुंड्यो क-मुंड्यो है ।
दाखत है ब्रह्मानन्द तेरो यह,हंस उड्यो क-उड्यो क-उड्यो है ॥१॥

घडियाल के पास कटोरी धरी रहै, सो तो भरी क-भरी क भरी है।
काठ चिताबिच बैठी सती फिर, सो तो बरी क-वरी क-वरी है।
सिंह के आगे खडी रहे बाकरी, सो तो मरी क-मरी क-मरी है।
दाखत है ब्रह्मानन्द तेरी यह, देह पड़ी क-पडी क-पडी है ।।२।।

काठ के शीश करोत धरी जब,सो तो कट्यो क-कट्यो क-कट्यो है।
दूध मे काजी मिलाय धरी फिर,सो तो फट्यो क-फट्यो क-फट्यो है।
बलवत से निर्बल आय अड्यो फिर,सो तो हट्यो क-हट्यो क-हट्यो है।
दाखत है ब्रह्मानन्द तेरो यह,आयु,घट्यो क-घट्यो क-घट्यो है ।।३।।

फागण वाय लग्यो तरुपान के, सो तो खिर्यो क-खिर्यो क-खिर्यो है।
वेलु,के थभ पे महल चिण्यो फिर,सो तो गिर्यो क-गिर्यो क-गिर्यो है।
कूडी ही बात दृढाय कहे नर,सो तो फिर्यो क-फिर्यो क-फिर्यो है।
दाखत है ब्रह्मानन्द तेरो यह आयु भिड्यो क-भिड्यो क-भिड्यो है ।।४।।

९ न हि स्वमायुश्चिकिते जनेषु।

—ऋग्वेद ८।२३।३

कोई मनुष्य अपनी आयु-जीवनकाल को नहीं जानता।

१८ मरण

१ आयुष्यकर्म के समाप्त होने पर शरीर से प्राणो का निकल जाना मरण कहलाता है।

—लोकप्रकाश, पुंज ७।१७

२ भयसीमा मृत्यु:।

—सुभाषितरत्नखण्डमजूषा

भय की अन्तिम सीमा मृत्यु है।

३ मरणं हि प्रकृतिः शरीरिणा, विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधैः।

—रघुवंश ८।८७

विद्वानो का कहना है कि मरण देहधारियो की प्रकृति है और जीवन विकृति है।

४ जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ।

—योगवाशिष्ठ

जन्मधारी का मरण निश्चित है।

५ अमराई रा वीज वोय र कोई को आयो नी।

० ऊगसी जको आथमसी।

० कोठी मे घाल्या ही को जीवैनी।

० मौत री कोई दारु कोनी।

० बूटी नं बूंटी कोनी।

० बकरे की मां किना आवर टालनी।

—राजस्थानी कहावतें

६ पवनतणी परतीत, किण कारण काठी करै ।
इण री आहि ज रीत, आवै के आवै नही ॥

—श्रीकालुगणी से श्रुत

७ मरता किसा गाडा जूतै है ।

—राजस्थानी कहावत

८ डैथ डिफाइस डॉक्टर

—अंग्रेजी कहावत

जाको मारै साइया, राख सकै न कोय ।

९ हथोडो छूटो हाथ सूं, पडियो आय कपाल ।
झरोखो झिलतो रह्यो, बिच मे कर गयो काल ।
खाय न सकियो खीचडी, पुर ने सकियो आग ।
सोय न सकियो सेझ मे, यूं ही गयो निराश ॥

—राजस्थानी दोहे

सेठ ने बडी ही उमग मे महल बनवाया । प्राय तैयार हो चुका था । एक दिन भोजन के समय थाली मे परोसी हुई खिचडी छोडकर ज्योंही महल का काम देखने लगा, अचानक कारीगर के हाथ मे हथौडा छूटकर सेठ के सिर पर गिरा और वह मर गया ।

१० सोते समय मौत को सिरहाने एव जागते समय सामने खडी समझकर काम करो ।

१६ मृत्यु की निर्दयता

१ कवलयन्नविरतं जङ्गमाजङ्गम,
जगदहो ! नैव तृप्यति कृतान्त' ।
मुखगतान् खादतस्तस्य करतलगतै-
र्न कथमुपलप्स्यतेऽस्माभिरन्तः ॥

—शातसुधारस १

अहो ! इस चराचर ससार का निरन्तर भक्षण करता हुआ भी यह काल नही अघाता । अपने मुख मे आए हुए प्राणियो को चबाते हुए उस काल की मुट्ठी मे रहे हुए हम कैसे नही मरेगे ? हमे अवश्य मरना ही होगा ।

२ माली आवत देख के, कलिया रही पुकार ।
फूले-फले चुन लिए, काल हमारी बार ॥

३ जहेह सीहोव मियं गहाय, मच्चू नर नेइ हु अंतकाले ।

—उत्तराध्ययन १३।२२

सिह जैसे मृग को पकड कर ले जाता है, वैसे ही अन्तसमय मृत्यु भी प्राणी को ले जाती है ।

४ तुरग-रथेभनरावृतिकलित, दधत बलमस्खलित,
हरति यमो नरपतिमपि दीन, मैनिक इव लघुमीनम् ।
विनय ! विधीयता रे ! श्रीजिनधर्म. शरणम्,
प्रविशति वज्रमये यदि सदने, तृणमथ घटयति वदनं ।
तदपि न मुञ्चति हत ! समवर्ती, निर्दय-पौरुपनर्ती ॥

—शातसुधारस २

जैसे—मच्छीमार छोटी मछली को पकडता है, उसी प्रकार चतुरगिणी सेना से परिवृत महाबली राजा हो, चाहे हीन-दीन गरीब हो, यह यम (मृत्यु) सबका महार कर डालता है। चाहे कोई वज्रमय घर मे घुस जाये अथवा मुँह मे तृण ले ले। सब पर समानरूप से वर्तनेवाला एव अपने क्रूर पराक्रम से नाचनेवाला यह काल किसी को नही छोडता। अत. रे जीव! धर्म की शरण ले ले।

५ चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दुईपट भीतर आइ के, साबत गया न कोय॥

६ हाड जरै ज्यो लाकडी, केश जरै ज्यो घास।
सब जग जरता देख के, भए कबीर उदास॥
एक दिन ऐसा होएगा, कोउ काहू का नाहि।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाय॥

—कबीर

७ मातुलो यस्य गोविन्द ,पिता यस्य धनजय।
अभिमन्यू रणे शेते, कालोयं दुरतिक्रम.॥

—भगवान व्यास

कृष्ण जिनके मामा थे और अर्जुन जिसके पिता थे, वह वीर अभिमन्यु रणभूमि मे सो गया अत यह काल दुरतिक्रम है।

८ कदा कथ कुतः कस्मि-न्नित्यतर्क्य. खलोन्तक।
प्राप्नोत्येव किमित्याध्व, यतध्व श्रेयसे बुधा.।

—आत्मानुशासन ७८

कब कैसे,किधर से और कहा आऊँगी ? ऐसी तर्कणा न करती हुई यह दुष्ट मौत आ जाती है अत निश्चित क्यो बैठे हो ? धर्म का उद्यम करो।

९ न विज्जई सो जगति प्पदेसो, यत्थट्ठित नोपसहेय्य मच्चू।

—धम्मपद १२७

ससार मे ऐसा कोई स्थान नही, जहा रहनेवाले को मृत्यु न दबावे।

१६ मृत्यु की निर्दयता

१ कवलयन्नविरतं जङ्गमाजङ्गम,
जगदहो ! नैव तृप्यति कृतान्त ।
मुखगतान् खादतस्तस्य करतलगतै-
र्न कथमुपलप्स्यतेऽस्माभिरन्त. ॥

—शातसुधारस १

अहो ! इस चराचर ससार का निरन्तर भक्षण करता हुआ भी यह काल नही अघाता। अपने मुख मे आए हुए प्राणियो को चबाते हुए उस काल की मुट्ठी मे रहे हुए हम कैसे नही मरेगें ? हमे अवश्य मरना ही होगा।

२ माली आवत देख के, कलिया रही पुकार।
फूले-फले चुन लिए, काल हमारी वार ॥

३ जहेह सीहोव मियं गहाय, मच्चू नर नेइ हु अंतकाले।

—उत्तराध्ययन १३।२२

सिंह जैसे मृग को पकड कर ले जाता है, वैसे ही अन्तसमय मृत्यु भी प्राणी को ले जाती है।

४ तुरग-रथेभनरावृतिकलित, दधत बलमस्खलित,
हरति यमो नरपतिमपि दीन, मैनिक इव लघुमीनम् ।
विनय ! विधीयता रे ! श्रीजिनधर्म शरणम्,
प्रविशति वज्रमये यदि सद्ने, तृणमथ घटयति वदने ।
तदपि न मुञ्चति हन्त ! समवर्ती, निर्दय-पौरुपनर्ती ॥

—शातसुधारस २

जैसे—मच्छीमार छोटी मछली को पकडता है, उसी प्रकार चतुरगिणी सेना से परिवृत महाबली राजा हो, चाहे हीन-दीन गरीब हो, यह यम (मृत्यु) सबका सहार कर डालता है। चाहे कोई वज्रमय घर मे घुस जाये अथवा मुँह मे तृण ले ले। सब पर समानरूप से वर्तनेवाला एव अपने क्रूर पराक्रम से नाचनेवाला यह काल किसी को नही छोडता। अत रे जीव! धर्म की शरण ले ले।

५ चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दुइपट भीतर आइ के, साबत गया न कोय॥

६ हाड जरै ज्यो लाकडी, केश जरै ज्यो घास।
सब जग जरता देख के, भए कबीर उदास॥
एक दिन ऐसा होएगा, कोउ काहू का नाहि।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाय॥

—कबीर

७ मातुलो यस्य गोविन्द,पिता यस्य धनजय।
अभिमन्यू रणे शेते, कालोयं दुरतिक्रम॥

—भगवान व्यास

कृष्ण जिसके मामा थे और अर्जुन जिसके पिता थे, वह वीर अभिमन्यु रणभूमि मे सो गया अत यह काल दुरतिक्रम है।

८ कदा कथ कुत कस्मिन्नित्यतर्क्य खलोऽन्तक।
प्राप्नोत्येव किमित्याध्व, यतध्व श्रेयसे बुधा।

—आत्मानुशासन ७८

यह कब,कैसे,किधर से और कहा आऊँगी ? ऐसी तर्कणा न करती हुई यह दुष्ट मौत आ जाती है अत. निश्चिन्त क्यो बैठे हो ? धर्म का उद्यम करो!

९ न विज्जई सो जगति प्पदेसो, यत्थट्ठिय नोपसहेय्य मच्चू।

—धम्मपद १२७

ससार मे ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां रहनेवाले को मृत्यु न दबाये।

२० मृत्यु की अप्रियता

१ ब्रह्मा ने नारद से पूछा—अकेले ही कैसे आए ? नारद ने कहा—भगवन् ! कोई भी आना नहीं चाहता। मैंने एक वृद्ध चौधरी से कहा—चलो भगवान के दरबार मे ! चौधरी बोला - क्या करू ! बेटी व्याहनी है, खेत काटना है, मामला भरना है—ऐसे कहता-कहता मर गया एव अपने ही घर मे कुत्ता हो गया। फिर उससे चलने के लिए कहा, उत्तर मिला—क्या करू घर पर पहरा लगाना है ? एक दिन किसी ने अचानक लाठी मार दी, कुत्ता मर कर साप हो गया। पुन. कहने पर बोला—मेरे ही पीछे क्यो पड़े है आप ?

२ ओघड फकीर दो मुर्दा-खोपडिया हाथ मे लेकर देख रहा था कि कौन-सी अमीर की है और कौन-सी फकीर की। एक राजा वहा से गुजरा और उसे देखकर कहने लगा—क्या ही खूब होता ! सेहत रहती-बीमारी न होती, दौलत ही दौलत होती, मुफलसी न होती, जिन्दगी रहती मौत न होती।

फकीर हसकर कहने लगा—नादान ! अगर बीमारी न होती तो धर्म की भावना कैसे होती ? सभी दौलतमन्द होते तो तेरी मुलाजमत कौन करता ? तथा अगर मौत ही न होती तो तू राजा कैसे बनता ?

३ कुंभार ना घड्या ने माणस ना जण्या बधा जीवे तो धरती पर समाय नहि।

—गुजराती कहावत

१ यावद्‌वद्धो मरुद्देहे, यावच्चित्तं निराकुलम् ।
यावद् दृष्टिभ्रुवो मध्ये, तावत्कालभयं कुतः ॥

—हठयोगप्रदीपिका ४०

जब तक वायु शरीर मे निबद्ध है, मन शान्त है और दृष्टि भौंहो के मध्य-भाग मे स्थित है, वहाँ तक मृत्यु का भय नही होता ।

२ श्वास दाहिना जो चले, तीन रात दिन तीन ।
काया बारह मास है, अमृत जान प्रवीण ॥१॥
दो दिन तक पिंगल चले, आयु वर्ष दो जान ।
आठ प्रहर से आयु है, वर्ष तीन पहचान ॥२॥
इडा माहि जो श्वास है सोलह दिन एक साथ ।
एक मास जीवन रहे, कहते अमृत नाथ ॥३॥
सूर्य ओर गति श्वास की, दिवस तीन इकतीस ।
दो दिन जीवन शेष है, अमृत विस्वावीस ॥४॥
बाएं नही दाहिने नही, चले सुषुम्ना श्वास ।
घडी पाच के प्राण है, अमृत का विश्वास ॥५॥
इडा पिंगला है नही, नही सुषुम्ना होय ।
मुख से श्वासोच्छ्वास है, चार घडी तन खोय ॥६॥
भानु चले जो रात को चन्द चले दिन माहि ।
दूर मृत्यु संशय नही, रोग न काया पाहि ॥७॥

—श्रीचिलक्षणअयधृत-स्वरोदय अग ८

मृत्यु का भय

१ मरणसमं नत्थि भयं।
मरण के समान दूसरा कोई भय नहीं है।

२ दुख री दाधी डोकरी, कहै परमेश्वर मार।
साप ज कालो नीकल्यो, न्हाठी घर सूं बार॥

—राजस्थानी दोहा

३ आप विदेह कैसे ? मैत्रेयी के इस प्रश्न पर राजा जनक ने कहा—मौका आने पर उत्तर दूंगा। एक दिन 'मैत्रेयी को शाम के चार बजे फांसी होगी' ऐसा हुक्म देकर उन्हें खाने का निमन्त्रण दिया। भयभीत मैत्रेयी ने भोजन किया, भोजन अलौना था लेकिन मैत्रेयी को कुछ पता नहीं लगा। जनक ने समझाते हुए कहा—आपका मरण चार बजे निश्चित था फिर भी आप बेभान हो गई। मेरा मरण तो अनिश्चित है, फिर मुझे देह का भान कैसे रहे। देह का भान न रहने से ही मुझे विदेह कहते हैं।

४ बादशाह बहुत मोटा-ताजा था। कुछ हल्का होने के लिये लुकमान हकीम से दवा पूछी! उसने कहा—चालीस दिनों में मर जाओगे! मरने के भय से बादशाह का खाना-पीना छूटा एवं शरीर का वजन घट गया।

५ पग मूकतां पाप छे, जोनां झेर छे ने माथे मरण छे—एम विचारी आज ना दिवस मां प्रवेश कर!

—श्रीमद्राजचन्द्र

२३ मरते समय भी निर्भय

१ न संतसंति मरणंते, शीलवंता वहुस्सुया ।

—उत्तराध्ययन ५।२६

चारित्रवान्-वहुश्रुत महात्मा मरण के समय भयभीत नहीं होते ।

२ सूखे नारियलवत् आत्मा व शरीर को भिन्न समझनेवाले ही मरते समय निर्भय रह सकते हैं ।

३ यस्मिन् दण्डधरः स्मरिष्यति सखे ! सोप्यस्ति कोपि क्षण ।

—संवेगद्रुमकन्दली

अरे मित्र ! वह क्षण कितना विचित्र होगा, जवकि यमराज तुम्हारा स्मरण करेगा ।

४ अयि मौत ! आकर मुझे अपना डंक मार दिखला ।

—हजरतमसीह

५ जा मरने से जग डरै, मो मन मे आनन्द ।
कव मरिहो कव पाइहो, पूरन परमानन्द ॥

—कवीर

६ हे प्रभो ! अव मैं अपनी आत्मा को तुम्हारे हाथ मे सौंपता हू ।

—अमेरिका को खोजनेवाला कोलम्बस

७ अव मैं अपनी जिन्दगी का आखिरी नाटक करने जा रहा हूं ।

—शेक्सपियर

८ अव मैं इस दुनिया से विदा ले रहा हू ।

—भारत मे अंग्रेजी हुकूमत की शुरुआत करनेवाला रोवर्टक्लाइव

उत्तममरण

१ दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गथाणं निच्च वन्नियाइं जाव अणुन्नायाइं भवन्ति, तं जहा—पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव।

—स्थानांग २।३।१०२

श्रमण भगवान महावीर ने दो प्रकार के मरण साधुओ के लिए प्रशस्त कहे हैं—यावत् उनकी आज्ञा है—पादपोपंगमन और भक्तप्रत्याख्यान।

२ ऑल्स वेल दैट एंड्स वेल।

—अंग्रेजी कहावत

जिसका अंत (मरण) अच्छा है, उसका सब कुछ अच्छा है।

३ साथ जन्म के मरण को, जिसने जान लिया।
वह हंसता रोता नही, तत्त्व पिछान लिया॥

• अमर बनाए जो हमे, है उसकी दरकार।
मरण बढे जिस मरण से, वो न हमे स्वीकार।

—दोहा-सदोह

४ आनन्द से जीने के लिए सैकडो शास्त्र, हजारो युक्तिया और लाखो करोडो औषधिया है। जैसे—जिन्दगी को बचाने के लिए वैद्यक शास्त्र, जिन्दगी को टिकाने के लिए पाकशास्त्र, जिन्दगी की सहायता के लिए कृषि-विद्या, एव जिन्दगी को सुखमय बनाने के लिए व्यापार का निर्माण हुआ है, लेकिन आनन्दपूर्वक कैसे मरना इसकी विधि केवल महर्षियो की वाणी मे है। उसका सार यही है कि मरते समय शान्त बनजाओ, पापो की आलोचना करलो और प्रभु के चरणो मे अपना सर्वस्व अर्पण करदो!

—सकलित

२५ अमरत्व

१ क्रियाकाण्ड से, प्रजनन से व धन से नहीं, अमरत्व तो त्याग से मिलता है।

—वेद

२ जो अपने जीवन की आहुति देता है, वही अमरजीवन पाता है।

—ईसा

३ अगर तुम अमर बनना चाहते हो तो पढ़ने लायक चीजें लिखो और लिखने लायक काम करो।

४ जो कुछ मानवीय है, वह सब अमर है।

—बुल्वर लिटन

५ श्रेष्ठ व्यक्ति कभी नहीं मर सकता।

गेटे

६ विना अमरत्व की भावना से प्रेरित हुए आजतक किसी ने अपने देश के लिए प्राणार्पण नहीं किया।

—सिसेरो

●

मरने के बाद

२६

१ व्हाइल देअर इज लाइफ, देअर इज होप —अंग्रेजी कहावत

जब तक सासा तब तक आशा ।

२ सांस त्यां सुधी आश, जीवै त्या सुधी जंजाल अने दम त्यां सुधी दवा । —गुजराती कहावत

३ डैथ विफॉर डिसआनर । —अंग्रेजी कहावत

जब तक प्राण, तब तक मान ।

४ आँख मीचाणी के नगरी लूंटाणी ।
- आप मुवा जग प्रलय ।
- मरनार ने उचकनार नी शी फिकर । —गुजराती कहावतें

५ मर्‍या पछै कुण देखण आवै ।
- उभां पगा री सगाई है ।
- मर्‍योडां लारै को मरीजै नी । राजस्थानी कहाव

६ दाराणि य सुया चेव, मित्ताणि तह बंधवा,
जीवंतमणुजीवति, मयं नाणुव्वयंति ते।

—उत्तराध्ययन १८।१४

स्त्री, पुत्र, मित्र और स्वजन जीते जी के ही साथी हैं, मरने पर साथ नहीं चलते।

७ मरते ही जितने यार थे, अगयार हो गए।
खाक मे मिलाने को, तैयार हो गए॥

—उर्दू शेर

८ लीला की लगन मांह ज्ञान की जगन नांह,
जग न रहाय नर! तउ न रहायवो।
चले जर कौन-चट्ट को न यहां करत हठ,
नदी तट तरु कौन भाति ठहरायवो।
सपना जहान तामे अपना निदान कौन,
जपना किमन! जान तातें दुख जायवो।
मोह मे मगन मगमग ना धरै है पग,
नग न चलेंगे संग गगन चलायवो।

—किसनबावनी

० जैते मनि मानिक है जोरे मनि-मानिक है,
धन मे धरे हैं सो तो धरा ही धराय वो।
एक भूप राख! भूख राख मत भूपन की,
वह भूप राख जन भूख न बनायवो।
देह-देह-देह! फिर पायवो न एह देह,
कहा जानू यह जीव कौन जोन जायवो।

गमन के समय नग गनन-गनन देख,
नग न चलेंगे संग नगन चलायवो

—भाषाश्लोकसागर

अब तो घवरा कर, यह कहते हैं कि मर जाएँगे।
पर मर कर भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे ?

—उर्दू शेर

मृत जीवित नहीं होता—

(क) उज्जड खेडा फिर वसै, निर्धन धनिया होय।
वीत्या दिन नहि वाहुडे, मुआ न जीवित होय ॥

—राजस्थानी दोहा

(ख) डेड मैन टेल्स न्यूटल।

—अंग्रेजी कहावत

मरा हुआ आदमी माथा नही उठाता।

(ग) मसाणा गयोडा मुडदा आगै ही पाछा आया हा !

—राजस्थानी कहावत

मरने के वाद प्रशंसा—

मूई भैंसना मोटा डोला, मूई भैंसनु घी घणु।
जीवता लाखनां ने मूआ सवालाखना।

—गुजराती कहावत

मरने के वाद गति—

पंचविहे जीवस्स निज्जाणमग्गे पन्नत्ते, तं जहा—
पाएहिं, ऊरूहिं, उरेणं, सिरेणं सव्वंगेहिं। पाएहिं निज्जाणमाणे णिरयगामी भवइ, ऊरूहिं णिज्जाणमाणे तिरियगामी भवइ, उरेणं णिज्जाणमाणे मणुयगामी भवइ, सिरेणं णिज्जाणमाणे देवगामी भवइ, सव्वगेहिं णिज्जाणमाणे सिद्धिगइ—पज्जवसाणे पन्नत्ते।

—स्थानांग ५।४६१

जीव निकलने के पाच मार्ग माने गये है—१ पैर, २ जङ्घा, ३ हृदय, ४ मस्तक ५ सर्वअङ्ग ।

(१) जो जीव दोनो पैरो से निकलता है, वह नरकगामी होता है ।
(२) दोनो जघाओ से निकलनेवाला जीव तिर्यञ्चगति मे जाता है ।
(३) हृदय (छाती) से निकलनेवाला जीव मनुष्य गति मे जाता है ।
(४) मस्तक से निकलनेवाला जीव देवो मे जाकर पैदा होता है
(५) जो जीव सभी अगो से निकलता है, वह जीव सिद्धगति मे जाता है ।

२७ मरण के भेद आदि

१ पंचविहे मरणे पन्नत्ते, तं जहा—
आवीचियमरणे, ओहिमरणे, आंतितियमरणे, बालमरणे, पंडितमरणे
—भगवती १३।७।४९६

पाँच मरण कहे हैं—

१ आवीचिमरण—आयुकर्म के भोगे हुए पुद्गलो का प्रत्येक क्षण मे अलग होना आवीचिमरण है।

२ अवधिमरण—नरक आदि गतियो के कारणभूत आयुकर्म के पुद्गलो को एक वार भोग कर छोड देने के वाद जीव फिर उन्ही पुद्गलो को भोग कर मृत्यु प्राप्त करें तो वीच की अवधि को अवधिमरण कहते हैं—अर्थात् एक वार भोगकर छोडे हुए परमाणुओ को दुवारा भोगने से पहले-पहले जव तक जीव उनका भोगना शुरू नही करता, तव तक अवधिमरण होता है।

३ आत्यन्तिकमरण—आयुकर्म के जिन दलिको को एक वार भोग कर छोड दिया है, यदि उन्हे फिर न भोगना पडे तो उन दलिको की अपेक्षा जीव का आत्यन्तिकमरण होता है।

४ बालमरण—व्रतरहित प्राणियो की मृत्यु वालमरण है।

५ पण्डितमरण—सर्वविरतिसाधुओ की मृत्यु को पण्डितमरण कहते हैं।

२ मृत्यु के द्वार—
अनुचितकर्मारम्भः, स्वजनविरोधो वलीयासि स्पर्धा।
प्रमदाजनविश्वासो, मत्योर्द्वाराणि चत्वारि॥
—हितोपदेश २।१४८

(१) अनुचितकार्य का प्रारम्भ (२) स्वजनो का विरोध (३) बलिष्ठो के साथ ईर्ष्या (४) स्त्रियो का विश्वास। ये चार मृत्यु के द्वार हैं।

३ मृत्यु के कारण—

(क) दुष्टभार्या शठं मित्रं, भृत्युश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो, मृत्युरेव न संशयः॥

—चाणक्यनीति १।५

दुष्ट स्त्री, ठग मित्र, मुख पर उत्तर देनेवाला नौकर और सर्पसहित घर मे निवास—ये चारो ही नि सदेह मृत्यु के कारण है।

(ख) हिचकी खांसी श्वासी, तीनूं काल री मासी।

— राजस्थानी कहावत

४ पाच भूतो का दिया हुआ मकान—खास काम के लिए एक वणिक ने पचो से मकान लिया, लेकिन मूर्खतावश मालिक बन बैठा। आखिर वारट निकला। पाच भूत पच है, आत्मा वणिक है, मनुष्यशरीर समय पर खाली न करने से मृत्यु वारट लेकर आती है।

५ चोद्दस्सरज्जुलोए, गोयम ! वालग्गकोडिमित्तंपि।
त नत्थि पएस जत्थ, अणतमरणे न संसारे॥

—महानिशीथ अ० ५

चौदह रज्ज्वात्मक लोक मे बाल के अग्रभाग जितना भी स्थान खाली नही है, जहाँ इस जीव ने अनन्तवार मरण प्राप्त न किया हो।

८

२७ मरण के भेद आदि

१ पंचविहे मरणे पन्नत्ते, तं जहा—
आवीचियमरणे, ओहिमरणे, आतितियमरणे, वालमरणे, पंडितमरणे।
—भगवती १३।७।४९६

पांच मरण कहे हैं—

१ आवीचिमरण—आयुकर्म के भोगे हुए पुद्‌गलो का प्रत्येक क्षण मे अलग होना आवीचिमरण है।

२ अवधिमरण—नरक आदि गतियो के कारणभूत आयुकर्म के पुद्‌गलो को एक वार भोग कर छोड देने के वाद जीव फिर उन्ही पुद्‌गलो को भोग कर मृत्यु प्राप्त करें तो वीच की अवधि को अवधिमरण कहते हैं—अर्थात् एक वार भोगकर छोड़े हुए परमाणुओं को दुवारा भोगने से पहले-पहले जव तक जीव उनका भोगना शुरू नही करता, तव तक अवधिमरण होता है।

३ आत्यन्तिकमरण—आयुकर्म के जिन दलिको को एक वार भोग कर छोड दिया है, यदि उन्हें फिर न भोगना पडे तो उन दलिको की अपेक्षा जीव का आत्यन्तिकमरण होता है।

४ वालमरण—व्रतरहित प्राणियो की मृत्यु वालमरण है।

५ पण्डितमरण—सर्वविरतिसाधुओ की मृत्यु को पण्डितमरण कहते हैं।

२ मृत्यु के द्वार—
अनुचितकर्मारम्भः, स्वजनविरोधो वलीयासि स्पर्धा।
प्रमदाजनविश्वासो, मृत्योर्द्वाराणि चत्वारि॥
—हितोपदेश २।१४८

(१) अनुचितकार्य का प्रारम्भ (२) स्वजनो का विरोध (३) बलिष्ठो के साथ ईर्ष्या (४) स्त्रियो का विश्वास। ये चार मृत्यु के द्वार हैं।

३ मृत्यु के कारण—

(क) दुष्टभार्या शठं मित्रं, भृत्युश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो, मृत्युरेव न संशयः॥

—चाणक्यनीति १।५

दुष्ट स्त्री, ठग मित्र, मुख पर उत्तर देनेवाला नौकर और सर्पसहित घर मे निवास—ये चारो ही निःसदेह मृत्यु के कारण हैं।

(ख) हिचकी खाँसी उबासी, तीनू काल री मासी।

—राजस्थानी कहावत

४ पाच भूतों का दिया हुआ मकान—खास काम के लिए एक वणिक ने पचो से मकान लिया, लेकिन मूर्खतावश मालिक बन बैठा। आखिर वारंट निकला। पाच भूत पच हैं, आत्मा वणिक है, मनुष्यशरीर समय पर खाली न करने से मृत्यु वारन्ट लेकर आती है।

५ चोद्दसरज्जुलोए, गोयम ! वालग्गकोडिमित्तंपि।
त नत्थि पएस जत्थ, अणंतमरणे न संसारे॥

—महानिशीथ अ० ५

चौदह रज्ज्वात्मक लोक मे बाल के अग्रभाग जितना भी स्थान खाली नही है, जहाँ इस जीव ने अनन्तबार मरण प्राप्त न किया हो।

२८ आत्महत्या

१ आत्महत्या के कई कारण हैं जैसे—धार्मिकता का अभाव, वेकारी, रोग, परीक्षा मे असफलता, व्यापार मे घाटा, दहेज-प्रथा, असफल-प्रेम आदि-आदि ।

२ भारत मे प्रतिवर्ष आत्महत्याएँ लगभग एक लाख तक पहुच जाती हैं। उनमे पहला नम्बर मद्रास का है । फिर क्रमश आन्ध्र, मैसूर, बगाल एव महाराष्ट्र का है । दिल्ली मे प्रतिचालीस घटो मे एक आत्महत्या होती है ।

विश्व मे आत्महत्या करनेवाले ६२ प्रतिशत तीस वर्ष से नीची आयु के हैं, जिनमे २० प्रतिशत अठारह वर्ष तक हैं और ४२ प्रतिशत अठारह से तीस वर्ष की उम्रवाले हैं । विश्व मे हर तीसरे विद्यार्थी की मृत्यु आत्महत्या से होती है ।[१]

—जैनभारती पृष्ठ २७, १६ जून १९६८ से सकलित

३ **तान्त्रिक मोतीलाल की आत्महत्या—**

वादा (उत्तर-प्रदेश) से ६४ किलोमीटर दूर कमामीन गाँव का निवासी मोतीलाल सिद्धहस्त तान्त्रिक था । वह देखते-देखते साप को काट कर जोड देता था । इससे उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी ।

---

१ अमरीका मे हर ४५ मिनिट मे एक आत्महत्या होती है एव हर १२० मिनिट मे एक व्यक्ति पागल होता है ।

गत २८ सितवर को उसने यह परीक्षण आदमी पर करने की सोची और तो कोई नही मिला, वह अपने छह वर्ष के बच्चे को गाव के बाहर ईंट के भट्टे पर ले गया और अबोध बच्चे की गर्दन काटकर तत्रविद्या के बल पर जोडने का प्रयत्न करने लगा, पर उसमे वह बुरी तरह विफल रहा। इससे खिन्न होकर उसने रेल से कटकर आत्महत्या कर ली। पुलिस को उसके कपडे से एक पत्र मिला, जिसमे लिखा था कि उसने उक्त विफलता के कारण आत्महत्या कर ली।

—नवभारतटाइम्स ६, अक्टूबर १९७२

●

२६ अन्तिम-संस्कार की अनोखी प्रथाएँ

१ मनुष्य जीवन का अन्तिम अध्याय होता है—मृत्यु । मृत्यु के बाद मानव-शव का विभिन्न देशो मे विभिन्न प्रकार से अन्तिम-सस्कार किया जाता है । कही शव को जलाया जाता है, कही कब्र खोदकर दफना दिया जाता है और कही-नदी, समुद्र, या पोखरो मे बहा दिया जाता है । परन्तु कई देशो मे मानव-शव का अन्तिम सस्कार इस रूप मे किया जाता है कि जिसे, जान—सुनकर हमे आश्चर्यचकित रह जाना पडता है ।

क. मैक्सिको के लोग मृत्यु पर खुशिया मनाते हैं । मृत्यु भी एक नया जीवन है—ऐसी उनकी धारणा है । मैक्सिको के लोगो की 'शव-पेटी' चमकदार रग और चित्रो से सुसज्जित होती है । जनाजे मे लोग गाते-बजाते हैं और कब्र पर हरसाल उनके सम्बन्धी एव मित्रगण सगीतगोष्ठी का आयोजन करते हैं । इस तरह वहाँ सामूहिक रूप से मरणोत्सव मनाया जाता देखकर, स्वय अपने लिए ही दूकानो मे जाकर शवपेटी पसन्द करना, शवयात्रा के समय कौन-कौन-से राग और गीत गाए जाएँ तथा मरने के बाद कब्र पर हरसाल होनेवाली गोष्ठियो मे किस-किस को बुलाया जाए और कौन-कौन-से पकवान बनाएँ जाएँ, ऐसा निर्णय वे पूर्णत वसीयत के रूप मे छोड जाते हैं ।

ख बौद्धमतावलम्वी होने के कारण बर्मा मे मृत्यु को निर्वाण के रूप माना जाता है, जिसका अभिप्राय है—मनुष्य का दु खो से छुटकारा । अत

मृत्यु के अवसर पर वर्मी लोग रोना-पीटना बुरा समझते हैं। उसकी शवयात्रा भी विचित्र-प्रथाओं से युक्त होती है। शव को एक गाडी पर ले जाया जाता है। शवयात्रा का मार्ग ऐसा नियत किया जाता है कि उसमे पैगोडा (बौद्धमन्दिर) अवश्य पडे। पैगोडा को आते ही गाडी को रोक दिया जाता है और उसे आगे-पीछे काफी झुलाया जाता है। इस समय लोग खूब बाजे बजाते हैं। इन सबका अभिप्राय यह है कि मृतक की आत्मा भगवान बुद्ध की शरण मे जा पहुची।

आस्ट्रेलिया की कुछ आदिमजातियाँ स्वाभाविकरीति से मृत्यु होने मे विश्वास नही करती। मौत का कारण वे जादू-टोना ही समझती हैं। इसलिए मरने से सबन्ध रखती हुई कई रस्मे उनमे होती हैं। जब व्यक्ति मृत्युशय्या पर पडता है, उसी समय से शोक की रस्म का आरम्भ हो जाता है। लोग रोते-चिल्लाते अचेत होने लगते हैं। औरतें अपनी जाघ पर घाव करने लगती हैं। कभी-कभी घाव इतने गहरे किए जाते हैं कि स्त्रियाँ खडी भी नही रह सकतीं। मृत्यु-शय्या पर पडे व्यक्ति की मृत्यु होते ही स्त्री-पुरुष छडी-लाठी हाथ मे लेकर भोकने-पीटने जुलूस बनाकर निकलते हैं। इस मौके पर एक-दूसरे के आघात से बचने की कोशिश नही की जाती, इसलिए बहुत से लोगो का शरीर लहू-लुहान हो जाता है। फिर लाश को लेजाकर पेड की खोह मे रख दिया जाता है। तीन दिन बाद लोग जाकर उस खोह को देखते हैं और पता लगाते हैं कि वहाँ कोई पशु-पक्षी का चिह्न तो विद्यमान नही है। यदि कोई चिह्न उन्हे मिलता है तो वे चिह्न द्वारा शत्रु का पता लगाते हैं। जिसके जादू से व्यक्ति मारा गया है, उससे पूरा-पूरा बदला लेते हैं।

र अफ्रीका के पापुवान कबीले में जब कोई व्यक्ति दूसरे कबीले के लोगों से लड़ते हुये मारा जाता है, तब उसके शव को घर लाया जाता है और उसकी विधवा पत्नी अपने मृतक-पति का सिर काट लेती है। पत्नी उसकी खोपड़ी को मांस और बालों से अलग करके धोती है और फिर

अपने गले मे पहन लेती है। लोग मृतक-पति के तरकश मे से एक तीर निकाल कर उसकी खोपडी मे घोप देते हैं। ताकि दूसरो को यह मालूम हो जाय कि उसका पति लडता हुआ मारा गया है। जितने दिनो तक मृतक का मातम रहता है, उतने दिनो तक विधवा उस खोपडी को गले मे डाले रहती है। इसके बाद उसे उतार कर अपनी झोपडी के दरवाजे पर टांग देती है। इस सम्बन्ध मे सबसे विचित्र बात यह है कि जिस स्त्री को अपने मृतक पति का सिर नही मिलता, उसे अत्यन्त भाग्यहीन समझा जाता है और गाव से बाहर रहना पडता है।

च. तिब्बत की अन्त्येष्टिक्रिया भी बडी विचित्र है। वहा पर कफन की आवश्यकता नही होती, केवल दो लकडियो पर आडी-आडी दो लकडियां बाध दी जाती हैं। इसी पर मृत व्यक्ति को रख दिया जाता है। मुर्दे के ऊपर श्वेत रग का कपडा डाल दिया जाता है। फिर उसे आसानी से दो आदमी उठा ले जाते हैं। इसके पश्चात् एक लामा (पुरोहित) बुलाया जाता है और अन्त्येष्टि क्रिया के लिए शुभ मुहूर्त पूछा जाता है। चार तरह की क्रियाएं होती है।—पानी मे बहाना, अग्नि मे जलाना, धरती मे गाडना या जीव-जन्तुओ को खिलाना। लामा जो भी क्रिया उचित समझता है, करवा देता है।

छ दक्षिणी अमेरिका के सबसे विशाल देश ब्राजील मे एक पर्वतीय क्षेत्र का नाम डेलायो है। वहाँ साल-भर तक एक भिन्न प्रकार की हवा चला करती है। उस हवा मे यह गुण है कि शव कितने ही वर्षों तक खुला क्यो न पडा रहे, वह विकृत नहीं होता। इसी कारण, उस प्रदेश के निवासी अपने मुर्दो को न तो कब्र मे गाडते है और न जलाते हैं बल्कि पहाडी के अदर किसी सुरग मे मुर्दों को दीवार के सहारे खडा कर देते हैं। मृतक के शरीर से वस्त्र भी नही उतारते। कई युगो के बाद भी ऐसे शव, दूर

से जीवित-मनुष्य के समान लगते हैं, किन्तु काफी समय के बाद मुर्दे धीरे-धीरे सूखने लगते हैं और सूखकर मिट्टी में मिल जाते हैं।

ज सुमात्रा द्वीप के उत्तर की ओर पहाड़ियों के अंचल में निवास करनेवाले बौनों की बस्ती में जब कोई मर जाता है, तब ये लोग तुरही बजाते हैं और लाश को जमीन में गाड़ कर गांव से बाहर भाग जाते हैं। कुछ महीनों बाद लौटकर लाश को कब्र से निकालते हैं और समुद्र के जल से उसे धोते हैं। मृतक के प्रति श्रद्धा जाहिर करने के लिये अस्थि-पंजर के चौगिर्द नाचते हैं। उनकी खोपड़ी अलग करके मृतक के सबसे अधिक प्रियजन को दे दी जाती है, जिसे वह रस्सी में बांधकर गले में लटका लेता है।

झ मलाया में एक जाति रहती है सकाई। इस जाति के लोगों में मृत्यु का इतना भय होता है कि जब किसी व्यक्ति की गांव में मृत्यु हो जाती है तो पूरा का पूरा गांव जला दिया जाता है। अन्त्येष्टिक्रिया की यह विनाशलीला देखना जहां आश्चर्यजनक होता है, वहां इनके विश्वास को देखकर भी कम कौतूहल नहीं होता। इनका विश्वास है कि मरने के बाद भी मृत व्यक्ति को भोजन की आवश्यकता होती है। इसलिए मृतक-शरीर के मुंह में बांस की एक नली लगा दी जाती है और वह नली इतनी बड़ी होती है कि कब्र से बाहर भी इसका ऊपरी भाग निकला रहता है। इस नली के द्वारा परिवार के लोग प्रतिदिन भोजन तथा पानी पहुंचाते रहते हैं, किसी सरदार या मुखिया के मरने पर उसकी नली इतनी बड़ी बनाई जाती है कि उसे सौ-सवा सौ आदमी में [illegible] उठा ही नहीं पाते।

ट. आस्ट्रेलिया—की कई जन-जातियों में यह प्रथा है कि यदि किसी स्त्री का पति मर जाए, तो उसका जीवन बड़ा ही दुःखमय हो जाता है। उसे बहुत दिनों तक मातम मनाना पड़ता है। अन्त्येष्टिक्रिया के पहले स्त्री को अपना सिर मुंडा डालना पड़ता है और प्राय दो वर्ष तक उसे मौनव्रत

धारण किए रहना पडता है। इस अवधि मे वह केवल सकेतो द्वारा बात-चीत करती है। विधवाओ को अपने मृतपति की कब्र पर एक झोपडी बनानी पडती है और सफेद मिट्टी की एक टोपी,(जिसका वजन चार-पाँच सेर के लगभग होता है,) पहनकर उसी झोपडी मे रहना पडता है। माताएँ अपने मृत बच्चो को महीनो और कभी-कभी वर्षों तक लिए घूमती रहती हैं। बच्चे की लाश धूएँ तथा अन्य कई तरीको से अच्छी तरह सुखा ली जाती है।

—'देश-विदेश की अनोखी प्रथाएँ' (पुस्तक से)

परिशिष्ट

❑ वक्तृत्वकला के बीज
भाग ६ और ७ में
उद्धृत ग्रन्थों व व्यक्तियों की नामावली

ग्रन्थ-सूची :

१. अगुत्तरनिकाय
२. अत्रिसहिता
३. अथर्ववेद
४. अध्यात्मकल्पद्रुम
५. अन्ययोगव्यवच्छेद—द्वात्रिंशिका
६. अपरोक्षानुभूति
७. अभिज्ञानशाकुन्तल (शाकुन्तल)
८. अभिधानचिन्तामणि (हेमकोष)
९. अभिधानराजेन्द्रकोष
१०. अमितगति-श्रावकाचार
११. अमूल्यशिक्षा
१२. अष्टकप्रकरण-(वादाष्टक)
१३. अष्टाङ्गहृदय
१४. आइने-अकबरी
१५. आकर्षणशक्ति
१६. आचारांग-चूर्णि
१७. आचारांगसूत्र
१८. आचार्यशिवनारायण की रिपोर्ट
१९. आत्मविकास
२०. आत्मानुशासन
२१. आपस्तम्बस्मृति
२२. आवश्यकनिर्युक्ति
२३. आवश्यकसूत्र
२४. इतिहासतिमिरनाशक
२५. इष्टोपदेश
२६ इस्लामधर्म क्या कहता है ?
२७. उज्ज्वलवाणी
२८. उत्तररामचरित
२९. उत्तराध्ययनसूत्र
३०. उद्भटसागर
३१. उर्दू शेर
३२. उपदेशतरगिणी
३३. उपदेशप्रासाद
३४. उपदेशसुमनमाला
३५. ऋग्वेद
३६. ऋषिभाषित
३७. ऐतरेयब्राह्मण
३८. ओघनिर्युक्ति
३९. औपपातिकसूत्र
४०. कठोपनिषद्

४१. कथासरित्सागर
४२. कल्पतरु
४३. कल्याण—सत अक
४४. कल्याण—बालकअक
४५. कहावतें—
(क) अंग्रेजी कहावत
(ख) इटालियन ,,
(ग) इरानी ,,
(घ) उर्दू ,,
(ङ) गुजराती ,,
(च) चीनी ,,
(छ) जापानी ,,
(ज) पंजाबी ,,
(झ) पारसी ,,
(ञ) बगला ,,
(ट) मराठी ,,
(ठ) राजस्थानी ,,
(ड) सस्कृत ,,
(ढ) हिन्दी ,,
४६. कात्यायनस्मृति
४७. किरातार्जुनीय
४८. किशनबावनी
४९ कुमारसभव
५०. कुरानशरीफ
५१. केनोपनिषद्
५२. कौटलीय-अर्थशास्त्र
५३. खुले आकाश मे
५४. गणधरवाद
५५. गरुडपुराण
५६. गीता (श्रीमद्भगवद्गीता)
५७. गुरुग्रन्थसाहिब
५८. घटखर्पर का नीतिसार
५९. चन्दचरित्र (संस्कृत)
६०. चरकसंहिता
६१. चरकसूत्र
६२. चाणक्यनीति
६३. चाणक्यसूत्र
६४. छान्दोग्य-उपनिषद्
६५. जातक
६६. जीवनलक्ष्य
६७. जैन पाण्डव-चरित्र
६८. जैन-भारती
६९. जैनसिद्धान्त-दीपिका
७०. ज्ञानप्रकाश
७१. ज्ञानार्णव
७२. तत्त्वामृत
७३. तत्त्वार्थसूत्र
७४. तन्दुलवैचारिक-प्रकीर्णक
७५. ताओ-उपनिषद्
(ताओतेह किंग)
७६. तात्त्विक त्रिशती
७७. तीन बात
७८. तैत्तिरीय-उपनिषद्
७९ त्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र

८०. थेरगाथा
८१. दक्षस्मृति
८२. दशकुमारचरित्र
८३. दशवैकालिकचूलिका
८४. दशवैकालिक-निर्युक्ति
८५. दशवैकालिकसूत्र
८६. दशाश्रुतस्कन्ध
८७. दीघनिकाय
८८. दृष्टान्तशतक
८९. देवीभागवत
९०. देश-विदेश की अनोखी प्रथाएं
९१. दोहा-द्विशती
९२. दोहा-सदोह
९३ धम्मपद
९४. धर्मकल्पद्रुम
९५. धर्म के नाम पर
९६. धर्मयुग (साप्ताहिक)
९७. नन्दीटीका
९८. नलविलास
९९. नवभारत टाइम्स (दैनिक)
१००. नालन्दा-विशालशब्दसागर
१०१. नियमसार
१०२. निशीथ-भाष्य
१०३. निश्नयपञ्चाशत्
१०४. नीतिवाक्यामृत
१०५. नीतिसार
१०६. नैषधीयचरित्र (नैषध)
१०७. न्युयार्क ट्रिब्यून हेराल्ड
१०८. पंचतंत्र
१०९. परमात्म-द्वात्रिंशिका
११०. पराशरस्मृति
१११. पहेलवी टैक्स्ट्स
११२. पातजलयोगदर्शन
११३. प्रकरणरत्नाकर
११४. प्रज्ञापना
११५. प्रशमरति
११६. प्रसंगरत्नावली
११७ प्रास्ताविकश्लोकशतक
११८. वृहत्कल्पभाष्य
११९. वृहत्कल्प-सूत्र
१२० वृहदारण्यकोपनिषद्
१२१. वृहन्नारदीय-पुराण
१२२. वृहस्पतिस्मृति
१२३. बाइबिल
१२४. ब्रह्मवैवर्त पुराण
१२५. ब्रह्मानन्दगीता
१२६. भक्तिसूत्र
१२७. भक्तामर-विवृति
१२८. भगवतीसूत्र
१२९. भर्तृहरि-नीतिशतक
१३० भर्तृहरि-वैराग्यशतक
१३१ भर्तृहरि-शृंगारशतक
१३२. भवभूति के गुणरत्न

३३. भारतज्ञान-कोष
३४. भारतीय अर्थशास्त्र
३५ भाषाश्लोकसागर
३६ भोज-प्रबन्ध
३७ मज्झिमनिकाय
१३८. मनुस्मृति
१३९. मनोनुशासन
१४०. मरुभारती
१४१ महाभारत
१४२. मारवाड़ी-भजनमाला
१४३ मिदरास निर्गमन रब्बा (यहूदी धर्मग्रन्थ)
१४४ मुक्तिकोपनिषद्
१४५ मुण्डकोपनिषद्
१४६. मुद्राराक्षसनाटक
१४७. मुनिश्रीजवरीमलजी का संग्रह
१४८ मृच्छकटिक
१४९ मेघदूत
१५० मोक्षपाहुड
१५१ यजुर्वेद
१५२ याज्ञवल्क्यस्मृति
१५३. [illegible] P R O (यहूदी धर्मग्रन्थ)
१५४ यू. एन. [illegible] बुक-१९६६ तथा १९७०-७१
१५५. [illegible]
१५६. योगदर्शनभाष्य
१५७. योगवाशिष्ठ
१५८. योगशास्त्र
१५९. योगशिखोपनिषद्
१६० योगसार
१६१. रघुवंश
१६२. रश्मिमाला
१६३. राजप्रश्नीयसूत्र
१६४ रामचरितमानस
१६५. लघुयोगवाशिष्ठसार
१६६ लघुवाक्यवृत्ति
१६७ लूका (बाइबिल)
१६८. लोकप्रकाश
१६९ लोकोक्तियाँ—
(क) अरबी लोकोक्ति
(ख) चेक "
(ग) लैटिन "
(घ) स्पेनिश "
१७० वायु पुराण
१७१ वाल्मीकिरामायण
१७२. विक्रमोर्वशीय-नाटिका
१७३ विचित्रा (त्रैमासिक)
१७४ विज्ञान के नये आविष्कार
१७५. विदुरनीति
१७६. विवेकचूडामणि
१७७ विवेकविलास
१७८. विशेषावश्यक
१७९ विश्वज्ञानकोष

१५३. शेखसादी
१५४. शोपेन हॉवर
१५५. श्रीमद् राजचन्द्र
१५६. सत अगस्त
१५७ संत मेथ्यू
१५८. संत रैदास
१५९. सर अर्नेस्ट वोर्न
१६०. सर जान हरशल
१६१. सर पी सिन्डनी
१६२. सर्वेन्टिस
१६३. सिडनी स्मिथ
१६४. सिसरो
१६५. सी. सिमन्स
१६६. सुकरात
१६७. सुवन्धू
१६८. सुभाषचन्द्र वोस
१६९. सूरदास
१७०. सेनेका
१७१. सेन्टपाल
१७२. सेमुएल जानसन
१७३. स्टर्नर
१७४. स्वेट मार्टन
१७५. हक्सले
१७६. हजरत मसीद
१७७. हरिभद्रसूरि
१७८ हरिभाऊ उपाध्याय
१७९. हली वटेन
१८० हार्वर्ट
१८१ हिटलर
१८२. हुट्टन
१८३. हेनरी वार्ड वीचर
१८४. होमर
१८५ व्हिट मैन
१८६. व्हैटले

लेखक की अप्रकाशित रचनाएँ :

□ संस्कृत

१. देवगुरुधर्म-द्वात्रिंशिका
२. प्रास्ताविक-श्लोकशतकम्
३. एकाह्निक-श्रीकालुशतकम्
४. श्री कालुगुणाष्टकम्
५. श्री कालुकल्याणमन्दिरम्
६. भाविनी
७. ऐक्यम्
८. श्री भिक्षुशब्दानुशासन-लघुवृत्तितद्धितप्रकरणम्

□ गुजराती

९. गुर्जरभजनपुष्पावली
१० गुर्जरव्याख्यानरत्नावली

□ हिन्दी

११. वैदिकविचारविमर्शन
१२. संक्षिप्त-वैदिक विचारविमर्शन
१३. अवधान-विधि
१४. संस्कृत बोलने का सरल तरीका
१५ दोहा-संदोह
१६. व्याख्यानमणिमाला
१७ व्याख्यानरत्नमंजूषा
१८ जैन महाभारत–जैन रामायण आदि बीस व्याख्यान
१९. उपदेशसुमनमाला
२० उपदेशद्विपञ्चाशिका
२१ पच्चीस बोल का सरल विवेचन

● राजस्थानी

२२. धनबावनी
२३ सवैयाशतक
२४. औपदेशिक ढालें
२५. प्रास्ताविक ढालें
२६ कथाप्रबन्ध
२७. छः बड़े व्याख्यान
२८. ग्यारह छोटे व्याख्यान
२९. सावधानी रो सबूद

● पञ्जाबी

३० पञ्जाब-पच्चीसी

लेखक की प्रकाशित रचनाएँ :

☐ हिन्दी

१. सच्चा-धन
२. प्रश्न-प्रकाश
३. लोक-प्रकाश
४. ज्ञान-प्रकाश
५. श्रावक धर्म-प्रकाश
६. मोक्ष-प्रकाश
७. दर्शन-प्रकाश
८. चारित्र-प्रकाश
९. मनोनिग्रह के दो मार्ग
१०. चौदह नियम
११. भजनो की भेट
१२. ज्ञान के गीत
१३. एक आदर्श आत्मा
१४. चमकते चाद
१५. जैन-जीवन
१६. सोलह सतिया
१७ से २३ वक्तृत्वकला के बीज (१ से ७ भाग तक)

☐ गुजराती

२४. तेरापथ एटले शु ?
२५. धर्म एटले शुं
२६. परीक्षक बनो !

☐ संस्कृत

२७. गणिगुणगीतिनवकम्

☐ उर्दू

२८. जीवन-प्रकाश
२९. सच्चा धन